एक अनोखा अनुभव

Auto-biography

of

Dada Vishwa Ratan

साहित्य विभाग
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
19/17, शक्ति नगर, **दिल्ली - 110 007**
☎ 7142877, 7142912

पुस्तक मिलने का पता :
वितरण विभाग,
पाण्डव भवन,
आबू पर्वत–307 501 (राजस्थान)

प्रकाशक तथा मुद्रक :
ओम्शान्ति प्रेस,
शान्तिवन,
☎28124, 28125

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

दो शब्द

आप सबके हाथों में यह एक अनोखी पुस्तक प्रस्तुत करते हुए हमें बहुत हर्ष हो रहा है, जिसमें बापदादा के कदम-पर-कदम रख चलने वाले, फ़ालो फादर का सच्चा सबूत देने वाले, सदा यज्ञ रक्षक, सर्व को अपनी एकरस, अचल-अडोल स्थिति द्वारा प्रेरणा देने वाले, सर्व के स्नेही दादा विश्व रत्न की अपने हाथों से लिखी हुई निराली जीवन कहानी (Auto biography) छपी हुई है।

दादा जी ने कैसे बापदादा की हर आज्ञा अर्थात् श्रीमत को ''हाँ जी'', ''हाँ जी'' कर पूर्ण रूप से पालन किया तथा बेहद यज्ञ की सेवाओं में सदा परमात्म-साथ और हाथ का अनुभव करते हुए सफलता प्राप्त की, उसका विस्तार से वर्णन इस जीवन कहानी में दिया हुआ है, जिसको पढ़ने से सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को अपने पुरुषार्थ में अच्छी प्रेरणायें मिलेंगी। बचपन से लेकर अब तक की जीवन के अनेक अनुभवों से, सदा सन्तुष्टता, सहनशीलता, धैर्यता, नम्रता व दिव्यता आदि दिव्य गुणों से हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की अनेक प्रेरणायें इस जीवन कहानी को पढ़ने से प्राप्त होती हैं।

अन्तिम चैप्टर नं० ७ में दादा जी ने अपने अनुभव के आधार पर अपनी और अन्य भाई-बहनों की स्व-उन्नति के लिए पुरुषार्थ को सरल बनाने की अनेक युक्तियाँ बताई हैं, जिसको पढ़ने अथवा जीवन में धारण करने से सहजयोगी, स्वतःयोगी बनने की प्रेरणा मिलती है।

हमें आशा है कि सभी श्रेष्ठ पुरुषार्थी आत्माओं के लिए यह पुस्तक बहुत-बहुत उपयोगी सिद्ध होगी तथा हर एक इसे बार-बार पढ़ कर सहज अपने सम्पन्नता व सम्पूर्णता के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

इसी शुभकामनाओं के साथ,

(ब्र.कु. निर्वैर)
आफ़िस इंचार्ज

चैप्टर 1

एक अनोखा अनुभव

सिन्ध के मध्य भाग में नवाबशाह ज़िला था, उसमें नौशैरो फेरोज़ एक तालुका था, जिसमें एक छोटा सा कस्बा भिरिया नाम का था। उस कस्बे के बीच बाज़ार के चौक में एक छोटी सी गली में छोटा सा पुराना मकान था, जहाँ हमारे माता-पिता रहते थे। उन गरीब माता-पिता के पास तारीख 18.3.1918 को मेरा जन्म हुआ, नाम वरियल पड़ा।

मेरे माता-पिता बड़े अच्छे स्वभाव-संस्कार वाले थे, बड़े शान्त चित्त, गम्भीर, निर्मान, उदारचित्त थे। सबको सन्तुष्ट करते थे और स्वयं भी संतुष्ट रहते थे। शिव बाबा की कृपा कहूँ या ड्रामा का पार्ट कहूँ, या अपने पास्ट जन्मों का हिसाब-किताब कहूँ, जो मेरा ऐसे संस्कार वाले माता-पिता के पास जन्म हुआ और जन्मते ही ऐसे संस्कार मुझ में भी आते गये। जैसे कि वर्से में ऐसे संस्कार मिल गये।

मेरे पिता जी प्राईमरी स्कूल में हेड मास्टर थे। तनख्वाह केवल 14 रुपया हर मास में मिलती थी। उन दिनों हर चीज़ सस्ती मिलती थी, जिस कारण हमारी माता जी सारे मास में खर्चा चलाकर भी उसमें से एक-दो रुपया बचाती थी, बहुत एकॉनामी से खर्चा करती थी और दूरांदेशी थी। किसको खिलाने पिलाने में कमी नहीं रखती थी लेकिन एकॉनामी का भी ख्याल रखती थी।

साक्षी होकर जब अपने पार्ट को देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि बचपन में ही शिव बाबा हमारे साथ था, हमारा साथी था और हमारी छत्रछाया बनकर रक्षा करता रहा और स्वयं ही हमको सामान्य रूप में चलाता रहा। मुझको कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी। बल्कि मुझे कहाँ-से-कहाँ तक पहुँचा

दिया। बचपन में मुझे कोई ज्ञान नहीं था। कोई शास्त्र आदि भी नहीं पढ़ा था लेकिन अन्दर देवताओं आदि के लिए बड़ा सम्मान था।

भगवान मेरी रक्षा करता रहा

शिव बाबा मेरी कैसे रक्षा करते रहे, उसका मैं वर्णन करता हूँ। बचपन में मैं चार-पाँच बार मरने से बच गया और वह भी बड़े आश्चर्यजनक रूप से। मेरी माता मुझे बताती थी कि एक बार जब मैं तीन-चार मास का बच्चा था तो रात को अपनी माता की गोदी में सोया हुआ था। उस समय एक बड़ा चूहा आया और मेरे माथे का जो नर्म स्थान है (जिसको सिन्धी में तारूँ कहते हैं), उसको काटने लगा, जब एक इंच गहरे तक काट लिया तब मैं रोने लगा। मेरी माता मन में कहने लगी, ये मेरा बच्चा तो कभी रोता ही नहीं है, आज इसको क्या हो गया जो रोता है। पहले समझा शायद इसको दूध पीना है तो दूध पिलाने लगी, तो भी मेरा रोना बन्द नहीं हुआ। तब मेरी माता को शक पड़ा कि कोई बात ज़रूर है, जिस कारण बच्चा रो रहा है। हमारे शहर में बिजली नहीं थी। लालटेन जलाते थे। रात को भी मेरी माँ लालटेन जला कर अपने समीप रखकर सोती थी लेकिन लाईट कम करके रखती थी। जब मैंने रोना बन्द नहीं किया तो माँ ने लालटेन की बत्ती को ऊँचा किया तो क्या देखा कि एक बड़ा चूहा मेरे माथे को छोड़कर भागता हुआ जा रहा है। मेरी माँ को और भी शक पड़ा। तो उठकर लालटेन को आगे करके अच्छी तरह से देखा। मेरे माथे (तारूँ) से खून बहता हुआ दिखाई दिया। मेरी माँ कपड़ा लेकर पोछने लगी, लेकिन खून बन्द ही नहीं हो रहा था। हमारे शहर में उन दिनों में कोई डॉक्टर भी नहीं था। ऐसे ही घरेलू इलाज करते थे। हमारी माता भी थोड़ा बहुत घर का इलाज करके चलाती रही। मैं बहुत कमजोर हो गया था। जब बड़ा हो गया तब मेरी माता ने मुझे सारा सुनाया और कहा कि ऐसी हालत थी कि भगवान ने तुमको बचाया, नहीं तो बचना ही मुश्किल था।

दूसरी बार जब मैं 6-7 वर्ष का था, तब कैसे भगवान ने मुझे मरने से बचाया वह इस प्रकार है ..

हमारे शहर में एक तालाब था, उसका एक घाट भी बना हुआ था, वहाँ मैं कभी-कभी जाकर स्नान भी करता था। एक बार रविवार के दिन घूमते-घूमते उस तालाब पर चला गया। वहाँ एक पड़ोसी माता अपने वस्त्र धुलाई कर रही थी। उसने मुझे देखकर कहा ''स्नान किया है?'', मैंने कहा, नहीं। उसने कहा - आओ आकर स्नान करो। मैंने कहा - मैं टॉवल आदि नहीं लाया हूँ, कैसे स्नान करूँगा। उसने कहा - आओ मैं आपको टॉवल देती हूँ, लेकर तुम स्नान करो। मैंने उनसे टॉवल लिया। वैसे जब मैं वहाँ पर स्नान करता था तो घाट के दूसरी तरफ से अन्दर जाता था परन्तु उस दिन जहाँ घाट के दूसरे किनारे पर वह माता जी वस्त्र धुलाई कर रही थी, वहाँ से ही पानी में अन्दर जाने लगा। थोड़ा ही अन्दर पानी में गया तो वहाँ पर एक छोटा सा गड्ढा था, उसमें फिसल कर अन्दर चला गया और डूबने लगा। वहाँ अन्दर ही अन्दर फथकता रहा। न पाँव ज़मीन पर थे और न ही सिर पानी से बाहर था। उस पड़ोसी माता को पता नहीं पड़ा कि मैं डूब रहा हूँ। वह तो अपने वस्त्र धुलाई करने में ही व्यस्त थी। लेकिन उसी एक मिनट के अन्दर ही एक दूसरी माता उसी घाट पर आकर पहुँची। उसको पता नहीं था कि मैं अन्दर डूब गया हूँ। उस माता को भी वस्त्र धुलाई करना था लेकिन उसने सोचा कि पहले मैं अपने मुँह पर ठंण्डे पानी के छींटे लगाकर फिर आकर कपड़े धुलाई करती हूँ। वह वस्त्रों की गठरी किनारे पर रखकर अपने पहने हुए कपड़ों सहित अन्दर पानी में घुसी और सीधा ही वहाँ आकर पहुँची जहाँ मैं अन्दर फथक रहा था। उस माता ने अपने मुँह पर पानी डालने के लिए अपने हाथ अन्दर डाले तो मैं जो उस पानी के अन्दर अपने हाथ पाँव चला रहा था, फथक रहा था तो मेरा हाथ उस माता के हाथ को लग गया और मैंने उसको जोर से पकड़ लिया। उस माता ने समझा कि ये कोई मगरमच्छ है, जिसने मुझे पकड़ लिया है। उसने जोर से चीख मारकर अपने

हाथ को खींचा। तो मैं जो बीच पानी में था, उस गड्ढे से निकल कर, ऊपर के स्थान पर उस माता के पाँव के पास आकर पड़ा। वहाँ उठकर खड़ा हो गया। मुझे देखकर वह माता तो हैरान हो गई। वह भी मुझे जानती थी। मुझे देखकर पूछा, अरे तुम यहाँ कैसे? मैं तो कुछ भी बोल नहीं सका क्योंकि मेरे पेट में पानी भर गया था और मैं उल्टी कर रहा था। जब सारा पानी पेट से निकल गया तब मैं कपड़े पहनकर जल्दी ही अपने घर चला गया। उस माता ने पहले वाली पड़ोसी माता से पूछा कि ये यहाँ कैसे आया था। पहले वाली माता ने कहा ''क्यों क्या हुआ?'' उसको इस बात का पता ही नहीं पड़ा, वह अपने वस्त्र धुलाई करने में ही व्यस्त थी। उस दूसरी माता ने उसको बताया कि ये तो यहाँ डूब गया था। अगर मैं दो-चार मिनट देर से आती तो इसका क्या हाल होता? मतलब ऐसे आश्चर्यजनक रूप से बच गया। जब मेरी माता जी ने ये सब सुना तो कहने लगी -- अरे तुमको तो सचमुच भगवान बचाता है।

तीसरी बार जब मैं 8-9 वर्ष का था तो उस समय कैसे बचा वह इस प्रकार है

हमारे शहर में खेती-बाड़ी के लिए एक दस-बारह फुट चौड़ी नहर थी। एक दिन मैं जब वहाँ पर स्नान कर रहा था तो उस दिन पानी बड़े फोर्स से बह रहा था, मैं उन दिनों तैरना नहीं जानता था। जैसे ही मैं अन्दर गया, तो पानी के फोर्स से मेरा पाँव फिसल रहा था। उस समय पानी मेरे गर्दन तक चल रहा था और पानी मुझे खींच कर ले जा रहा था। मैंने बड़े जोर से अपने दोनों पाँव को दबा कर रखा। लेकिन मैंने समझा कि 2-4 मिनट से अधिक पैर दबा कर नहीं रख सकूँगा। फिर तो पानी का फोर्स मुझे खींच कर ले ही जायेगा और मैं डूब जाऊंगा तो मैंने बड़े ज़ोर से चिल्लाया बचाओ, बचाओ! थोड़ी ही दूरी पर एक भाई जो तैरना जानता था, वह जल्दी से तैरते हुए मेरे पास आया और मुझे पकड़ कर बाहर निकाला और मैं बच गया।

चौथी बार मैं जब 10-11 वर्ष का था तब भगवान ने मुझे कैसे बचाया वह इस प्रकार है

हमारे चचेरे भाई का तीन मंजिल का मकान हमारी गली के सामने ही था। एक दिन मैं अपने चचेरे भाई (जो मेरे से एक वर्ष छोटा था) के साथ पतंग उड़ाने के लिए मकान की छत पर गया। छत पर एक कमरा था, उसकी भी छत पर चढ़े अर्थात् ऐसे ही कहें कि चौथी मंजिल पर खड़े थे। उस कमरे की छत पर कोई चार दीवार नहीं था। उस छत पर पतंग उड़ाते उड़ाते उस चचेरे भाई ने कहा कि पतंग मुझे दो मैं उड़ाऊं। ऐसे कहते कहते उसका कंधा मुझ से लग गया। उसका कंधा लगने से मैं चौथी मंजिल से नीचे गिर गया। मकान की साइड में एक दुकान थी, उस दुकान की छत पर जाकर गिरा। मेरी बायीं बाँह टूट गई। मैं तीन-चार घण्टे तक बेहोश पड़ा था, टांगों में भी थोड़ी चोटें लगी थी। चार घण्टे के बाद थोड़ा-थोड़ा होश में आने लगा। आँखों के सामने तो अंधेरा ही अंधेरा था, कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा, पता नहीं लगा कि मैं कहाँ हूँ। बुद्धि से थोड़ा समझा कि पतंग उड़ाते समय मैं इस साईड में गिरा, तो इस साईड में जो दुकान है (उस दुकान को मैं जानता था), उस पर ही मैं गिरा हूँ। ऐसे बुद्धि से समझा। लेकिन अब क्या करूँ, कैसे यहाँ से नीचे उतरूँ, वह समझ में नहीं आ रहा था। मेरा चचेरा भाई, इस बीच में अपने मकान की पहली मंजिल पर जो एक बालकनी थी वहाँ से उस दुकान की छत पर उतरा और आकर मुझे आवाज दी, हिलाया, लेकिन मैं तो बेहोश पड़ा था, इसलिए कोई जवाब नहीं दिया। वह बेचारा तो डर गया। समझा कि मेरे कंधा लगने से ये गिर गया है, सभी मुझे ही दोष देंगे। तो इस डर से किसी को बताया भी नहीं। डर से घर में ही जाकर बैठ गया। उस दुकान की दूसरी साईड में किसी व्यापारी की बैठक थी, जहाँ कभी-कभी व्यापारी लोग आपस में मिलते थे। उस बैठक की पहली मंजिल के हॉल के अन्दर के बराण्डे में एक खिड़की थी, जो खुली हुई थी। मैं जब थोड़ा और होश में आया तो आँखों से दीवारें

तो दिखाई नहीं पड़ती थी लेकिन खिड़की का थोड़ा भाग दिखाई पड़ा। मैं खिड़की के सामने ही पड़ा था और उस बैठक को भी मैं अच्छी तरह से जानता था। ये भी जानता था कि ये खिड़की इस वराण्डे की है, और उस वराण्डे के कोने से सीढ़ी नीचे जाती है। धीरे-धीरे दीवारें भी दिखाई पड़ी और खिड़की स्पष्ट दिखाई पड़ी। मैंने उठने की कोशिश की तो उठ न सका, क्योंकि टांगों में भी चोट लगी हुई थी। टांगों में कोई फ्रेक्चर नहीं हुआ था। फिर हिम्मत करके उठा और धीरे-धीरे खिड़की तक आया। जैसे ही खिड़की पर चढ़कर बराण्डे में जाने की कोशिश की तो देखा कि मेरी बायीं बांह काम ही नहीं कर रही है और उसमें दर्द होने लगा। फिर भी हिम्मत रखकर एक हाथ से ही चढ़कर खिड़की को पार करके बराण्डे में आ गया। धीरे-धीरे चलकर सीढ़ी के गेट तक आया तो देखा कि गेट बाहर से बन्द था। फिर तो मैं शान्त करके उस सीढ़ी के गेट के आगे नीचे जमीन पर बैठ गया। थोड़ी ही देरी में उस बैठक के मालिक को ऊपर आने का विचार आया और वह सीढ़ी चढ़कर ऊपर आया। जैसे ही गेट खोला तो मुझे वहाँ बैठा हुआ देखा। उसे बड़ा ही आश्चर्य लगा कि ये बच्चा यहाँ कैसे आया, कहाँ से आया। वह मुझे तो जानता ही था। मुझ से पूछा तुम यहाँ कैसे आये, कहाँ से आये? तब मैंने उसको सारी बात बताई कि मैं कैसे पतंग उड़ाते हुए गिर गया, फिर कैसे खिड़की से अन्दर आकर बराण्डे में बैठा हूँ।

उसको मुझ पर बड़ा तरस आ रहा था। मुझे धीरे-धीरे दांयी बाँह से पकड़ कर सीढ़ी से नीचे उतारा और साथ में ही मुझे मेरे घर तक ले आया। हमारे माता-पिता बड़े ही इन्तजार में थे कि बच्चा आज कहाँ गया, आज दिन का भोजन भी नहीं किया। समझा कि शायद दोस्तों के साथ बाहर खेलने में इतना बिजी हो गया है जो भोजन खाना ही भूल गया है। तो बाहर ईधर-ऊधर ढूँढ कर भी आये। जब कहीं भी उनको नहीं मिला तो बड़ी चिन्ता में और इन्तज़ार में थे। जब शाम को वह व्यापारी मुझे साथ में लेकर

आया तो मुझे देख कर थोड़ा धीरज आया और उन्होंने मुझसे पूछा कि कहाँ गये थे तो मैंने ये सारी बातें सुनाई। मेरी माँ ये बात सुनकर कहने लगी कि "सचमुच तुमको तो भगवान बचाता है।" फिर तो मेरी बाँह जो कोहनी से टूट गई थी, उसका इलाज करने के लिए सोचने लगी। वहाँ कोई डॉक्टर तो था ही नहीं। एक कुम्हार था जो थोड़ा-थोड़ा हड्डियों का इलाज करता था, उसको बुलाया। वह रोज़ मेरी बाँह को नीचे-ऊपर हिलाकर फिर एक तेल लगाकर बड़े कोई पत्ते थे, वे लपेट कर फिर एक पट्टा बनाकर उसके बीच में बाँह डालकर पट्टा कंधे में डाल देता था जिससे बाँह लटकी न रहे, एक जगह पर स्थिर रहे। दो-तीन दिन ऐसे करता रहा, लेकिन जब बाह को नीचे-ऊपर हिलाते थे तो मुझे बहुत दर्द होता था, सहन नहीं कर सकता था। तीन दिन के बाद मैंने अपने माता-पिता को कहा कि मैं इनसे इलाज नहीं कराऊंगा। मैं आपही अपने को ठीक कर दूँगा। फिर तो मैं रोज़ अपनी बाँह को धीरे-धीरे इतना थोड़ा सा हिलाता था, नीचे-ऊपर करता था, जो ज्यादा दर्द नहीं हो और फिर वही तेल लगाकर वही पत्ते लपेटकर फिर बाँह को कपड़े के पट्टों में रखकर कपड़े को कंधे में डाल देता था और खास ध्यान देता था कि इस बाँह को ज़रा भी चोट न लगे। ऐसे ध्यान देने से बाँह जहाँ से टूट गई थी, वहाँ धीरे-धीरे जुड़ती गई। आखिर तीन मास के बाद बाँह बिल्कुल ठीक हो गई। साधारण रीति से नीचे-ऊपर चला सकता था केवल इतना रहा कि बाँह थोड़ी टेढ़ी जुड़ गई, जो अब तक भी थोड़ी टेढ़ी है। बाकी नार्मल रीति से काम करती है।

पाँचवीं बार

हमारे भिरिया शहर से सख्खर बैरेज नाम की एक बहुत बड़ी नहर जाती थी। सख्खर शहर से सिन्धु नदी बहती थी। वहाँ से सिन्धु नदी से ये बड़ी नहर, जिसको सख्खर बैरेज कहते थे, वह निकलती थी, जो हमारे शहर के पास से बहती थी। वह अन्दाज 100-125 फीट चौड़ा थी और

20-25 फीट गहरी थी। सदा ही भरी हुई रहती थी। हमारे ही शहर के पास से उस बड़ी नहर से एक छोटी नहर निकलती थी, जो खेती-बाड़ी के लिए पानी देती थी। एक बड़ा लोहे का गेट था, उसके नीचे से थोड़ा पानी छोड़ते थे। मैं जब 12-13 वर्ष का था, तब मैं तैरना सीख गया था। उस सख्खर बैरेज में भी कभी-कभी स्नान करता था और तैरता था। उस छोटी नहर में भी रोज़ स्नान करते थे और रोज़ गेट तक जाकर गेट को पकड़ते थे। गेट से जो पानी छोड़ते थे, वह तेज़ निकलता और घूमता था और फिर आगे जाता था। हम 8-10 विद्यार्थी थे, वे सब उस घूमते हुए पानी से जाकर तेज़ पानी से जाकर उस गेट को पकड़ते थे। ऐसे कई बार करते रहे। एक दिन उन्होंने गेट से अधिक पानी छोड़ दिया, जिस कारण पानी बहुत तेज़ आ रहा था और पानी घूमकर गेट की तरफ़ उछल खाता था। उस दिन मैं जब वहाँ आया तो देखा सभी स्टूडेण्ट्स दूर खड़े हैं, गेट की तरफ कोई नहीं जाता है। हमारा टीचर भी वहाँ दूर ही खड़ा था। मैं पानी में आकर पहले अपने टीचर के पाँव पड़ा और फिर आगे बढ़ने लगा, किसी से पूछा भी नहीं कि इतना दूर क्यों खड़े हो। आगे बढ़ते फिर उस घूमते पानी में पाँव दबाकर रखा, देखा कि आज पानी ज़ोर से आ रहा है। फिर भी हिम्मत करके उस तेज पानी में भी ज़ोर से पाँव दबाकर रखा। फिर जैसे ही गेट को पकड़ने की कोशिश की तो मेरा पाँव फिसल गया और मैं घूमते हुए पानी में आ गया। वह घूमता हुआ पानी मुझे गेट की तरफ फेंकता था और मैं गेट से टक्कर खाने से 2-4 इन्च से ही बच जाता था। यह बात दूर खड़े स्टूडेण्ट्स ने मुझे बाद में बतायी। टीचर भी जो खड़ा था वह सोच रहा था कि ये गेट से टक्कर खाकर मर जायेगा। मैं आगे जाकर घूमते पानी से इस तरफ खींच लूँ, जिससे पानी इसको गेट की तरफ न फेंके। ऐसे सोचकर आगे बढ़ा, लेकिन इतने में क्या हुआ, जो पानी ने मुझे एक बार गेट की तरफ फेंका, फिर दूसरी बार फेंका, फिर तीसरी बार उस घूमते हुए पानी ने मुझे गेट की तरफ़ फेंकने के बजाये, दूसरी तरफ़ फेंक दिया और पानी मुझे

आगे ले चला और मैं टीचर के पास और अन्य स्टूडेण्ट्स के पास पहुँच गया। इस प्रकार मैं और एक बार बच गया।

ऐसे कई अन्य भी छोटी-मोटी बातों से बाबा मुझे बचाता रहा। मेरी माता तो यही कहती रही कि "सचमुच तुमको तो भगवान बचाता है।" इससे मुझे भी ये पक्का हो गया कि मुझे भगवान बचाता है और मैं ऐसे मरूँगा नहीं, शायद मैं जब बड़ा हो जाऊँगा तब भगवान को इस शरीर से कोई कार्य लेना होगा, इसलिए मुझे बचाता है। उस समय मुझे यह ईश्वरीय ज्ञान तो था नहीं। जब ज्ञान में आया और यज्ञ-कार्य अथवा भगवान के कार्य में लगता रहा तब पता चला कि बाबा मुझे अक्सर क्यों बचाता रहा!

साधारण परिवार और साधारण दिन चर्या

माता-पिता का मुझ में अति मोह था क्योंकि मैं उनका अकेला ही बेटा था। एक मेरी बड़ी बहन थी। जब कराची में थे, उनको एक और बच्चा पैदा हुआ। लेकिन मेरा किसी में भी मोह नहीं था। मैं सबसे न्यारा था। मेरी सारे दिन की दिनचर्या इस प्रकार से थी – सवेरे उठकर स्नान करता था, फिर नाश्ता करके स्कूल में पढ़ने जाता था। स्कूल में जो कुछ टीचर सुनाते थे, वह अटेन्शन से सुनता था और वह बुद्धि में छप जाता था। फिर घर में आकर कभी भी उसे दोहराता नहीं था। फिर भी अपने क्लास में तीसरा नम्बर अवश्य आता था। हर क्लास में तीसरा नम्बर आता रहा। घर में पढ़ना, मेहनत कर पहला नम्बर या दूसरा नम्बर लूँ, ऐसी कब कोशिश भी नहीं की। ऐसे ही नेचरल चलता रहा और नम्बर तीसरा लेता रहा। इसमें ही सन्तुष्ट रहा। फिर स्कूल से घर में आकर दिन का भोजन करता था और अपने खेल का सामान लेकर बाहर अपने दोस्तों के साथ खेलता था। ऐसे सारा दिन बाहर ही रहता था। फिर रात को आकर खाना खाया और सो गया। फिर सवेरे उठकर वही दिनचर्या रहती थी। तो सब बातों से न्यारा

रहता था। किसी बात में भी लगाव नहीं था।

गरीब माता-पिता के पास जन्म होने के कारण ये कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मैं कभी कोई बड़ा शहर देखूँगा भी। अपने शहर के आस-पास के शहरों नौशेरो फेरोज़, ठारूशाह, कंडियारो आदि शहरों में ही कोई न कोई सम्बन्धी होने के कारण कभी कभी जाने का मौका मिला था। बाकी दूर के बड़े शहर सख्खर, शिकारपुर, लाड़काना, हैदराबाद, कराची आदि देखने का कभी संकल्प भी नहीं आया। लेकिन शिवबाबा को मुझसे अपना कार्य कराना था तो अचानक मुझे कराची में ले आया। मेरा एक बड़ा चचेरा भाई कराची में स्कूलों का सुपरवाइजर बना था। उसने मेरे पिता जी के लिए एक स्कूल में टीचर बनने का प्रबन्ध किया और मेरे पिता जी को कराची में आने के लिए कहा। उस समय भिरिया शहर में मेरे पिता जी की तनख्वाह बढ़कर चालीस रुपया हो गई थी। पिता जी इस सर्विस से रिटायर हो गये, जिसकी 20 रुपया पेन्शन मिलने लगी। परिवार के सभी सदस्य कराची में आ गये, वहाँ पिता जी प्राइवेट स्कूल में टीचर बनकर रहे और उनको हर मास में 30 रुपया वेतन मिलता था। मेरी पढ़ाई भी कराची में ही चालू रही। मैं उस समय मैट्रिक में पढ़ता था। मैट्रिक में पास होने के बाद मुझे कॉलेज की पढ़ाई कराने की मेरे पिता जी की हिम्मत नहीं थी लेकिन मेरे चचेरे भाई सभी अच्छी कमाई वाले थे, उनके कहने पर और उनकी मदद से मुझे कॉलेज में भरती कराया।

उस समय मेरी आयु 17 वर्ष की थी, मेरे माता-पिता मुझे कहने लगे कि अब तुम शादी कर लो। मैंने कहा कि अब तो मैं कॉलेज की पढ़ाई कर रहा हूँ, जब पढ़ाई पूरी कर ग्रेजुएट बनूँगा तब शादी करूँगा।

ओम मण्डली से सम्पर्क

जब मैं इण्टर साइंस में पढ़ रहा था, तब उन दिनों सुना अथवा पेपर में पढ़ा कि 'ओम्मण्डली' हैदराबाद से शिफ़्ट होकर कराची में आ गई है और कोई भी वहाँ जाकर उन से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। परन्तु वहाँ जाने के पहले पत्र लिखकर उन से टाइम निश्चित करना होगा। पहले ओम् मण्डली के विषय में अखबारों में बहुत कुछ ऐसा उल्टा-सुल्टा लिखा हुआ था, जो कोई भी पढ़े तो उसका माथा ही खराब हो जाये। मैंने भी ऐसा अखबारों में पढ़ा था। मैंने सोचा कि हैदराबाद से कराची में आये हैं तो रू-ब-रू जाकर देखूँ कि ये कौन हैं, क्या हैं, और क्या समझाते हैं? इनकी इतनी ऑपोज़ीशन क्यों है, कारण क्या है? ये सब समझने की इच्छा उत्पन्न हुई। मैंने उनको एक कार्ड लिखा कि मैं आपका ज्ञान समझना चाहता हूँ, आप मुझे टाइम बताइये कि मैं किस समय आपके पास वहाँ आऊं। दूसरे दिन ही उसका उत्तर आया कि इस टाइम पर, इस स्थान पर भले आ सकते हो। मैं उसी टाइम पर वहाँ गया। मैं वहाँ जाकर जो व्यक्ति गेट पर खड़ा था, उसको अपनी अपने समय निर्धारण का कार्ड दिया और वह अन्दर स्वीकृति लेने गया। इतने में एक कार वहाँ आई और वह कार गेट से अन्दर गई। थोड़ी दूरी पर वह कार खड़ी हो गई और उसमें से बाबा उतर कर अन्दर चले गये। मैं बाबा की परसनॉलिटी देख सोचा कि क्या इनके लिए लोग ऐसे लिखते हैं। ये ऐसे हो नहीं सकता है। फिर तो मुझे भी अन्दर बुलाया गया और मुझे जसु बहन, जो शान्तामणि दादी की भाभी थी, उसने ज्ञान समझाया। उस दिन आत्मा का पाठ पक्का कराया कि तुम आत्मा हो, तुम शरीर नहीं हो लेकिन शरीर की सभी कर्मइन्द्रियों को चलाने वाली तुम मालिक आत्मा हो। सारा घण्टा ही उस एक प्वाइन्ट पर

समझाया। मुझे बहुत अच्छा लगा। फिर उसने कहा कि आप कल आना।

दूसरे दिन मैं उस टाइम पर गया। जसु बहन तो और कार्य में बिज़ी थी तो फिर मुझको सीतू बहन ने समझाया। उसने फिर परमात्मा कौन है? क्या है? क्या करता है? उस पर मुझको एक घण्टा समझाया। वह भी मुझको बहुत अच्छा लगा। उसने फिर तीसरे दिन आने के लिए कहा। ऐसे मैं रोज़ जाकर ये सात दिन का कोर्स पूरा किया। कोई भी बीच में प्रश्न नहीं पूछा। सब कुछ ठीक समझ में आ रहा था। फिर मुझे एक परमिट कार्ड मिला कि आप अब सुबह को रेग्यूलर क्लास में आ सकते हो। फिर मैं रोज़ सुबह को निश्चित समय पर क्लास में आने लगा। उन दिनों में बाबा सवेरे उठकर रोज़ ज्ञान की प्वांइट लिखते थे और मुख्य बहनों में से कोई एक बहन उन प्वाइटों को पढ़कर क्लास में आती थी और अपने ही तरीके से ज्ञान की उन बातों को स्पष्ट करती थीं अथवा क्लास कराती थी। वह प्वाइन्ट्स पढ़कर नहीं सुनाती थी। ऐसे रेग्यूलर क्लास में आता रहा, ज्ञान सुनता रहा और मुझे अन्दर की शान्ति, आनन्द और खुशी की अनुभूति होने लगी। साथ-साथ ये भी देखा कि यहाँ ओम् मण्डली की कन्यायें-मातायें कितनी मीठी, पवित्र दृष्टि वाली हैं। बाहर वाली दुनियावी कन्याओं और यहाँ की कन्याओं में रात-दिन का अन्तर देखा। बस उनके चेहरों और आँखों में पवित्रता की झलक और पवित्र दृष्टि-वृत्ति को देखकर मैं समझ गया कि यही सच्चा परमात्म-ज्ञान है और इन बहनों को परमात्मा स्वयं ही आकर ज्ञान देता है, जिससे ये ऐसी पवित्र, सुख-शान्ति मय जीवन बना रहीं हैं।

मैंने बाहर में जो कुछ अखबारों में पढ़ा था, वह सब उड़ गया। समझा कि वह सब शत प्रतिशत गलत है। बस मैंने तो अन्दर में प्रतिज्ञा कर ली कि मैं इस ज्ञान को कभी नहीं छोड़ूंगा, रेग्यूलर आता रहूँगा। ऐसे ही कहें कि मैं बुद्धि से सरेण्डर हो गया, परमात्मा का बच्चा बन गया अथवा इस

परिवार में आ गया।

ये बात 2-3 मास तक अपने लौकिक माँ बाप को नहीं बतायी थी कि मैं सुबह को ओम् मण्डली में जाता हूँ। मैंने समझा कि मालूम नहीं कि ये क्या समझेंगे कि हमारा बच्चा कहाँ जाकर फंसा है, क्योंकि उन्होंने भी अखबारों में ऐसा पढ़ा जरूर होगा। परन्तु जब मैं परमात्मा का पक्का बच्चा बन गया तब सोचा कि अपने परिवार वालों को भी इस ज्ञान में लाऊँ। मैंने उन्हों को कहा कि मैं आजकल ओम् मण्डली में जाता हूँ, वहाँ बहुत अच्छा ज्ञान देते हैं, आप भी वहाँ चलकर ये ज्ञान सुनो। वे कहने लगे, नहीं, नहीं, सारी सिन्ध उन्हों के खिलाफ है। अखबारों ने तो ओम् मण्डली का नाम ही बदनाम किया हुआ है। आप क्यों वहाँ जाते हो? मैंने उन्हों को कहा कि आपका मेरे में विश्वास है? उन्होंने कहा कि हाँ, हम जानते हैं कि आप गलत स्थान पर कभी नहीं जायेंगे लेकिन ये सिन्ध के जो सारे लोग हैं, वे क्या सभी अंधे हैं? मैंने उन्हों को कहा - अगर आपका मेरे में विश्वास है तो मैं ये सत्य कहता हूँ कि जो कुछ आपने अखबारों में पढ़ा है वह सब गलत है। मैं कई दिनों से वहाँ जाकर अपनी आँखों से देख रहा हूँ, कानों से सुन रहा हूँ, जिसके आधार पर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वहाँ बहुत अच्छा सत्य ज्ञान सुनाते हैं, जिससे मनुष्य का सुख-शान्तिमय जीवन बन जाता है। इसलिए मैं आपको कहता हूँ कि आप भी वहाँ चलकर अपनी आँखों से देखो और अपनी बुद्धि से निर्णय करो कि ओम् मण्डली वाले सत्य मार्ग पर हैं या नहीं। उन्होंने कहा कि नहीं, हम तो वहाँ नहीं जायेंगे। लोग क्या कहेंगे कि तुम भी पागल हो गये! मैंने कहा कि मैं वहाँ जा रहा हूँ तो क्या मैं पागल हूँ, जो वहाँ जा रहा हूँ। आप लोगों के कहने को नहीं देखो, आप स्वयं अपनी आँखों से देखकर अपनी बुद्धि से निर्णय करो, फिर अगर अच्छा न लगे तो जाना बन्द कर देना। वे कहें - हम तो वहाँ नहीं जायेंगे। मैंने भी उन्हों को अधिक कहना छोड़ दिया।

मैं तो दिन प्रतिदिन इस ईश्वरीय ज्ञान को अपने जीवन में धारण करने के दृढ़ संकल्प में आता गया। भले कितनी भी बातें सामने आयीं लेकिन और ही मजबूत होता गया। उधर एण्टी ओम् मण्डली वालों ने कराची में भी आकर बहुत हंगामा करना शुरू किया। कराची में जो हिन्दू मंत्री थे, उन्होंको ओम् मण्डली के खिलाफ उल्टी-सुल्टी बातें सुनाकर कहा कि ओम् मण्डली को बन्द करा दो और फिर साधू वासवानी जो सिन्धियों का एक मशहूर संत था, जिसके हैदराबाद और कराची में बहुत अनुयायी थे, उसको भी उन्हों ने उल्टी सुल्टी बातें सुना कर कहा कि ओम् मण्डली को बन्द करवा दो। वैसे साधू वासवानी बहुत अच्छे सन्त थे लेकिन लोगों की उल्टी बातों में ऐसे फंस गये कि साधू वासवानी एक दिन सवेरे हमारे क्लास के टाइम के पहले ही अपने कई अनुयायियों के साथ ओम् मण्डली का बंगला, जिसका नाम ओम् निवास था, उसके गेट पर आकर बैठ गये। उनके अनुयायी सीधा लेट गये। बाहर वाले स्टूडेण्ट्स जो सवेरे क्लास में आते थे, उनको गेट के अन्दर जाने नहीं दिया और बहुत नारे लगाने लगे। मैं भी वहाँ क्लास के टाइम पर गया और जैसे ही गेट पर पहुंचा तो देखा कि साधू वासवानी और उनके अनुयायी पिकेटिंग कर रहे हैं। मैं सोच में पड़ गया कि अब मैं क्या करूँ। अन्दर में सोच चल रहा था कि कैसे भी अन्दर ज़रूर जाना है, क्लास मिस नहीं करनी है। विचार करते-करते ख्याल आया कि इस बंगले के पीछे एक गली है, वहाँ से भी जरूर अन्दर जाने का कोई गेट होगा। पहले कभी पीछे वाली गली में गया नहीं था, न वह गेट देखा था। जब उस गली में गया तो देखा कि वहाँ गेट तो हैं लेकिन वह भी बन्द है लेकिन उसकी साइड में एक छोटा सा रास्ता है। वहाँ कोई नहीं था, पिकेटिंग आदि भी नहीं थी। मैं उस पैसेज से अन्दर चला गया और जाकर क्लास में बैठ गया। ओम् मण्डली में अन्दर रहने वाले सभी परिवारों के भाई-बहनें तो क्लास में बैठे ही थे। बाहर के स्टूडेण्ट्स में से और कोई भी

क्लास में नहीं था। बैठे हुए सभी भाई-बहन मुझे देखकर आश्चर्य खाने लगे कि ये आज अन्दर कैसे आया और मेरे से पूछने लगे। तो फिर मैंने उन्हों को बताया कि कैसे मेन गेट पर पिकेटिंग हो रही थी और मैं कैसे पीछे वाले पैसेज से अन्दर आया हूँ। साधू वासवानी और उनके अनुयायी ने ऐसे 2-3 दिन पिकेटिंग की और जुलूस भी निकाले, नारे भी लगाये। मन्त्रालय में जाकर भी धरना दिया और चीफ मिनिस्टर और होम मिनिस्टर को कहने लगे कि ओम् मण्डली को बन्द करो। ऐसे उन्हों के हंगामें चलते रहे, वह आप सबने हिस्ट्री सुनी ही होगी।

फिर एक-दो मास के बाद मैंने फिर अपने माता-पिता को कहा कि आप वहाँ चलकर ये ज्ञान ज़रूर समझो। लेकिन वे कहें कि हम तो वहाँ पाँव भी नहीं रखेंगे तो मैंने छोड़ दिया। एक-दो मास के बाद मैंने फिर उन्हों को कहा कि मैं अब आपको साफ़ बताता हूँ कि मैं अभी प्रभु का बन चुका हूँ। मैं हूँ प्रभु की तरफ और आप हो माया अथवा आसुरी संसार की तरफ। माया और प्रभु इकट्ठे नहीं रह सकते। तो अगर आप ये ज्ञान लेकर प्रभु के परिवार के नहीं बनते हो तो ये आप पक्का समझना कि मैं कभी न कभी आपको छोड़कर प्रभु की तरफ़ चला जाऊँगा! वे कहने लगे कि ऐसे कैसे होगा? आपको इतना खिलाया-पिलाया, पालना की, इतना पढ़ाया-लिखाया और अभी आप कहते हो कि आपको छोड़कर चला जाऊँगा। आपका तो फर्ज है हमारी सेवा करने का, कमाई करके हमारी पालना करने का। मैंने कहा कि मैं तो चाहता हूँ कि आपकी सेवा करूँ। मैं सिर्फ कहता हूँ कि आप सिर्फ ज्ञान लेकर फिर यहाँ घर में आकर बैठना और कुछ भी नहीं करना। मैं कमाई करके आपको खिलाऊँगा, आपकी पालना करूँगा। जब आप ज्ञान सुनकर अपने में धारण करेंगे तो आप भी प्रभु के बच्चे बन जायेंगे, माया अथवा आसुरी संसार से दूर हो जायेंगे और मैं भी प्रभु का बच्चा हूँ। फिर आप और मैं इकट्ठे रह सकते हैं। फिर मुझे घर छोड़ने की आवश्यकता

नहीं। घर में रहते, कमाई करते, ये ज्ञान भी लेते धारण करते बुद्धि से प्रभु के बनकर रहेंगे। फिर भी कहने लगे – हम तो वहाँ बिल्कुल ही नहीं जायेंगे तो मैंने उन्हों को साफ़ कह दिया कि आप चलकर ज्ञान नहीं लेंगे तो फिर आप ये समझ लेना कि मैं किसी न किसी दिन ज़रूर आपको छोड़कर वहाँ चला जाऊंगा। फिर मुझे यह नहीं कहना कि तुमने हमको ये इतला भी नहीं दी। उन्होंने फिर भी यही कहा कि हम तो वहाँ बिल्कुल ही नहीं जायेंगे। मैंने भी छोड़ दिया।

इसके बीच में मैं जो इण्टर साइंस पढ़ रहा था, उस पढ़ाई से भी मेरी रुचि खत्म हो गई। इस ज्ञान की रूहानी पढ़ाई में जैसे जैसे रुचि बढ़ती गई, वैसे वैसे उस लौकिक पढ़ाई से रुचि खत्म हो गई और आखिर में उस पढ़ाई को भी छोड़ ही दिया।

कराची में ओम् मण्डली को देखने और ज्ञान सुनने के लिए हजारों लोग आये। कोई एक दिन आकर चले गये, कोई 2-4 दिन ज्ञान सुन कर चले गये, कोई-कोई एक-दो मास ज्ञान में चलकर चले गये। कोई कोई 6-8 मास भी ज्ञान में चलकर छोड़कर चले गये। बाकी थोड़े ऐसे रहे जो आते रहे। इन बाहर से आने वालों में से तीन भाई – कृष्णा, विष्णा और वरियल (मैं) रोज़ ज्ञान सुनने के लिए क्लास में तो आते ही थे लेकिन शाम को भी यज्ञ सेवा अर्थ ओम् मण्डली में जाते थे। बाबा की जो मुरली चलती थी, उसमें से पाइन्ट्स निकालते थे, फिर उनको अंग्रेजी में ट्रान्सलेट करते थे, टाइप भी करते थे, लित्थो भी करते थे और छोटी-छोटी किताबें बनाते थे और बड़े-बड़े लोगों, मंत्रियों आदि को देकर आते थे। ये हम त्रिमूर्ति भाइयों की ड्युटी थी। धीरे-धीरे एक मूर्ति तो निकल गई। बाकी दो मूर्ति रहीं। आखिर में एक दिन हम दोनों कृष्णा और मैंने सोचा कि अब हम दोनों अपने को पूर्णरूप से समर्पण करके ओम् मण्डली के अन्दर जाकर ही रहें अथवा इस ब्राह्मण परिवार में आ जायें। ये बात हम दोनों ने मम्मा

को जाकर बताई। मम्मा ने सारा समाचार पूछकर हम दोनों की अर्ज़ी को स्वीकार किया और हम दोनों को आज्ञा दी कि आप इस बंगले में जाकर रहो।

1939 में क्रिसमस की छुट्टियों के वे दिन थे, जब मम्मा ने हम दोनों को छुट्टी दी कि भले आप अन्दर आकर रहो। तब मैंने अपने माता पिता को कहा "मैं कल जा रहा हूँ।" उन्हों ने पूछा - "कहाँ जा रहे हो?" मैंने कहा "मैंने तो आपको पहले ही कहा था कि मैं किसी न किसी दिन चला जाऊंगा। तो अब मैं वहाँ ओम् मण्डली में ही जा रहा हूँ।" वे तो फिर रोने लगे, कहने लगे "ऐसे कैसे होगा, अब हमारा क्या होगा, हमारी सम्भाल कौन करेगा आदि आदि?" मैंने कहा कि आपको इतना कहा, लेकिन आपने मेरी बात को माना ही नहीं। अभी भी आप हमारी ये बात मानो कि वहाँ चलकर ज्ञान लो और अपने जीवन में ये ज्ञान धारण कर प्रभु के बन जाओ। तो फिर मैं अभी भी आपके साथ रह सकता हूँ और घर में रहते कमाई करके आपकी पालना करता रहूँगा। फिर भी वे तो अपनी बात पर ही अटके हुए थे। ज्ञान सुनने की कोई इच्छा ही नहीं दिखाई। दूसरे दिन सुबह को मैंने उन्हों को कहा कि अब मैं जा रहा हूँ। ऐसे बोलकर जैसे ही मैं अपने कपड़े आदि लेने के लिए अलमारी खोली तो देखा मेरे कपड़े आदि वहाँ हैं ही नहीं। उन्होंने वहाँ से मेरे कपड़े निकाल कर किसी पेटी में छिपाकर रख लिये। उन्होंने सोचा कि कपड़ों के सिवाए कैसे जायेगा! परन्तु मैं अपने पूर्व संकल्प में था कि मुझे जाना ज़रूर है। मुझे याद आया कि एक ड्रेस मैंने धोबी को धोने के लिए दिया था, वही लेकर चला जाता हूँ। बस, अपनी साईकिल उठाई और चल पड़ा और धोबी से वह ड्रेस ली और सीधा उस बंगले पर गया जहाँ के लिए मुझको मम्मा ने आज्ञा दी थी। दो ड्रेस (कुर्ता, पैजामा आदि पहने हुए थे और दूसरा धोबी से लेकर आया) उनसे ही अपने को चलाता रहा। एक ड्रेस पहनता था तो दूसरी ड्रेस रोज़ अपने हाथों से

धुलाई करता था, ऐसे चलाता रहा। आठ-दस दिन के बाद मैंने लौकिक घ में चक्कर लगाया और उन्हों को कहा कि अभी भी आप सोचो और ज्ञा में आ जाओ। उन्होंने नहीं माना और उन्होंने जो हमारे वस्त्र छिपाकर रखे थे, वे भी निकालकर दिये। उन्होंने सोचा कि ये अब वापस आने वाला नहीं है। तो फिर हम इसके वस्त्र रखकर क्या करें। मैं वे वस्त्र लेकर चला आया फिर एक-दो मास के बाद जाकर कहा कि अब भी आप सोचो। फिर भी उन्होंने नहीं माना। तो फिर मैंने कहा कि अब मैंने अपना फर्ज़ अदा क दिया। मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की और अब मैं हमेशा के लि जा रहा हूँ। फिर उन्हों के पास नहीं गया। ऐसे ही कहें कि मैं अपने तन औ मन सहित पूर्ण रूप से बाप-दादा के पास समर्पण हो गया अर्थात् मरजीव जन्म ले लिया और अन्दर में ये प्रतिज्ञा कर ली कि बापदादा हमको जैसे चलावे, जहाँ भेजे, जो भी सेवा देवे अथवा जो भी आज्ञा करे अर्थात् जो भी श्रीमत हो वह मैं पूर्ण रूप से पालन करूँगा।

भिन्न-भिन्न ज़िम्मेवारियाँ मिलीं

मम्मा की आज्ञा प्रमाण जिस बंगले में हम जाकर रहे, वह बंगला खिलपटन पर बाबा के बंगले के पास ही था। दोनों के बंगलों के बीच में सिर्फ 2-3 बंगले और थे। नजदीक होने के कारण बाबा से हमारा कनेक्शन अधिक होने लगा। ज्ञान में चलते एक वर्ष में बाहर से आते रहते हुए बाबा को देखा ही था और बाबा की मुरली भी सुनी थी लेकिन कभी भी बाबा के साथ बात-चीत करने का अवसर नहीं मिला था। यहाँ बाबा के पास रहने के कारण, ड्रामा अनुसार कार्य-व्यवहार के कारण बाबा से भी बातचीत शुरू हो गई।

इस बंगले में ज्ञान में चलने वाले तीन-चार शिकारपुरी परिवार रहते थे। उनमें से एक माता सवेरे उठकर स्नान का गर्म पानी तैयार करती थी। लेकिन वह गर्म पानी थोड़ा देरी से मिलता था। मैंने सोचा – मैं तो जल्दी ही उठता हूँ, तो क्यों नहीं ये गर्म पानी मैं ही तैयार कर लूँ। तो मैंने उस माता को जाकर कहा कि माता जी आप निश्चिन्त रहें, ये गर्म पानी मैं तैयार कर दूँगा। फिर रोज़ वह गर्म पानी तैयार करता रहा। इस बात का बाबा को मालूम पड़ गया। मुझे बाबा ने अपने बंगले पर बुलाया और मेरे से पूछा - ''सवेरे कितने बजे उठते हो?'' मैंने कहा ''बाबा, साढ़े तीन बजे उठता हूँ।'' बाबा ने पूछा - ''उस समय क्या करते हो?'' मैंने कहा ''बाबा, उस समय गर्म पानी करता हूँ और जिसको चाहिए उसको पानी पहुँचा कर भी आता हूँ'' बाबा ने कहा, ''अच्छा मैं एक ड्युटी दे दूँ?'' मैंने कहा ''हाँ बाबा, दे दीजिये।'' फिर बाबा ने कहा - ''तुम भले पहले गर्म पानी करना, फिर स्नान-पानी करके, सीनियर सिस्टर्स के बंगले में जाना, वहाँ से साइकिल पर बड़े डब्बे ले जाना और सदर बाजार में जाकर 80 पाउण्ड मिल्क क्रीम

खरीद करके सीनियर सिस्टर्स के बंगले पर पहुँचा देना।'' मैंने कहा ''जी बाबा, ऐसे ही करूँगा।'' ऐसे ही रोज़ ये ड्युटी करता रहा। बाबा मेरी रिपोर्ट रोज़ सीनियर सिस्टर्स से पूछता रहा कि ये बच्चा रोज़ आपके पास आता है तो ठीक टाइम पर आता है, ठीक टाइम पर मिल्क क्रीम लाता है, चीज अच्छी लाता है, ठीक दाम देकर आता है और इसका बहनों से बातचीत करने का ढंग, लेना देना कैसा है? बाबा को बड़ी बहनों की तरफ से इन सभी बातों की रिपोर्ट अच्छी मिली। तो बाबा ने थोड़े दिनों के बाद फिर मुझे बुलाया। कहा ''दूसरी ड्युटी भी दे दूँ?'' मैंने कहा – ''हाँ बाबा, दे दीजिये।'' बाबा ने कहा - ''वह मिल्क क्रीम बड़ी बहनों के बंगले पर पहुँचाने के बाद, फिर वहाँ से ही होलसेल सब्जी बाजार में जाना, वहाँ से सब्जियाँ खरीद कर ले आना।'' मैंने कहा - ''हाँ बाबा ले आऊँगा।'' हमारा बंगला, बड़ी बहनों के बंगले से 2 मील दूर था, वहाँ से सदर बाजार और आगे 2 मील दूर था। होलसेल सब्जी मार्केट बड़ी सिस्टर्स के बंगले से दूसरी तरफ 4 मील दूर थी।

वह दूसरी ड्युटी भी आरम्भ कर दी। एक ट्राई साइकिल थी (साइकिल की साइड में एक केरियर था और उसका तीसरा पहिया था), उसमें 5-6 बोरियाँ भरकर सब्जियाँ ले आता था, उसके बाद क्लास चालू हो जाता था। हमेशा कोशिश यही करता था कि क्लास में ठीक टाइम पर पहुंच जाऊं। लेकिन कभी-कभी सब्जियाँ ठीक नहीं होती थी तो कुछ समय अधिक लग जाता था। लेकिन कोशिश यही करता था कि चीज भी अच्छी से अच्छी लाऊं क्योंकि शिव बाबा के बच्चे खाने वाले हैं और चीज भी सस्ती हो। तो सभी दुकानों से अच्छी तरह भाव पूछकर अच्छी चीज लेता था। किसी दिन अच्छी चीज नहीं होती थी, तो चुनचुनकर थोड़ी-थोड़ी करके कई जगह से निकाल कर लेता था। तो उसमें थोड़ा समय अधिक लग जाता था और क्लास में 15-20 मिनट कब-कब देरी से पहुँचता था। लेकिन मेरे दिल में

सदा ये संकल्प रहता था कि मैं अगर बाबा का सपूत बच्चा हूँ, हर आज्ञा अथवा श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन करता हूँ तो क्लास में देरी से आने के कारण मैंने जो क्लास में ज्ञान की पाइन्ट मिस की, वह मिस नहीं हो सकती है। वह पाइन्ट्स जरूर बाबा कभी न कभी मेरी बुद्धि में भर देगा क्योंकि मैं बाबा की आज्ञा अनुसार बाबा के ही अथवा यज्ञ की ही सेवा पर गया था। एक उदाहरण सदा अपने सामने रखता था। जैसे एक कोई बाप है, उसके चार बच्चे हैं। वह बाप अपने एक बच्चे को कहता है कि तुम बाजार से जाकर ये चीज लाओ। बाकी तीन बच्चे बाप के सामने ऐसे ही बैठे हैं। बाप की दिल होती है कि इन बच्चों को टोली खिलाऊँ। तो उन तीन बच्चों को टोली खिलाई। तो क्या चौथा बच्चा, जिसको बाजार में चीज लाने के लिए भेजा, उसके लिए टोली नहीं रखेगा? उसको भी जरूर टोली खिलायेगा, और ही उसको डबल टोली खिलायेगा। क्योंकि वह सर्विसएबुल बच्चा है और बाप का आज्ञाकारी बच्चा है। अन्य तीनों बच्चे तो कोई काम नहीं कर रहे थे, ऐसे ही सामने बैठे थे। तो जरूर जो बाप की आज्ञा मानकर सर्विस पर गया उसको तो डबल टोली खिलायेगा। यहाँ भी बाबा ज्ञान अमृत कहो, ज्ञान का भोजन कहो, या ज्ञान की टोली कहो, वह सभी बच्चों को खिलाते हैं तो जिस बच्चे को सेवा अर्थ कोई चीज बाजार से लाने के लिए भेजा, उसके लिए क्या उस ज्ञान टोली का भाग नहीं देगा? जरूर उसको तो डबल भाग मिलना चाहिए। हाँ, बच्चा सपूत होना चाहिए, आज्ञाकारी, वफादार, फरमान बरदार और ईमानदार होना चाहिए। हर श्रीमत को पूर्ण रूप से अगर कदम-कदम पर पालन करता है तो उस बच्चे की बाप ज्ञान से, गुणों से, और शक्तियों से झोली भर देता है। ऐसा बच्चा बाप के सदा समीप है और बाप के दिल तख्तनशीन है और बाप ऐसे बच्चे का सदा साथी बनकर हर कार्य में सफलता दिलाता है। मैं भी सदा अपने से यही चेक करता था कि मैं हर श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन करता हूँ? अगर

हाँ तो मेरा कुछ भी छूट नहीं सकता है। इस रीति से सदा निश्चिन्त रहता था लेकिन लापरवाही नहीं करता था।

ये दोनों ड्युटीज बजाता रहा। बाबा फिर भी मेरी रिपोर्ट बहनों से फोन पर पूछता रहा। रिपोर्ट अच्छी मिलती रही। थोड़े दिनों में बाबा ने मुझे बुलाया और कहा "तीसरी ड्युटी भी दे दूँ" मैंने कहा "हाँ बाबा दे दीजिये"। ऐसे बाबा मुझे एक, दो, तीन, चार, पांच ड्युटी देता रहा और मैं सदैव 'हाँ जी, हाँ जी' करते हुए पूर्ण रूप से बजाता रहा। बाबा मेरे से संतुष्ट होता रहा। ऐसे मैं सारा दिन सेवा में ओवर बिजी हो गया।

एक वर्ष इस तरह कार्य करते रहने के बाद मेरी ड्युटी बदल गई। एन्टी ओम् मण्डली वालों की ऑपोजीशन चलती थी। जिस कारण सोचा गया कि बाबा के बंगले पर कोई पुलिसमैंन का पहरा होना चाहिए। भाऊ विश्वकिशोर, जिनका लौकिक नाम भेरूमल कृपलानी था। उन्होंने बाबा से पूछा कि किसको पुलिसमैंन बनायें? क्योंकि ये भी सोचा गया कि पुलिसमैन कोई बाहर वाला नहीं होना चाहिए। बाहर वाले हमारे खिलाफ हैं, इसलिए उन्हों पर विश्वास नहीं रख सकते, इसलिए अपने ही किसी भाई को पुलिसमैन बनाया जाये। बाबा का मेरे में बहुत विश्वास हो गया था, जिस कारण भाऊ विश्वकिशोर को कहा कि इसको (मुझे) साथ ले जाओ और पुलिसमैन (रामोशी पुलिस) बनाकर ले आओ। फिर तो भाऊ विश्वकिशोर और मैं पुलिस सुपरिनटेण्डेण्ट के पास गये। भाऊ ने उनको कहा कि मुझको बाबा के बंगले के लिए एक रामोशी पुलिसमैन चाहिए। उसने कहा हाँ मैं आपको एक पुलिसमैन दे सकता हूँ। भाऊ ने उसको कहा कि हम बाहर का कोई पुलिसमैन नहीं रखना चाहते, मैंने इसको (मुझ को) लाया है। इसको आप पुलिसमैन बनाकर बाबा के बंगले के लिए दे दीजिये, जिससे ये वहाँ पर पहरा देगा। उसने कहा - ये तो हो नहीं सकता। क्योंकि पहले तो एक वर्ष नये आदमी को ट्रेनिंग दी जाती है, तब उसका नाम पुलिसमैन के

रजिस्टर में दाखिल होता है। उसके बाद ही वह पुलिसमैन की ड्युटी बजा सकता है। हम भी ऐसे ट्रेनिंग लिये हुए आदमी को ही आपके बंगले पर रामोशी पुलिस की ड्युटी बजाने के लिए दे सकते हैं। लेकिन इसने (हमने) तो कोई ट्रेनिंग नहीं ली है, इसलिए हम इसको रामोशी पुलिस बनाकर नहीं दे सकते हैं। फिर तो भाऊ ने उनको समझाया - देखिये साहब, आप तो जानते हैं कि सारे सिन्ध वाले हमारे खिलाफ हो गये हैं। तो हम बाहर वाले किसी भी आदमी पर विश्वास कैसे रख सकते हैं? इसलिए हम चाहते हैं कि अपना ही कोई भाई, जो पुलिस वाला बनकर बंगले पर अच्छी तरह से पहरा दे। वह पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट अच्छा आदमी था, उसने कहा कि हाँ, आपकी बात तो राइट है। उसने मुझको कहा - अच्छा आओ, मुझे अपना नाम बताओ, मैं आपका नाम रजिस्टर में ट्रेनिंग लिया हुआ नोट कर लेता हूँ। हमारा नाम रजिस्टर में नोट कर लिया। भाऊ ने फिर उसको कहा - ये दिन में पहरा देगा। वैसे तो रामोशी पुलिस वाले रात को ड्युटी देते हैं। उसने ये भी मान लिया कि भले ये दिन में पहरा दे। फिर तो जब मुझको पुलिस की ड्रेस देने लगा तो भाऊ ने उसको कहा कि हम किसी की प्रयोग की हुई ड्रेस नहीं पहनते हैं। तो उसने नई ड्रेस, नये जुराब, नया बूट, नई लाठी आदि निकाल कर दे दिये और पुलिस मैन का पटका देने लगा तब भाऊ ने उसको कहा - पटका देने की आवश्यकता नहीं है, हम इसको हैट दे देंगे, वह पहन कर पहरे पर बैठेगा। वह भी उसने मान लिया।

ऐसे मैं रामोशी पुलिसमैन बनकर बाबा के बंगले पर ड्युटी देता रहा। गेट के सामने कम्पाउण्ड में एक टेबल कुर्सी रख दी और उस पर बैठ कर अपना लिटरेचर का कार्य (मुरलियों से पाइन्ट्स निकालना) भी करता रहा और पहरे की ड्युटी भी सम्भालता रहा। मेरे रहने का प्रबन्ध भी बाबा के उस बंगले में ही मिला। गेट के सामने ही मोटर गेरेज थी, उसके ऊपर एक कमरा था, उसमें रहने लगा।

एक बार क्या हुआ कि भोली दादी के पति ने केस किया था कि मेरी पत्नि अपनी छोटी बच्ची (मीरा) को साथ लेकर भागकर यहाँ ओम् मण्डली में आई है। उसका वारण्ट बाबा के ऊपर निकलवाकर पुलिस इन्सपेक्टर साथ लेकर आ रहा था। ये यहाँ बाबा को पता पड़ गया कि ये लोग हमारे बंगले पर आ रहे हैं। तो फौरन भाऊ विश्वकिशोर को कोर्ट में भेजा कि जाकर वहाँ से स्टे आर्डर ले आओ। थोड़े ही समय में ये लोग पुलिस इन्सपेक्टर के साथ आ गये। मैं गेट पर खड़ा था, उन्हों ने आकर मुझे वारण्ट दिखाया और कहा कि बाबा को कोर्ट में ले जाना है। मैंने उन्हों को कहा कि आप यहाँ ठहरो, मैं ऊपर जाकर आपका मैसेज देकर आता हूँ। मैं ऊपर फर्स्ट फ्लोर पर जहाँ बाबा रहते थे, वहाँ गया और बाबा को सुनाया कि ये लोग वारण्ट लेकर आ गये हैं। बाबा ने कहा कि तुम युक्ति से उन्होंको ठहराओ, जब तक विश्वकिशोर आ जाये। मैं नीचे आकर उन्होंको कहा कि बाबा जी तैयारी कर रहे हैं, थोड़ी देरी में नीचे उतरेंगे। 15-20 मिनट के बाद पुलिस इन्सपेक्टर कहने लगा कि अभी तक बाबा जी नहीं उतरे हैं, हम कब तक यहाँ ऐसे ठहरेंगे। मैंने उन्होंको कहा कि मैं जब ऊपर गया था, तब भोजन खाने की तैयारी में थे, अब तो भोजन खा चुके होंगे। अब चलने की तैयारी करते होंगे। अब थोड़ी देरी में आ जायेंगे। इस तरह से आधा घण्टा ठहरा दिया। इतनी देर में भाऊ विश्वकिशोर भी आ गये। जब भाऊ ने गेट पर इन सभी पुलिस वालों को देखा और पुलिस इन्सपेक्टर के हाथ में वारण्ट भी देखा तब स्टे आर्डर निकाल कर उनके हाथ में दिया। वह स्टे आर्डर देखकर विचारे हैरान हो गये, सभी का मुंह ही पीला पड़ गया। मेरे तरफ देख कर अन्दर में गुस्से में आ रहे थे कि इसने हमको बहुत समय बाहर ही गेट पर ठहरा दिया। फिर तो वे सभी लोग वापस चले गये। दूसरे दिन पेपर में समाचार आया कि कल पुलिस इन्सपेक्टर क्लिफ्टन पर गया था और बाबा जी (दादा लेखराज) के लिए वारण्ट लेकर गया था, वहाँ गेट पर एक रामोशी पुलिसमैन खड़ा था, वह इतना कड़ा (Hostile) था, जो

पुलिस इन्सपेक्टर को अन्दर जाने ही नहीं दिया। सबको बाहर ही ठहरा दिया। एक घण्टे तक उनको अन्दर जाने ही नहीं दिया। इतना वह रामोशी पुलिस मैन कड़ा था। बाद में सबको स्टे आर्डर दिखाकर रवाना कर दिया। इस प्रकार पहरे पर ये एक ही अनुभव हुआ। बाकी तो बिल्कुल शान्ति से पहरे की ड्युटी बजाता रहा। धीरे-धीरे ये सभी कोर्ट आदि और एन्टी ओम् मण्डली के हंगामे आदि सब खत्म हो गये। फिर तो ये रामोशी पुलिस की ड्युटी भी खत्म हो गयी।

उसके बाद फिर बाबा ने मुझे बच्चों का टीचर बनाकर उन्होंकी सम्भाल के लिए रखा। ''बॉय भवन'' (Boy Bhawan) नाम का बंगला था, जहाँ पर छः वर्ष से बारह वर्ष की आयु के बच्चे रहते थे। वहाँ मैं और साथ में एक भगवान भाई था, हम दोनों उन बच्चों को सम्भालते थे। उन्होंको राज विद्या भी पढ़ाते थे और ज्ञान की पाइन्ट्स भी सुनाते थे। बंगले के सामने एक बड़ा मैदान था, वहाँ उन बच्चों को शाम को क्रिकेट आदि का खेल कराते थे। कभी-कभी उन्होंको किसी पिकनिक स्पॉट पर घुमाकर भी ले आते थे। ऐसे इन 20-25 बच्चों को सम्भालते रहे। ये ड्युटी भी एक-डेढ़ वर्ष रही।

उसके बाद मुझे धोबी घाट सम्भालने के लिए कहा गया। पहले तो एक कण्ट्रेक्टर था, जो रोज़ कपड़े ले जाता था और धुलाई आदि करके कपड़े ले आता था। लेकिन फिर यहाँ अपना ही धोबी घाट बनाने का विचार आया। गीता भवन (बड़ी बहनों का बंगला) के थोड़ा पास, एक-दो बंगले बीच में छोड़कर एक बंगला था, जिसका नाम गुल्जार भवन रखा गया था। उसमें अपने ही कई भाई-बहनें रहते थे, उसके कम्पाउण्ड में ये धोबी घाट खोला गया। मैं उस धोबी घाट का हेड बना। एक बड़ी टिन शीट की टांकी, जो लगभग 8 फुट बाई 4 फुट की बनाई गई थी। उसमें पानी डालते थे, जिसके नीचे में लकड़ियाँ डालकर रोज़ आग जलाता था। जब पानी खूब गरम हो जाता था, तब उसमें साबुन और सोडा डालकर उसमें मैले कपड़े डालकर

एक मोटी लकड़ी से कपड़ों को अन्दर दबा देता था। ये सब मैं अकेला ही रात को 7-8 बजे करता था। फिर सवेरे 4-5 बजे आकर वे गरम-गरम कपड़े एक लकड़े से बाहर निकालता था। इस टांकी के पास ही 10 फीट व्यास की एक गोल टंकी बनाई थी, जिसमें रोज़ सवेरे पानी भरते थे। इसके चारों ओर कपड़े सटने की 3-4 स्लेब्स बनाई हुई थीं, जिन पर मैं और 2-3 दूसरे भाई वे गरम-गरम कपड़े सटते और धुलाई करते थे। उस बंगले की कम्पाउण्ड में कपड़े सुखाने के लिए रस्सियाँ लगाई गई थी। उन रस्सियों पर 4-5 भाई कपड़े सुखाते थे। ये सारा कार्य हम लोग क्लास से पहले ही करते थे और बाद में स्नान आदि करके क्लास में जाते थे। धोबीघाट का ये कार्य सवेरे के समय ही चलाते थे। दिन में फिर कपड़े प्रेस आदि का कार्य करते थे। ऐसे ये धोबी घाट आदि का कार्य करते रहे। मैं रहता भी उस गुल्जार भवन में ही था।

ये धोबी घाट का कार्य डेढ़-दो वर्ष चलाने के बाद एक पूरन नाम का धोबी था, उसने कपड़े धोने का ये सारा कार्य अपने ऊपर उठा लिया। बाकी कपड़े प्रेस करने का कार्य हम लोग करते थे। थोड़े समय के बाद फिर कपड़े प्रेस करने का कार्य भी बाहर के लोगों ने ले लिया। मैं फिर अन्य कई प्रकार की ड्युटीज में लग गया।

चैप्टर 4

झाड़ और गोला बनाने की सेवा

कुंज भवन में जो बहनें रहती थीं, उनमें से कई बहनों को शिवबाबा सूक्ष्म वतन में खींचकर (बुलाकर) साक्षात्कार कराकर कई प्रकार के दृश्य दिखाते थे। कुछ बहनें तो रोज ही साक्षात्कार में चली जाती थीं। एक बार एक बहन को शिवबाबा ने एक दृश्य में सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों के अव्यक्त नाम बताये। उस बहन को वहाँ सूक्ष्म वतन में एक बोर्ड दिखाई पड़ा, जिस पर हरेक ब्रह्माकुमार-कुमारी के व्यक्त नाम के सामने अव्यक्त नाम भी लिखे हुए थे। वहाँ अव्यक्त बाबा ने उस बहन को कहा कि आज से सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को इन अव्यक्त नामों से ही बुलाया जाये। फिर तो उस बहन ने अपने हाथ से ऐसा इशारा किया जो सामने बैठी हुई बहनें समझ गईं कि ये कापी और पैन माँग रही है। तो उस साक्षात्कार वाली बहन के आगे कापी और पैन रखी गई। उसने वह कापी और पैन उठा कर जो बोर्ड पर नाम लिखे हुए थे, वे देखकर कापी पर लिखती गई। जब सभी व्यक्त, अव्यक्त नाम लिखकर पूरे किये, तब वापस इस साकार वतन में आ गई और आकर साकार ब्रह्मा बाबा को सूक्ष्म वतन का समाचार सुनाया और वे नाम भी दिखाये। फिर तो सभी व्यक्त और अव्यक्त नाम लिखकर बोर्ड पर लगाये गये और सभी ने अपने पास नोट करके भी रखे। उस दिन से लेकर सभी को उस अव्यक्त नाम से बुलाया जाता है। मेरा नाम विश्व रत्न पड़ा और उस दिन से लेकर मुझे भी उस नाम से ही बुलाया जाता है।

हर रोज़ सवेरे को साकार ब्रह्मा बाबा कुंज भवन (बड़ी बहनों के बंगले) में आकर मुरली चलाता था। हम सभी भाई-बहनें, जो अन्य बंगलों में रहते थे, वे भी सभी वहाँ ही जाकर बाबा की मुरली सुनते थे। एक दिन जब बाबा आकर बंदली पर मुरली चलाने के लिए बैठे। तो बैठते ही कहा कि आज

मैं (साकार ब्रह्मा बाबा) सूक्ष्म वतन में गया था। वहाँ अव्यक्त बाबा ने मुझे एक बड़ा सुन्दर झाड़ (वृक्ष) दिखाया और वह मनुष्यों का झाड़ था। बाबा (अव्यक्त बाबा ने साकार बाबा को) ने कहा कि विश्व रतन को कहो कि इसकी डिज़ाइन बनावे। मैं क्लास में ही बैठा हुआ था, तो उसी समय ही साकार बाबा ने मेरे से पूछा कि कैसे बच्चू! ये डिज़ाइन बनायेंगे? मैंने कहा 'हाँ बाबा', मैं कभी भी किसी कार्य के लिए बाबा को ना नहीं करता था। सदैव हाँ जी ही करता था। मैं सोचता था कि किसको ना करूँ! जब निश्चय हो गया कि स्वयं परमपिता परमात्मा शिव बाबा इस ब्रह्मा बाबा के तन में आकर सभी डायरेक्शन दे रहे हैं, तो फिर वे डायरेक्शन मुझे स्वीकार करना ही है और उनको पूर्ण रूप से अमल में लाना ही है। भले वह कार्य करना मैं जानता हूँ या नहीं, पहले कब उसका अनुभव है या नहीं, फिर भी मुझे ''हाँ जी'' ही करना है क्योंकि मैं हमेशा समझता था कि बाबा जो कुछ भी डायरेक्शन देता है, वह कार्य हुआ ही पड़ा है। ना होने वाला कार्य बाबा कभी कहेंगे ही नहीं। ऐसे ही बाबा मेरा टाइम वेस्ट करायेगा ही नहीं। ये कार्य भी बाबा ने जो कहा है, वह हुआ ही पड़ा है, बाबा मेरे साथ है, आप ही ये कार्य सफलता पूर्वक मेरे द्वारा करायेगा। मुझे सिर्फ अपनी अंगुली रखनी है। ऐसे सदैव बुद्धि में रहता था, जिस कारण सदैव ''हाँ जी, हाँ जी'' ही करता था। जब बाबा ने इतनी सारी सभा में किसी कार्य के लिए मेरे में विश्वास रखकर मुझे ही चुना है तो मैं अपने में आत्म-विश्वास न रखूँ और बाबा की आज्ञा को ना मानूँ, ये कैसे हो सकता है!

फिर साकार बाबा ने मम्मा को कहा कि मम्मा, इस बच्चे से सभी ड्युटीज छुड़वा कर अन्य बच्चों को बाँट कर दे दो। आज से इसको यही कार्य करना है। ये मोस्ट इम्पारटेन्ट कार्य है। मम्मा ने भी कहा - ''जी बाबा।'' बस मुरली पूरी होने के बाद मम्मा ने मुझको बुलाया और मेरे से सभी ड्युटीज छुड़वाकर अन्य भाइयों को बाँट कर दे दीं और मुझे वहाँ

ज्ञान भवन में ही एक आउट हाउस का कमरा था, वह दे दिया कि यहाँ ही बैठकर ये कार्य करना है, साथ में टेबुल-कुर्सी, पेन्सिल आदि जो मुझे चाहिए था वह भी दे दिया गया। अब मैं सोचने लगा कि मुझे आज से यही कार्य करना है। बाबा ने पहले झाड़ का ज्ञान तो दिया ही था कि ये सृष्टि एक उल्टा झाड़ है, जिसका बीज ऊपर में शिवबाबा है। उस बीज से ये देवी देवताओं का तना निकलता है, फिर और धर्म सतयुग-त्रेता दो युगों के बाद डाल-डालियों के रूप में निकलते हैं। अब ये झाड़ जड़-जड़ीभूत अवस्था को पहुँच गया है, अब नया झाड़ स्थापन हो रहा है। तो ये ज्ञान बाबा ने पहले सुनाया ही हुआ था, बाकी उसकी डिज़ाइन बनानी थी। अब सोचने लगा कि इसे अब कैसे बनाऊँ। पहले सोचा कि झाड़ में कोई डाल आगे होगी, कोई पीछे होगी, कोई टेड़ी होगी और डाल के आगे पत्ते भी आयेंगे, तो उस पर लिखत कैसे लिखेंगे कि वह किस धर्म की डाल है। क्योंकि ये झाड़ लोगों को समझाने के लिए बना रहे हैं तो लिखत ज़रूर चाहिए कि ये डाल इस्लाम धर्म की, ये बौद्ध धर्म की आदि-आदि। ये सोचते-सोचते आखिर में यही विचार आया कि सभी डालें दोनों तरफ़ सीधे ही बना देता हूँ और पत्ते डालों के सामने नहीं दिखाता हूँ और पत्ते डालों के ऊपर और नीचे बना देता हूँ। ऐसे विचार करके बनाना शुरू किया। एक सीधी लाइन लगाई, ये धरनी है। फिर ऊपर से नीचे धरनी तक दो लाइन लगाई, ये तना है। फिर उस तने के चार बराबर भाग किये, ये चार युग हैं। दो युग सतयुग और त्रेता के बाद द्वापर से इब्राहिम द्वारा इस्लाम धर्म की स्थापना होती है। तो तने के दो भाग छोड़कर तने के बाई ओर एक डाल निकाली, उसके साथ उस डाल की शाखायें-प्रशाखायें भी दिखाई। उस डाल पर लिख दिया इब्राहीम का इस्लाम धर्म। अब सोचा कि दूसरी डाल दांयी ओर निकालना चाहिए। अगर दूसरा डाल भी बांई ओर ही निकालता हूँ तो बैलेन्स नहीं होगा, झाड़ ही गिर जायेगा। इसलिए दूसरी डाल दांयीं ओर होनी चाहिए।

और यह भी सोचा कि बौद्धि धर्म २५० वर्ष इस्लाम धर्म के बाद में स्थापन होता है तो बौद्धि धर्म की डाल थोड़ी ऊपर करके बनाना चाहिये। ऐसे-ऐसे अन्दर विचार आते रहे।

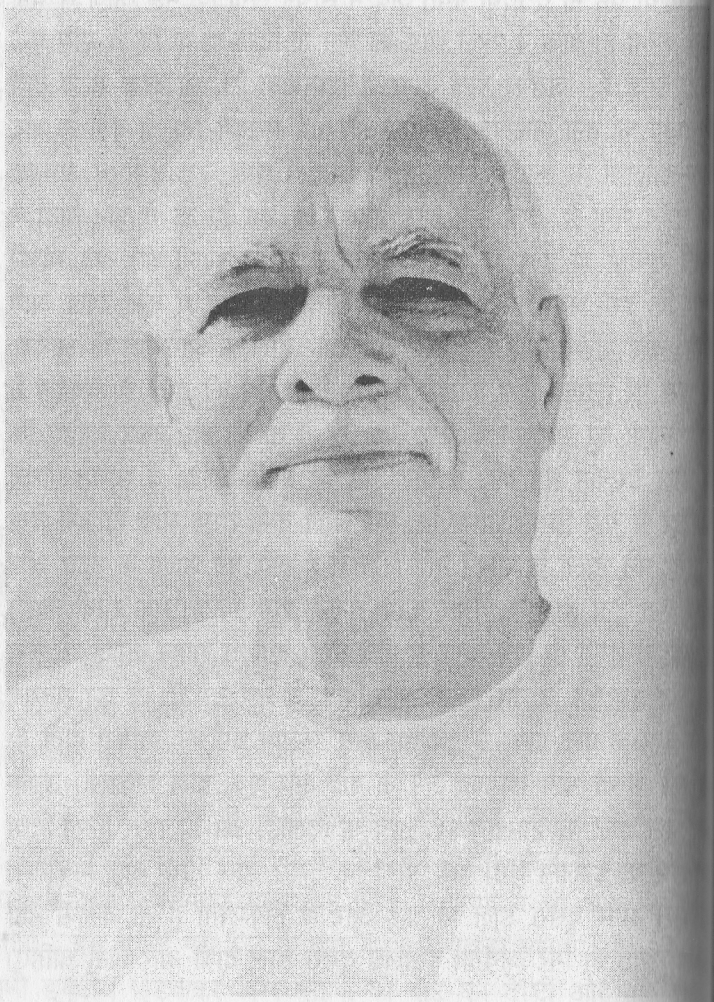

ऐसे विचार करके दूसरी डाल दांयीं ओर निकाली और उस पर लिख दिया बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म। अब सोचने लगा कि लेफ्ट अर्थात् वेस्ट और राइट अर्थात् ईस्ट। इसके बाद नम्बर है क्राइस्ट का वह वेस्ट में है। तो लेफ्ट साइड में डाल निकाल कर उस पर लिखा क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म। फिर नम्बर है सन्यास धर्म का तो वह डाल निकाली, फिर मुस्लिम धर्म की डाल निकाली। फिर गुरु नानक साहब के सिख धर्म की डाल निकाली। फिर देखा कि लेफ्ट-राइट अर्थात् वेस्ट - ईस्ट नम्बरवार धर्म आते गये। जैसे बाबा ने झाड़ का ज्ञान समझाया था, उसी अनुसार ही बिल्कुल नम्बरवार अपने नम्बर पर डाल आते गये। फिर छोटी-छोटी डालियाँ आदि निकालीं। फिर बाहर से एक गोल लाइन लगाई, उसके बीच में डालों के आस-पास पत्ते निकाले। तो देखा धरनी से इतना ऊँचा मोटा-सा अच्छा झाड़ दिखाई पड़ रहा था। वह पेन्सिल से बनाया हुआ झाड़ ही बाबा के पास ले आया और बाबा को बताया कि बाबा ऐसे बनाया है। डाल के आगे पत्ते नहीं बनाये हैं क्योंकि लिखत भी लिखनी है और डाल भी ऐसे ही सीधे बनाये हैं। बाबा ने कहा "बिल्कुल ही ठीक है ये तो समझाने के लिए है, ऐसे ही होना चाहिए।"

अब इस पर बाबा का मंथन चलने लगा। बुद्धि बाबा की, अंगुली मेरी चलने लगी। फिर तो बाबा जो रोज़ डायरेक्शन देते रहे, उसी अनुसार ही मैं बनाता रहा। बाबा ने कहा कि "इसमें तुमने चार युग तो बनाये हैं लेकिन संगम युग कहाँ?" मैंने कहा बाबा अभी बनाकर ले आता हूँ। फिर झाड़ के बीचे थोड़ी जगह रखकर, उसमें जड़ें बना दीं कि ये संगम युग है। फिर बाबा के पास ले आया। बाबा ने कहा "हाँ ठीक है, अब इस जगह में बाबा ब्रह्मा का चित्र बना दो।" मैंने कहा हाँ बाबा बनाकर ले आता हूँ। तो वहाँ झाड़ के बीचे संगम युग में ब्रह्मा बाबा का चित्र (पेन्सिल से) बनाकर फिर बाबा के पास लेकर आया। बाबा ने कहा "हाँ ठीक है।" फिर बाबा ने थोड़ा सोचने के बाद कहा "हमारा तो प्रवृत्ति मार्ग है, इसलिए यहाँ संगम युग में

ब्रह्मा बाबा के साथ मम्मा का चित्र भी बनाओ।'' मैंने कहा हाँ बाबा बनाकर ले आता हूँ। फिर बाबा का चित्र जो बीच में बनाया था उसको रबर से मिटाकर बाबा और मम्मा दोनों का चित्र बीच में बना दिया। फिर बाबा के पास लेकर आया। बाबा ने कहा ''हाँ ठीक है।'' सोचते-सोचते बाबा ने फिर कहा - ''मम्मा-बाबा कहने वाले कौन? बच्चे ही तो मम्मा-बाबा कहेंगे। इसलिए यहाँ बच्चों के भी चित्र बनाओ।'' मैंने कहा ''हाँ बाबा, बनाता हूँ।'' फिर मैंने बाबा को कहा ''बाबा बच्चे तो बहुत हैं, यहाँ कितने बच्चों को बिठाऊँ?'' बाबा ने कहा ''देखो बच्चू, आठ रत्नों की माला गाई हुई है, इसलिए तुम यहाँ आठ बच्चों के चित्र बना दो, वे सभी बच्चों का प्रतिनिधित्व करेंगे।'' मैंने कहा – हाँ बाबा। फिर मैंने कहा – ''बाबा आठ बच्चों के नाम आप हमको बता दीजिये, उनके फोटो लेकर मैं यहाँ लगा दूँगा।'' बाबा ने कहा – ''हाँ, ये बात तुम्हारी ठीक है। अच्छा आज नहीं, कल मैं तुमको बताऊँगा।'' फिर बाबा ने संतरी दादी को बुलाया। संतरी दादी संदेशी थी, ध्यान में अव्यक्त बाबा के पास जाया करती थी। उसको बाबा ने कहा ''जाओ बाबा के पास और सुनाओं कि यहाँ ये झाड़ बन रहा है, उसमें आठ बच्चों के चित्र बनाने हैं तो कौन से बच्चे यहाँ बिठायें, उनके नाम आप बता दीजिये।'' फिर संतरी बहन अव्यक्त बाबा के पास गई और बाबा से आठ बच्चों के नाम ले आई और साकार बाबा को बताया। दूसरे दिन बाबा ने मुझे वे आठ नाम दिये। वे थे दीदी मनमोहिनी, दादी प्रकाशमणि, दादी बृजइन्द्रा, दादी ध्यानी, दादी शान्तामणि, दादी बृजशान्ता, भाऊ विश्वकिशोर और विश्वरतन। मैंने फिर क्या किया कि जो तीन दादियों और एक भाई के फोटो बाई तरफ और तीन दादियाँ और एक भाई के फोटो दायीं तरफ वहाँ संगम पर लगा दिये। ऐसे आठ बच्चों के फोटो वहाँ लगा दिये। ऐसे रोज़-रोज़ बाबा नई-नई बातें बताता रहा, बाबा की बुद्धि चलती रही और मेरी बुद्धि को भी टच करता रहा और मेरी अंगुली में शक्ति भरता रहा। ज्ञान में आने से पहले ये आर्ट का काम मैंने कभी किया

ही नहीं था, ब्रुश भी कभी अपने हाथ में नहीं उठाया था। एक गाँव का छोरा था लेकिन करन-करावनहार बाप हर बच्चे की जन्मपत्री को जानते हुए मुझ आत्मा द्वारा ये आर्ट का कार्य करा रहा था। शक्ति भी भरता रहता था, जिससे इस कार्य में सफलता मिलती रही।

फिर बाबा ने कहा - मम्मा बाबा के पीछे से कम्बाइण्ड स्वरूप चतुर्भुज का चित्र बनाओ। मैं वह चतुर्भुज का चित्र बनाकर ले आया। फिर बाबा ने कहा ''नया झाड़ जैसे उत्पन्न होता है तो पहले दो पत्ते निकलते हैं, ऐसे यहाँ इस चतुर्भुज से दो पत्ते अर्थात् राधे-कृष्ण निकलते हैं, ऐसे दो पत्ते बनाओ।'' फिर वह राधे कृष्ण का चित्र बनाया। फिर बाबा ने कहा कि सतयुग की सीन बनाओ, गोल्डन महल बनाओ। त्रेता की भी सीन बनाओ, जिसमें राम-सीता को बिठाओ। वह सतयुग-त्रेता की सीन भी बनाई। फिर बाबा ने कहा ''द्वापर से भक्ति-मार्ग शुरू होता है, तो भक्ति मार्ग के चित्र बनाओ। पहले शिवलिंग की पूजा होती है, फिर देवताओं की। फिर आगे चलकर कलियुग में झाड़ की भी पूजा होती है।'' ये सभी चित्र भी बनाता गया। फिर बाबा ने कहा ''सृष्टि के अन्त में ब्रह्मा बाबा का खड़ा चित्र बनाओ।'' वह भी बनाया। फिर बाबा ने कहा ''हर डाल की आदि में उनके सिंहासन फादर, उनके मस्जिद, गिरजाघर आदि पूजा के स्थान बनाओ।'' वे भी बनाये। फिर कहा ''हर डाल से लटके हुए फल, उन्होंके फालोवर्स के निकालो।'' वह भी जिस-जिस धर्म की डाल थी, उन्होंके ऐसे ऐसे फालोवर्स (मनुष्य के रूप में) के चित्र फल के रूप में लटकते हुए दिखाये। फिर बाबा ने कहा ''छोटी डालियों से भी एक डाली में गांधी का चित्र बनाओ, एक में जिन्ना का चित्र बनाओ।'' वे भी बनाये। फिर बाबा ने कहा ''एटामिक बम्ब वार का चित्र बनाओ और दोनों तरफ उन्हों को बिल्लों के रूप में दिखाओ अर्थात् दो बिल्ले लड़ रहे हैं और माखन (नई सृष्टि की राजाई) कृष्ण के हाथ में दिखाओ। फिर आत्मायें कैसे मच्छरों सदृश्य अपने घर

मुक्ति धाम में जा रही हैं, वह भी दिखाओ। प्राकृतिक आपदायें और गृ युद्ध आदि सब दिखाओ।'' तो ये सभी चित्र भी बनाये। वर्ल्ड वार में बिल्लों के रूप में एक तरफ रूज़वेल्ट का चित्र बनाया और दूसरी तरफ स्टॉलिन का चित्र बनाया था। क्योंकि उन दिनों में एक दूसरे के सामने यही थे। झाड़ के चित्र के दोनों तरफ इसकी समझानी की लिखत भी लिखी गई ऐसे एक मास तक ये झाड़ के चित्र में सुधार होता रहा। प्यारे बाबा मुझको डायरेक्शन्स देते रहे और मैं उस अनुसार झाड़ का चित्र बनाता गया।

एक मास के बाद बाबा ने कहा कि अब इस झाड़ में सारा ज्ञान समाया हुआ है। अब मुझे ऐसे बहुत चित्र चाहिए, जो मैं सभी मंत्रियों को भेजूँ और ये मुझको जल्दी ही चाहिए। फिर जल्दी जल्दी में कह दिया कि बस मुझे दस दिन के अन्दर एक दर्जन चित्र तैयार करके दे दो। मैंने कहा हाँ बाबा बना देंगे। मैं बाबा को कभी ना तो करता ही नहीं था। बाद में मैंने सोचा कि बाबा को मैंने हाँ की है तो दस दिन के अन्दर 12 झाड़ के चित्र तैयार करने ही हैं, लेकिन अन्दर में ये भी सोच रहा था कि कैसे बनाऊँ, क्या करूँ क्योंकि एक-एक झाड़ का चित्र तैयार करने में कम से कम 4-5 दिन लग जायेंगे तो 12 चित्र तैयार करने में तो बहुत दिन लग जायेंगे। लेकिन अन्दर में दृढ़ संकल्प था कि तैयार करना ही है। ये दृढ़ संकल्प रखकर मैं मम्मा के पास गया।

मम्मा को जाकर कहा – ''मम्मा, बाबा ने ये कार्य दिया है कि दस दिन के अन्दर 12 झाड़ के चित्र बना दो, जो मंत्रियों आदि को भेजेंगे।'' मम्मा ने कहा ''हाँ भले बनाओ, तुमको इसके लिए क्या चाहिए?'' मैंने कहा ''मम्मा मदद चाहिए।'' मम्मा ने कहा ''मदद करने वाले भाई तो थोड़े ही हैं और वे सभी बाहर की खरीददारी आदि के कार्यों आदि में बिज़ी हैं, वे तो तुमको मदद कर नहीं सकेंगे। बाकी यहाँ बहनें हैं, वह डिज़ाइन आदि का कुछ भी नहीं जानती हैं, वे तुमको कैसे मदद कर सकेंगी?'' मैंने कहा

''मम्मा आप मुझको केवल 5-6 हेण्ड्स दे दीजिये, फिर मैं उनको डिज़ाइन बनाना सिखाऊंगा भी और उन्होंसे कार्य भी कराऊँगा।'' फिर तो मम्मा ने 5-6 बहनों को बुलाया और उन्होंको कहा कि विश्वरतन को इस कार्य में मदद करो। जैसे वह कहे, वैसे करते रहना। मम्मा ने एक बड़ा कमरा भी सेवा कुंज भवन में दे दिया और बड़े 3-4 टेबल भी रखवा दिये। मैंने उन 3-4 टेबल के ऊपर के लकड़ी के पाटिये निकलवा दिये और उनकी जगह मोटे शीशे रखवा दिये। उस पर एक-दो बने हुए चित्र रखे, उसके ऊपर ड्राइंग पेपर रखा। नीचे से टेबुल लेम्प रखकर लाइट ऑन कर दी तो ऊपर से पेपर पर वह डिज़ाइन दिखाई पड़ती थी। तो बहनों को ट्रेसिंग करना सिखाया। एक बहन को कहा कि ये जो सभी लाइन्स हैं, आप सिर्फ वे लाइन्स पेन्सिल से लगाती जाओ। दूसरी बहन से कहा कि जो ये पत्ते दिखाई पड़ते हैं, वे आप इस हरी स्याही से भरते जाओ। ऐसे-ऐसे सभी बहनों को कार्य दे दिया। बाकी जो चेहरे आदि थे, वे मैं बनाता गया। फॉलोवर्स के फीचर्स भी मैं बनाता गया। ऐसे रोज़ 8-10 घण्टा कार्य करते हुए दिन में 12 चित्र तैयार कर बाबा के हाथ में दे दिये। बाबा देखकर बड़े खुश हुए। मुझे इस पर शाबाशी दी। फिर तो बाबा ने कहा ''और भी चित्र बनाते जाओ।'' फिर मैं अन्य बहनों को भी ये चित्र बनाना सिखा दिया। ऐसे ही दस-बारह बहनों की 'झाड़ डिपॉर्टमेन्ट' बन गई।

थोड़े ही समय के बाद बाबा ने क्लास में मुरली चलाते समय ये कहा ''जैसे झाड़ में ये समझानी दी जाती है कि ये सृष्टि कैसे आदि से अन्त तक चलती है अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग चलते हैं और फिर रिपीट होते हैं, ऐसे ही ये सारा ज्ञान चक्र के रूप में समझाना चाहिए।'' फिर बाबा ने कहा कि मैं आप सभी बच्चों को लेख (Essay) देता हूँ। आप सभी ऐसे चक्र की डिज़ाइन बनाकर कल यहाँ ले आना, जिसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग युग दिखाना और फिर रिपीट कैसे होते हैं वह भी दिखाना। फिर तो सभी भाई बहनें, अपनी-अपनी रीति से डिज़ाइन बनाकर दूसरे दिन

क्लास में ले आये। मैंने जो डिज़ाइन बनाई थी, उसमें चक्र उल्टे तर
अर्थात् बाई तरफ घूमता हुआ दिखाया था। चन्द्रहास भाई ने मेरी जैसी
डिज़ाइन बनाई लेकिन चक्र राइट की तरफ घूमता हुआ दिखाया। बाबा
सभी की डिज़ाइन देखी और कहा कि दो डिज़ाइन ठीक बनी हुई हैं, ए
चन्द्रहास बच्चे की और दूसरी विश्वरतन बच्चे की। लेकिन विश्वरतन
डिज़ाइन में चक्र उल्टा चल रहा है, इसलिए वह डिज़ाइन ठीक नहीं
बाकी चन्द्रहास की डिज़ाइन भी ठीक है और चक्र भी सुल्टा चलता हु
दिखाया है, इसलिए चन्द्रहास पास हो गया है।

फिर तो बाबा ने मुझे कहा कि अब तुम इस चन्द्रहास की डिज़ाइन
ठीक रीति से बनाकर रंग आदि लगाकर अर्थात् गोल्डन, सिल्वर, कॉपर
आइरन आदि सभी युगों में ऐसे रंग देकर अच्छा चित्र बनाओ। उस
लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम के चित्र भी बनाओ और फिर धर्म पिताओं
चित्र भी दिखाओ। मतलब ऐसे सारी डिज़ाइन ठीक रीति से बनाओ। फि
तो मैंने वह चक्र का डिज़ाइन बनाना शुरू किया। उसमें भी बाबा डायरेक्श
देते रहे, रिफ़ाइन कराते रहे। उसमें धर्मशास्त्र गीता, बाइबिल आदि भ
दिखाया। संगमयुग भी दिखाया गया। अन्त में आत्मायें कैसे उड़ती
अपने घर वापस जा रही हैं, फिर चक्र कैसे रिपीट होता है। ये सब राज़ उ
चक्र के रूप में दिखाये गये। ऐसे चक्र की डिज़ाइन भी थोड़े ही दिनों
अच्छी तैयार हो गई।

कुछ समय के बाद बाबा ने एक किताब प्रेस में छपाने के लिए भा
विश्वकिशोर को आदेश दिया था। उसमें कई ज्ञान की पाइन्ट्स थी औ
उसमें झाड़ का चित्र और गोले का चित्र डालना था। झाड़ का चित्र तो प्रे
वालों ने डाल दिया परन्तु चक्र की डिज़ाइन का ब्लॉक बनाकर उन
डालना था। तो प्रेस वालों ने इस चक्र की डिज़ाइन मांगी। बाबा ने मु
बुलाया और कहा "प्रेस में जो किताब छप रहा है, उसमें चक्र की डिज़ा
का ब्लॉक चाहिए। इसलिए प्रेस वाले कहते हैं कि बटर पेपर पर एक

डिज़ाइन (अन्दाज एक फुट व्यास की) बनानी है, जिसमें अक्षर सफेद और
बैकग्राउण्ड काला हो। ऐसी डिज़ाइन बनानी है। तो अब तुम ये डिज़ाइन
जल्दी ही बनाकर दो। इस डिज़ाइन के कारण प्रेस का कार्य रुका हुआ है।
इसलिए सोमवार तक ये डिज़ाइन बनाकर दो।" मैंने कहा "हाँ बाबा,

बनाकर दे देंगे।''

मैंने बाद में सोचा कि ये बटर पेपर पर डिज़ाइन बनाना और अक्षरों के बीच में काली स्याही पतली निब से भरना, जिससे अक्षर सफेद दिखाई पड़ें, ये महीन कार्य है। डिज़ाइन भी अच्छी बनानी है क्योंकि इसका ब्लॉक बनेगा। हमेशा के लिए वह ब्लॉक कई कार्यों में प्रयोग होगा। इसलिए अच्छी चीज़ बनानी है। अब अकेला ये कार्य करूँगा तो हफ्ता लग जायेगा। लेकिन बाबा ने कहा है कि सोमवार तक बनाकर देना है, उसमें तो सिर्फ तीन ही दिन हैं। तो फिर मम्मा के पास गया। मम्मा को जाकर कहा ''मम्मा, बाबा ने ये चक्र की डिज़ाइन बनाने के लिए कहा है और वह तीन दिन में पूरी करनी है।'' मम्मा ने कहा ''भले बनाओ, फिर तुमको क्या चाहिए?'' मैंने कहा ''मम्मा मदद चाहिए, अकेला करूँगा तो एक हफ्ता लग जायेगा।'' मम्मा ने कहा ''कितने हैण्ड्स चाहिएं?'' मैंने कहा ''मम्मा डिज़ाइन तो केवल एक फुट व्यास की बनेगी। उसके एक साइड में तो मैं बैठूँगा बाकी सामने दो बहनें बैठ सकेंगी। अधिक तो बैठ भी नहीं सकेंगी। इसलिए सिर्फ दो हेण्ड्स चाहिए।'' मम्मा ने कहा ''झाड़ डिपॉर्टमेन्ट में तो तुम जानते हो कि किसका हाथ डिज़ाइन बनाने में अच्छा है, उनका तुम नाम बताओ तो मैं उनको बुलाकर मदद में दे दूँ।'' तो फिर मैंने दो नाम बताये। एक बृजशान्ता बहन और दूसरी लच्छू बहन। मम्मा ने उनको बुलाया और कहा कि विश्वरतन को इस कार्य में मदद करो। फिर तो मैंने चक्र की डिज़ाइन बनाना शुरू किया। पहले मैंने अकेले सारे चक्र की डिज़ाइन पेन्सिल से बनाई, जिसमें सारा दिन और सारी रात लग गई। सारी रात बिल्कुल नींद नहीं की। फिर दूसरे दिन हम तीनों ही बैठे। मैंने अन्य दो दिन और दो रात्रि लगाई और बहनों ने भी दो दिन और दो रात्रि बिल्कुल नींद नहीं की। चौथे दिन सवेरे चार बजे ये कार्य पूरा हुआ और हम सभी स्नान आदि करके क्लास में बैठे। बाबा को याद था कि मैंने विश्व रतन को ये चक्र की डिज़ाइन बनाने का कार्य दिया है। आज सोमवार है, आज ये डिज़ाइन

पूरी करके देनी है। बाबा अन्दर में सोचने लगे कि ये डिज़ाइन महीन है, इसने पूरी तो नहीं की होगी, फिर भी मैं पूछूँगा तो ज़रा ज़ल्दी करेगा। एक दिन और लगाकर भी पूरी कर देगा। तो बाबा संदली पर बैठते ही पूछे कि विश्वरतन क्लास में बैठा है? मैंने कहा ''हाँ बाबा मैं यहाँ बैठा हूँ।'' बाबा ने कहा ''मैंने तुमको चक्र की डिज़ाइन बनाने के लिए कहा था, जो आज सोमवार के दिन तैयार करके देनी थी, वह तैयार की है?'' मैंने कहा ''हाँ बाबा, तैयार हो गई है।'' बाबा ने फिर पूछा ''क्या बिल्कुल तैयार हो गई?'' मैंने कहा ''हाँ बाबा, पूरी तैयार हो गयी।'' बाबा ने कहा ''तैयार हो गई! हो गई है तो ले आओ।'' मैं उसी समय उठकर जाकर ले आया और वह डिज़ाइन बाबा के हाथ में दे दी। बाबा डिज़ाइन को देखता रहा, देखता रहा। बाद में कहा ''डिज़ाइन तो बिल्कुल परफेक्ट है, बहुत अच्छी बनाई है। लेकिन ये बताओ कि ये डिज़ाइन इतनी जल्दी कैसे बनाई?'' मैंने कहा ''बाबा, ये डिज़ाइन मैंने अकेले ने नहीं बनाई है, इसमें दो बहनें भी मददगार हैं।'' बाबा ने कहा ''कौन?'' मैंने नाम बताये ''बृजशान्ता बहन और लच्छू बहन।'' बाबा फिर भी उस डिज़ाइन को देखता रहा। फिर कहा ''आप तीनों ने भी तीन दिन के अन्दर डिज़ाइन पूरी कर ली, ये भी अच्छी बात है।'' फिर मैंने बाबा को सुनाया ''बाबा इस डिज़ाइन बनाने में मेरे तीन दिन और तीन रात्रि लगी हैं और दोनों बहनों ने लगातार दो दिन और दो रात्रि लगाकर मदद की है, और आज सवेरे 4 बजे डिज़ाइन पूरी हुई, बाद में हम स्नान आदि करके यहाँ क्लास में आकर बैठे हैं।'' बाबा ने कहा ''शाबाश, आज्ञाकारी बच्चा इसको कहते हैं, बाबा के मुख से जो निकला, जिस प्रकार की आज्ञा अथवा श्रीमत मिली, इस बच्चे ने वह श्रीमत पालन करके दिखाई।'' फिर तो बाबा ने सारी मुरली ही इस पर चलाई। आज्ञाकारी, वफादार, फ़रमानबरदार, ईमानदार बच्चा किसको कहते हैं, वह कैसे हर श्रीमत को पालन करते हुए बापदादा के दिल तख्तनशीन होता है और वही कैसे राज तख्त पर बैठता है। सारी मुरली ही उस बात पर चलाई।

माऊण्ट आबू की ओर प्रस्थान

1950 की 30 अप्रैल को ब्राह्मण परिवार के हम सभी सदस्य, मम्मा बाबा, भाई-बहनों ने पाकिस्तान से भारत में जाने का निश्चित किया। सभी ने अपने कपड़े बांध कर बहुत बड़ी पेटियों में इकट्ठे ही रखे। सिर्फ एक दो सेट कपड़ों का अपने साथ थैले में डालकर लिया और जो छोटी-मोटी आवश्यकता की चीज़ें थी, वे भी थैले में डाल ली। अपनी-अपनी खटिया भी निवाड़ आदि खोलकर निवाड़ से बाँध कर तैयार करके रखी। शीशे की अलमारियाँ भी ले जाने के लिए तैयार करके रखीं। ऐसे बहुत सा सामान तैयार कर ऊंट गाड़ियों में रखकर कराची बन्दरगाह पर ले आये। सभी अपनी बसों और कारों आदि में कराची बन्दरगाह के शेड में आ गये। लेकिन भाऊ विश्वकिशोर बाजार में गया हुआ था। कुछ दिन पहले झाड़ की डिज़ाइन प्रेस में छपाने के लिए दी हुई थी। एक हज़ार चित्र छपना था। प्रेस वालों को ये डिज़ाइन छापकर पहले ही देना था लेकिन उन्होंने देरी कर दी। अब ये चित्र भी साथ में ज़रूर लेकर जाने थे। वे जब चित्र छप गये तब पैकिंग आदि कराकर भाऊ विश्वकिशोर बहुत देर से पहुँचा। यहाँ बन्दरगाह पर सामान उठाने वाले मज़दूरों ने आपस में राय करके सामान उठाने की मज़दूरी दस गुणा बताई। उन्होंने सोचा कि इतनी बड़ी-बड़ी पेटियाँ और बड़ी-बड़ी शीशे की अलमारियाँ, बड़े-बड़े नग अपने हाथों से उठा नहीं सकेंगे। इन्होंको स्टीमर में जाना भी ज़रूर है तो हमको दस गुणा मज़दूरी भी ज़रूर दे देंगे। कितना भी समझाने से वे मज़दूर अपनी मज़दूरी पर पक्के रहे, ज़रा भी कम नहीं किया। इधर स्टीमर के रवाना होने का समय भी नज़दीक आ पहुँचा। हम लोगों ने स्टीमर वालों को निवेदन किया कि थोड़ा ठहरो, जब तक कृपलानी जी (भाऊ विश्वकिशोर) बाजार से आये। क्योंकि भाऊ विश्वकिशोर ने ही स्टीमर वालों से ये सारा प्रबन्ध किया था। जब देखा कि देरी होती जाती है और सामान भी बहुत था, उसको चढ़ाने में भी समय

लग जायेगा। तब बाबा ने कुमार भाइयों को कहा कि आप सब मिलकर एक-एक बड़ी पेटी को 6-8 भाई मिलकर उठाकर स्टीमर में पहुँचा दो। फिर तो सभी भाई मिलकर सामान को उठाकर स्टीमर में ले जाते रहे। बहनें भी छोटे-मोटे सामान उठाने में मदद करती रही। जब मजदूर लोगों ने देखा कि ये तो बड़े-बड़े सामान भी अपने कंधे पर डालकर लेते जा रहे हैं, हमारी तो कमाई ही चली जायेगी। तो फिर हमसे प्रार्थना करने लगे कि अच्छा हमको ये चार्ज (दस गुणा कम) देना, हम स्टीमर में ले जाकर रख देंगे। इतने में भाऊ विश्वकिशोर भी बन्दरगाह के शेड में पहुँच गया। उसने देखा कि हमारे भाई-बहनें सामान उठा रहे हैं तो मजदूर लोगों से बात करके बहुत थोड़ी चार्ज पर सामान उठाने की छुट्टी दे दी। फिर तो जल्दी-जल्दी सामान चढ़ गया और हम सभी स्टीमर में अपनी-अपनी सीट पर बैठ गये। स्टीमर चल दिया लेकिन स्टीमर चलने में दो घण्टा देरी हो गई।

जामनगर (द्वारका) के पास ओखा बन्दरगाह है, वहाँ पहुँचना था। वहाँ से ट्रेन में आना था। कराची से 2 घण्टा देरी से चलने के कारण ओखा बन्दरगाह पर भी हमारा स्टीमर 2 घण्टा देरी से पहुँचा, जिस कारण एक अन्य स्टीमर जो हमारे स्टीमर के बाद आने वाला था, वह हमारे स्टीमर से पहले ही पहुँच गया। वह स्टीमर किनारे पर खड़ा था। दूसरे स्टीमर को किनारे पर खड़े होने की जगह नहीं थी, जिस कारण हमारे स्टीमर को किनारे से थोड़ा दूर बीच सागर में ही खड़ा होना पड़ा जब तक वह पहले वाला स्टीमर हटे। यहाँ भी देरी होती गई और ट्रेन के छूटने का भी समय आ गया। ट्रेन की कुछ बोगियाँ बुक की हुई थी। फिर तो छोटी-छोटी नाव बुक की, जिनमें छोटा-छोटा सामान लेकर किनारे पर आये और गाड़ी में बैठते गये। ट्रेन वालों को भी निवेदन किया कि इस कारण हमको देरी हो गई है, अब सभी नाव में आ रहे हैं, आप थोड़ा ट्रेन को रोक दो। ट्रेन को भी देरी होती गई, अन्य यात्री जो पहले से बैठे हुए थे, उनको भी देरी हो रही थी, इसलिए वे चिल्लाने लगे कि हमारा आगे चलकर दूसरी गाड़ी से

जो कनेक्शन है, वह हमारी गाड़ी छूट जायेगी, इसलिए गाड़ी को जल्दी चलाओ। काफी देरी हो गई थी। आखिर में हमारे सभी भाई-बहनें तो ट्रेन में बैठ ही गये थे और छोटा-छोटा सामान भी चढ़ गया था। बाकी बड़ा-बड़ा सामान नाव से किनारे पर नहीं आ सका। तो बाबा ने कहा ''यहाँ चार भाई-बहनें रुक जाओ, वे 1-2 दिन में जब मौका मिले तब लेकर आ जाना और ट्रेन को चलने दो।'' फिर तो ट्रेन वालों को कहा कि भले आप ट्रेन को चलाओ। ट्रेन तो चल पड़ी। बाकी ओखा में हम चार भाई-बहनें रुक गये, जिनमें भाऊ विश्वकिशोर, मैं (विश्वरतन), दादी आलराउण्डर और जसोती दादी (शान्तामणि दादी की भाभी)। वहाँ स्टीमर से सारा सामान स्टेशन पर गोदाम के आगे पटरी के पास रखवा दिया। वहाँ एक होटल में दो कमरे लेकर रहने लगे। वहाँ जो अपना सामान रखा था, उसकी देखभाल के लिए मैं रात को सामान के पास जाकर सो जाता था। वहाँ से सामान ले जाने के लिए ओखा में कोई बोगी नहीं थी, जिस कारण दूसरे दिन नहीं निकल सके। वहाँ के स्टेशन मास्टर ने अहमदाबाद से 3-4 बोगियाँ ओखा में भेजने के लिए सूचना दे दी। बोगियाँ आने में तीन दिन लग गये। मैं रोज़ रात को सामान पर पहरा देता रहा। इधर बाबा-मम्मा और सभी भाई-बहनें डायरेक्ट ट्रेन में पहली मई को ही आबू रोड पहुँच गये और ट्रक आदि में सामान चढ़ाकर और स्वयं बसों में बैठकर आबू में बृज कोठी में पहुँच गये। उनके पास अधिक कपड़े आदि तो थे ही नहीं, वे तो बड़ी पेटियों में थे, जो ओखा में ही रुक गयी। एक-एक सेट जो हाथ में थैले में उठाया था, वह पहनकर दूसरा जो पहना हुआ था, वह धुलाई कर सुखा देते थे। ऐसे चलाते रहे। चार दिन के बाद हमको बोगियाँ मिलीं, जिनमें बड़े-बड़े सामान सब डालकर ट्रेन से निकले और हम भी ट्रेन से आबूरोड पहुँचे। फिर ट्रकों में सामान लेकर ऊपर माउण्ट आबू पहुँचे। ऐसे हम चार भाई बहनें माउण्ट आबू में चार मई को पहुँचे।

चैप्टर 5

आबू में बृजकोठी में बाबा के अंग-संग रहने का सौभाग्य

माउण्ट आबू में जब हम सभी आये, तब सभी एक ही बृजकोठी (राजा ब्रजेन्द्र सिंह, भरतपुर का बंगला) में रहने लगे। कराची में तो हमारे 7-8 बंगले थे। आरम्भ में तो 350 के लगभग भाई-बहनें थे। पाकिस्तान होने के बाद धीरे-धीरे कोई कोई अपने सम्बन्धियों के पास बम्बई में चले आये। माउण्ट आबू में आने के बाद फिर अन्य और भी अपने सम्बन्धियों के पास चले गये। बाकी हम 200 के लगभग रह गये, जो बृजकोठी में रहने लगे। बाबा भी इसी बृजकोठी में अलग कमरे में रहते थे। एक ही बंगले में बाबा और बच्चों का साथ में रहना, सभी बच्चों को सारा दिन बाबा के साथ का अच्छा अनुभव होता रहा। बाबा रोज़ सवेरे क्लास में मुरली चलाने आते थे। फिर क्लास के बाद बाबा के साथ 50-60 भाई-बहनें घूमने जाते थे। बाबा कहते थे ''जो भी घूमने चले, वह शर्ट एण्ड शॉर्ट पहन कर चले और स्पोर्ट्स शू पहन कर चले।'' चप्पल पहन कर चलने की आज्ञा नहीं थी। इसलिए सभी भाई-बहनें इसी ड्रेस में चलते थे। ड्रेस भी युनीफार्म बनाई थी। शर्ट सफेद और शॉर्ट नीली थी। सभी इस युनिफॉर्म में चलते थे। बाबा स्वयं भी शर्ट एण्ड शॉर्ट पहन कर ही चलता था, लेकिन बाबा की शॉर्ट सफेद थी। उन दिनों में माउण्ट आबू में ये बृजकोठी शहर से थोड़ा दूर, लास्ट बंगला था यानी इस बंगले के बाद में आबादी नहीं थी। जो रास्ता नीचे आबू रोड जाता है, वही रोड है। हम सभी घूमने शहर की तरफ नहीं जाते थे, लेकिन दूसरी तरफ पहाड़ों की तरफ जाते थे। कभी कोई पहाड़ पर, कभी कोई पहाड़ पर। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर भी चढ़ जाते थे। सवेरे बाबा तेज चलता था। अन्य भाई-बहनों को कब कब दौड़ कर चलना पड़ता था। शाम

को भी बाबा और हम भाई बहनें घूमने जाते थे। लेकिन शाम को शर्ट एण्ड शॉर्ट पहन कर नहीं जाते थे। साधारण ड्रेस में जाते थे और तेज नहीं चलते थे लेकिन धीरे धीरे चलते थे। पहाड़ों पर नहीं जाकर, सीधे रास्ते पर जाते थे। टोल टैक्स तक जाकर वापस आ जाते थे। बाकी सवेरे तो बाबा हमको कभी किस पहाड़ी, कभी किस पहाड़ी पर ले जाते थे। कभी वाटर वर्क्स की पहाड़ी पर, कभी अपर गोदरा डेम पर भी जाते थे। कभी अच्छी सी पहाड़ी पर बैठकर बाबा क्लास भी कराते थे।

एक पहाड़ी जो समतल थी, उस पर कभी कभी फुटबॉल, क्रिकेट आदि भी खेलते थे। ऐसे बाबा के साथ सभी बहुत खुशी का अनुभव करते थे। जब किसी नये पहाड़ पर जाते थे, तब बाबा मुझे कहते थे कि तुम आगे-आगे चलो, गाईड बनो, रास्ता निकालो कि कहाँ से रास्ता ऊंची चोटी पर जाता है। तो मैं आगे-आगे चलकर रास्ता निकालता था और फिर सब मेरे पीछे आते थे। फिर लौटते समय बाबा मुझे कहता था - अब गार्ड बनो, सभी के पीछे अन्त में आओ, तो मेरी गइयाँ (मातायें-बहनें) कहाँ पीछे पहाड़ों में रह न जायें, गुम न हो जायें। तो फिर मैं सभी के पीछे-पीछे आता था। ऐसे हम बाबा के साथ सवेरे सैर करते माउण्ट आबू की सभी ऊँची ऊंची पहाड़ियों पर गये थे। वहाँ पर कभी कभी चेरी-करौंदा, केरी (कच्चे आम) झाड़ों से तोड़कर खाते भी थे और साथ में भी ले आते थे, घर में बैठे भाई-बहनों को खिलाने के लिए।

ऐसे रोज़ एक-डेढ़ घण्टा या कभी दो घण्टे बाद लौटकर नौ-साढ़े नौ बजे नाश्ता करते थे। नाश्ता करने के बाद बाबा मुझे कहते थे - ''बच्चू, अब ले आओ अपनी सेना (ग्रुप) को।'' मैं जैसे कि मानीटर था। मैं जाकर इशारा करता था कि चलो अब बाबा बुलाता है। तो 20-25 भाई-बहनों की पार्टी उसी शर्ट एण्ड शॉर्ट की ड्रेस में बाहर आ जाते थे। बाबा रोज़ कोई न कोई कार्य देता था कि आज ये कार्य करना है। फिर सभी मिलकर वह

कार्य करते थे। ऐसे कभी बाथरूम बाहर के कम्पाउण्ड में बनाते थे। कोई ईंट, कोई सीमेन्ट ले आते थे, कोई मिस्त्री बनकर दीवार उठाता था। कोई फिर बॉथरूम के दरवाजे टिन शीट के बनाते थे। ऐसे बॉथरूम आदि तैयार करते थे। कभी बाबा हमारे से रोड आदि बनवाता था। हर वर्ष में बरसात के कारण रोड (जो रोड मेन रोड से बंगले तक जाता था) खराब हो जाता था। तो वह रोड हम ही हर वर्ष अपने हाथों से बनाते थे। बाबा भी उसी ड्रेस में वहाँ खड़ा होकर देखभाल करता था। ऐसे सारा दिन ये कार्य-पार्टी (सेना) कोई न कोई कार्य करती थी। कार्य करते बाबा को भी सदा साथ रखते अन्दर ही अन्दर खुशी में जैसे कि नाचते थे।

आबू से बाहर बहनों का ईश्वरीय सेवा पर जाना

एक डेढ़-वर्ष के बाद यहाँ एकॉनामी का पार्ट शुरू हो गया। तो बाबा ने बहनों को कहा कि अब जाओ ईश्वरीय सेवा पर, यहाँ बैठ कर क्या करोगी! इनसे तो बाहर जाकर लोगों का कल्याण करो। ये अविनाशी ज्ञान सुनाकर उन्होंका भाग्य बनाओ। फिर तो बहनें धीरे-धीरे ईश्वरीय सेवा पर बाहर निकलीं। पहले देहली में जाकर ईश्वरीय सेवा चालू की। धीरे-धीरे सेवा बढ़ती गई, पंजाब और उत्तर प्रदेश की तरफ भी सेवा चालू हो गई। सेवा बढ़ने के कारण अन्य बहनों को बुलाना शुरू हो गया। तो बाबा बहनों को बाहर भेजता गया। एक दिन मिट्ठू बहन जो बाबा की डिस्पेन्सरी सम्भालती थी, उनको भी बाबा ने कहा ''तुमको भी ईश्वरीय सेवा पर बुला रहे हैं, तुम भी जाओ ईश्वरीय सेवा पर। मैं तुम्हारी ये डिस्पेन्सरी सम्भालूँगा।'' फिर तो बाबा ने मुझे बुलाया और कहा ''बच्चू, ये डिस्पेन्सरी तुम सम्भाल लेना। ये (मिट्ठू बहन) जा रही है सर्विस पर।'' मैंने कहा कि हाँ बाबा, सम्भाल लूंगा। फिर तो मिट्ठू बहन ने मुझे डिस्पेन्सरी में जाकर सभी दवाइयाँ दिखाई और बताया कि जिसको बुखार हो, उसे ये गोली देना। जिसको सिर दर्द हो, उसे ये गोली देना। जिसको पेट में दर्द हो, उसे ये गोली देना। ऐसे

सभी दवाइयाँ बताई। इन्जेक्शन कैसे सिरंज में भरा जाता है और कैसे फिर इन्जेक्शन लगाया जाता है, वह भी तरीका बताया। फिर तो मिट्ठू बहन के सामने ही एक-दो को मैंने इन्जेक्शन लगाया। ऐसे सीख गया।

मिट्ठू बहन के जाने के बाद मैंने दवाइयाँ देना आरम्भ कर दिया। जो भी पेशेन्ट आता था, उसको प्यार से पूछता था कि बहन जी, भाई जी बताइये क्या तकलीफ है? वे बीमारी बताते थे। मैं उनको कहता था "बस, अच्छा ये गोली ले लो, शाम तक ठीक हो जायेंगे।" सचमुच बाबा की ऐसी मदद मिलती रही, जो शाम तक वह पेशेन्ट ठीक हो जाता था। सवेरे मैं उनसे पूछता था - कैसी तबियत है? कहते थे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं पूछता था कि और कुछ चाहिए? वे कहते थे "नहीं, अब जरूरत नहीं है।" ऐसे डिस्पेन्सरी को चलाता रहा। फिर ऐसा कोई पेशेन्ट आता था, जिसको कोई बड़ी बीमारी थी तो उसको सरकारी अस्पताल में ले जाता था और वहाँ के डाक्टर को दिखलाकर उनसे दवाई लिखवाकर बाज़ार से वे दवाइयाँ खरीद कर उनको दे देता था। तो वह पेशेन्ट सन्तुष्ट रहता था। इस तरह मैं भी डाक्टरों के कनेक्शन में आते-आते डाक्टर बन गया। कई दवाइयाँ बुद्धि में रहती थीं और हज़ारों इन्जेक्शन लगाये। इस प्रकार लगभग 25 वर्ष तक यज्ञ का डाक्टर बनकर रहा।

माउण्ट आबू में आने के बाद कई भाई-बहनें अपनी तबियत आदि के कारण या ईश्वरीय सेवा अर्थ बम्बई की तरफ़ चले गये और वहाँ ही अपने मित्र-सम्बन्धियों के पास रहना आरम्भ कर दिया। यहाँ माउण्ट आबू में वापस ही नहीं आये। ऐसे जो भाई कारपेन्टरी डिपॉर्टमेन्ट में थे और बम्बई चले गये तो बाबा ने मुझे कहा – "ये डिपॉर्टमेन्ट भी तुम सम्भालो।" मैं तो सदैव हाँ जी, हाँ जी ही करता था। कोई बिजली डिपॉर्टमेन्ट वाला चला गया तो भी बाबा ने कहा कि ये भी तुम सम्भालो। ऐसे अनेक कार्य मिलते रहे। रात को पहरा भी देता था। आधा समय मैं पहरा देता था और आधा

भाग सरदार सोहन सिंह (जो बाद में पंजाब से आकर समर्पित हुआ था) पहरा देते थे। यहाँ माउण्ट आबू में भी सवेरे स्नान का गर्म पानी करने की ड्युटी भी करता रहा। ऐसे अनेक प्रकार के कार्य मिलते रहे और मैं सदैव हाँ जी, हाँ जी का पार्ट बजाते हुए करता रहा। दिन में आराम नहीं करता था। प्यारे बाबा का जो मेरे में विश्वास हो गया कि इस बच्चे (मुझे) को जो कुछ कहता हूँ, तो सदैव हाँ जी करता है, कभी ना नहीं करता है और वह कार्य भी अपनी बुद्धि अनुसार ठीक ही करता है। सच्चाई-सफाई से भी करता है, आज्ञाकारी-ईमानदार बच्चा है। इसीलिए जो भी नया कार्य होता था तो मुझे ही बुला कर कहता था कि ये कार्य तुमको करना है। मुझे कार्य देने के बाद बाबा खुद निश्चिन्त हो जाते थे। इसके साथ चित्र बनाने का कार्य भी करता रहा। रोज़ पोस्ट डालकर आना, बाजार से खरीददारी करके आना, आदि आदि ड्युटी भी करता रहा।

यहाँ बृज कोठी में घर के कमरों आदि की सफाई भी अपने ही भाई-बहनें करते थे। एक बाहर की माता कमरों के बाहर की सफाई आदि करने के लिए रखी हुई थी और एक नौकर भाई भण्डारे के बड़े-बड़े बर्तन सफाई करने के लिए रखा हुआ था। एक दिन वह नौकर बीमार हो गया, आना ही बन्द कर दिया। बाबा ने मुझे बुलाया और कहा "बच्चू! ये भण्डारे के बर्तन तुम ही साफ कर देना।" मैंने कहा "हाँ बाबा, मैं साफ कर दूँगा।" मुझे बड़ी खुशी हुई क्योंकि बाबा का मेरे में कितना विश्वास है। बाबा ज़रूर दिल में समझता होगा कि ऐसे कार्य के लिए इस बच्चे (विश्वरतन) को कहूँगा तो इसको कोई अन्दर में फीलिंग नहीं आयेगी, खुशी-खुशी से अपनी दिल लगाकर कार्य करेगा। मेरे से सच पूछो तो उस दिन मुझे बहुत खुशी हुई। अन्दर में सोचता ही रहा कि किसने मुझे ये कार्य दिया है, स्वयं भगवान ने! कितना मैं भाग्यशाली हूँ, जो स्वयं बापदादा का इतना मेरे में विश्वास है! बस, यही सोचते सारा दिन बापदादा की ही याद आती रही। ये तो

मेरा शुरू से ही स्वभाव था कि हर कार्य में टाइम अधिक लगाता था, धीरे से कार्य करता था लेकिन कार्य बहुत अच्छी रीति से सम्पन्न करता था। ये बर्तन साफ करने का कार्य भी हाथों से अच्छी रीति होता रहा लेकिन बुद्धि फ्री थी, क्योंकि बर्तन साफ करने में बुद्धि इतनी नहीं लगानी पड़ती थी इसलिए बुद्धि से बापदादा को बड़ी अच्छी रीति से याद करते रहे और बापदादा को अपने साथ, अपने सामने देखता रहा। जैसे कहावत है "हाथ कार्य में और दिल यार में" अर्थात् हाथ से कार्य करे और दिल बाबा की तरफ लगी रहे। सारा दिन इस ड्युटी को बजाते हुए जैसेकि एकान्त में योग में ही बैठा रहा। बड़ा अच्छा योग का अनुभव, बापदादा के साथ का अनुभव रहा। ऐसे एक मास वह नौकर नहीं आया और मैं ये एक मास तक इस ड्युटी पर रहा। सच तो यही है कि आज दिन तक जो भी ड्युटी बजाई है और अब तक बजा रहा हूँ, उन सब में सबसे अच्छा अनुभव इसी ड्युटी में रहा और बहुत अच्छी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति हुई। वहाँ किचन के पीछे की ओर एकान्त में ही बर्तन सफाई करने का था, इसलिए वहाँ किसी का आना जाना नहीं होता था इसलिए एकान्त में बर्तन साफ करता रहा और बापदादा को याद करता रहा।

दिल्ली में सेवा के लिये जाना

थोड़े समय के बाद दिल्ली में ईश्वरीय सेवा बढ़ गई, वहाँ बहनों ने कमला नगर में एक फ्लेट किराये पर लिया और वहाँ पर सेवा करने लगी। बड़ी दीदी मनमोहिनी जी भी उन दिनों वहाँ ही थी। जैसे-जैसे सेवा और बढ़ती गई तो बहनों को बाज़ार से सामान आदि खरीद करने, स्थूल सेवा, कहीं संदेश देने आदि के लिए एक भाई को साथी बनाने की आवश्यकता हुई। तो बाबा ने मुझे बुलाया और कहा "दिल्ली में एक भाई की बहनों को सेवा में मदद करने के लिए चाहिए, इसलिए तुम दिल्ली में जाओ और उनको मदद करो।" फिर मैं दिल्ली में गया, वहाँ बाहर जाना-आना, सेवा

करना शुरू कर दिया। दिल्ली में उस समय एक ही कमला नगर का सेन्टर था, वहां जाकर रहा। वहां साईकल पर सब्जी मार्केट में जाकर जब्जियां खरीदकर ले आना, अन्य भी चीज़ें बाजार से खरीद कर लाना शुरु कर दिया। हमारे सेन्टर पर जो बाहर के जिज्ञासु ज्ञान सुनने के लिऐ आते थे, उनको सप्ताह का कोर्स भी कराता था। ऐसे बहनों को हर प्रकार की मदद करता रहा। वहां एक भाई अविनाश चन्द्र सेन्टर पर आता रहा। उससे मेरी अच्छी पहचान हो गई। फिर कभी-कभी उनको साथ में लेकर साईकल पर गाँव में जाते थे और खेतों में जाकर सब्जियां भी खरीद कर ले आते थे, और कभी गुड़ बनाने की फेक्ट्री से गुड़ खरीद कर बोरीयां भर कर ले आते थे जो माउण्ट आबू भेज देते थे।

धीरे-धीरे ईश्वरीय सेवा दिल्ली में दूर-दूर तक शुरु हो गई। ऐसे विनय नगर (नई दिल्ली) में भी सेन्टर बन गया। तो मैं कभी-कभी साईकल पर वहां भी चक्कर लगाता था और कोई भी मेसेज या कार्य बहनों का होता था तो वहां जाकर पहुंचाता था। पोस्ट आफिस और रेलवे आदि के कई कार्य करता रहा। दिल्ली में मैं अकेला ही भाई था तो कई कार्य बाहर के करता रहा।

आगे चलकर फिर ईश्वरीय सेवा अन्य शहरों में भी शुरु हो गई। पहले आस-पास के शहरों में भी शुरु हो गई। मेरठ, हापूर, मुरादाबाद, पानीपत, सोनीपत, करनाल आदि शहरों में शुरु हो गई। फिर पंजाब के शहरों में जैसे कि अमृतसर, अम्बाला और जलन्धर आदि में भी शुरु हो गई। धीरे-धीरे सारे पंजाब के मुख्य शहरों में ईश्वरीय सेवा फैलती गई। उसके बाद फिर उत्तर प्रदेश के शहरों में शुरु हो गई। पहले लखनऊ और फिर कानपुर में शुरु हो गई। फिर कानपुर के कनेक्शन से उत्तर प्रदेश के कई शहरों में सेवा फैलती गई। मैं काफी समय तक दिल्ली कमला नगर सेन्टर में ही रहता था, परन्तु इन स्थानों में आता जाता रहता था। उन दिनों

में बाबा ने मुझे त्रिमूर्ति की डिज़ाइन बनाने के लिए कहा था, जो मैंने
बनाकर बाबा के पास फाइनल कराने के लिए माउण्ट आबू में भेजी। प
बाबा ने वह डिज़ाइन पास कर दी और मुझे कहा कि अब तुम इस
फाइनल रंग आदि लगाकर अच्छी तरह से बनाओ। मैंने डिज़ाइन तो बना
लेकिन मैंने सुना कि मेरठ में बहुत अच्छे चित्रकार ज्ञान में आ रहे हैं।
मैं स्वयं ही मेरठ में गया और उन चित्रकारों से मिला। उनमें से एक सू
भाई और उनके दो लौकिक भाई बड़े अच्छे चित्रकार थे और कोई
ईश्वरीय सेवा करने के इच्छुक थे। मैंने उस सूर्य भाई को वह अपनी बनी
त्रिमूर्ति की डिज़ाइन दिखाई और उसको कहा कि आप एक थोड़ी
डिज़ाइन बनाकर दो। सूर्य चित्रकार ने बहुत अच्छी डिज़ाइन बनाई,
बाबा के फीचर्स भी बहुत अच्छे बनाये। सूर्य भाई के जो दो लौकिक
थे, वे हर प्रकार के अक्षर लिखने में होशियार थे। तो त्रिमूर्ति के ऊपर
नीचे जो अक्षर लिखने थे, वे उनसे लिखवाये। वह डिज़ाइन मैंने बाबा
माउण्ट आबू में भेजा। बाबा वह डिज़ाइन देखकर बहुत खुश हुए।
और भी चित्र सूर्य आर्टिस्ट से बनवाने के लिए बाबा ने कहा। ऐसे इस
आर्टिस्ट और उनके दो भाइयों के सहयोग से चित्र बनाने की सेवा चालू
गई। आगे चलकर माउण्ट आबू में ही इस पोखरान हाउस (पाण्डव भव
में रहकर बड़े-बड़े त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ के चित्र बनाते रहे। छोटे
(हिस्ट्री हॉल) में जो बड़े-बड़े –त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ के चित्र रखे
वे सूर्य भाई और उनके दो भाइयों के ही बनाये हुए हैं।

दिल्ली में भिन्न भिन्न प्रकार की बाहर की सेवा में लग गया। ईश्वरी
सेवा तो बढ़ती ही गई। पंजाब में भी सेन्टर्स खुलते गये। अमृतसर में भी
ईश्वरीय सेवा चालू हो गई। वहाँ एक धर्मशाला में रहते थे और ईश्वरीय
करते थे। वहाँ जगदीश भाई (दिल्ली वाले भ्राता जगदीश भाई नहीं)
कालेज के प्रिन्सीपल थे, ज्ञान में आने लगे। उसकी युगल भी उस स्कूल

टीचर थी और बड़ी तेज़ थी। वह जगदीश भाई को तंग करने लगी। एक
दिन बड़ा जुलूस निकाल कर उस धर्मशाला के आगे आकर पिकेटिंग की।
ऐसे थोड़ा हंगामा वहाँ चालू हो गया। फिर बाबा के डायरेक्शन अनुसार
दिल्ली में रहने वाला एक सरदार जी (शायद उसका नाम करतार सिंह था)
और मैं दोनों वहाँ अमृतसर में गये और हम दोनों भी उस धर्मशाला में रहे।
सरदार जी को देखकर कोई भी वहाँ हंगामा करने नहीं आया। वहाँ हम दोनों
एक-डेढ़ मास रहे। लेकिन फिर सोचा गया कि कोई फ्लेट किराये पर लेकर
वहाँ ईश्वरीय सेवा को बढ़ायें। तो शहर से बाहर एक कॉलोनी में एक फ्लेट
किराये पर लिया। वहाँ अच्छी सर्विस बढ़ गई। उस फ्लेट में भी मैं एक-
डी मास रहा। फिर वापस दिल्ली में आया।

उसके बाद फिर लखनऊ और कानपुर में ईश्वरीय सेवा आरम्भ हो गई।
लखनऊ में चित्रों पर ज़री लगाने वाले कारीगर थे। तो बाबा ने मुझे दिल्ली
में डायरेक्शन भेजा कि लखनऊ में जाकर एक बड़ा झाड़ का चित्र बनाकर
उस पर ज़री लगवाओ। डायरेक्शन मिलते ही मैं दिल्ली से लखनऊ गया।
वहाँ एक ही सेन्टर चौक में था, जहाँ भगवती बहन रहती थी, वहाँ जाकर
रहा। उस सेन्टर पर कोई बड़ा टेबल नहीं था, जिस पर मैं झाड़ की बड़ी
डिज़ाइन बनाऊँ। तो दादाराम भाई जो लखनऊ में ईश्वरीय सेवा करने के
लिमित्त बना था, उसने कहा कि मेरे घर में बड़ा टेबल है, वहाँ आकर
डिज़ाइन बनाओ। फिर तो मैं रोज़ दादाराम के घर में सवेरे जाता था और
सारा दिन वहाँ ही बैठकर डिज़ाइन बनाता था और शाम को लौटकर चौक
वाले सेन्टर पर आता था। ऐसे जब सारी डिज़ाइन तैयार हो गई, तब ज़री
लगाने वाले आर्टिस्ट को डिज़ाइन दी। उसने जरी लगाकर एक हफ्ते में
वापस दी। ज़री लगने के बाद डिज़ाइन बड़ी सुन्दर दिखाई पड़ रही थी। वह
डिज़ाइन लेकर फिर मैं वापस माउण्ट आबू में आया। उन दिनों में पटना में
भी ईश्वरीय सेवा आरम्भ हो गई थी। वहाँ का एक बड़ा सेठ जालान बाबू

माउण्ट आबू में बाबा से मिलने के लिए आया। बाबा ने उसको ये ज़री वाला झाड़ दिखाया। उसको बड़ा पसन्द आया। तो बाबा ने उसको ये निशानी सौगात में दे दिया। जालान बाबू ने पटना में जाकर वह ज़री वाला निशानी अपने म्युजियम में लगाया।

1955 में हम लोगों ने बृजकोठी का मकान छोड़ दिया और शहर की तरफ दो बंगले कोटा हाउस और धौलपुर हाउस किराये पर लेकर रहने लगे। दोनों बंगलों के बीच में एक कच्चा रास्ता था, जिससे एक बंगले से दूसरे बंगले में आते जाते थे। दोनों बंगले साथ साथ थे। मैं फिर वहाँ रहने लगा और वहाँ भी सवेरे पानी गर्म करने की ड्युटी, डिस्पेन्सरी में दवाई देने आदि की ड्युटी और चित्रों का कार्य मैं ही सम्भालता था।

थोड़े समय के बाद फिर मुझे देहली में भेजा गया। वहाँ एक दूसरा सेन्टर करोल बाग में चन्ना मार्केट में खोला गया था। मनमोहिनी दीदी वहाँ ही रहती थी, वहाँ मुझे रहने के लिए कहा गया। एक वर्ष के बाद फिर रजौरी गार्डन में किराये पर मकान लेकर सेन्टर खोला गया और मैं फिर वहाँ रहने लगा। वहाँ मेरी सेवायें अधिक बढ़ती गईं। वहाँ भी रोज़ सवेरे गर्म पानी करने और चाय बनाने की ड्युटी मैं ही सम्भालता था। फिर स्नान आदि करके क्लास में मुरली सुनता था। क्लास के बाद नाश्ता करके साइकिल से करोलबाग के सेन्टर पर जाता था। रजौरी गार्डन में दादी प्रकाशमणि रहती थी और करोलबाग में मनमोहिनी दीदी रहती थी। तो दादी प्रकाशमणि का कोई मैसेज बड़ी दीदी के लिए होता था तो वह वहाँ पहुँचाता था, फिर करोलबाग से कमलानगर जाता था। वहाँ भ्राता जगदीशचन्द्र जी रहते थे और किताबें आदि प्रेस में छपवाते थे। प्रेस चांदनी चौक में नई वाली गली में थी। तो मैं भ्राता जगदीशचन्द्र से प्रेस की मैटर आदि लेकर प्रेस में जाकर देता था। सूर्य आर्टिस्ट देहली में तीस हजारी में रहता था उनसे भी कोई चित्र आदि लेकर प्रेस आदि में पहुँचाता था। आर्टिस्ट से

कोई कलर, ब्रुश, पेन, ड्राइंग पेपर आदि की आवश्यकता होती थी, तो वह चांदनी चौक के नई सड़क से लेकर उनको देता था। फिर आकर प्रेस में बैठता था और प्रेस वाले जो मैटर कम्पोज़ करते थे, वह कापी वे निकाल कर देते थे। मैं उसकी प्रूफ रीडिंग करके ठीक कराता था। बीच में दिन का भोजन करने के लिए मैं कमला नगर जाता था। वहाँ प्रेस की कम्पोज की हुई कापी भ्राता जगदीशचन्द्र को दिखाये, पास कराये भोजन के बाद प्रेस में आता था और सारा दिन ये प्रेस का कार्य देखता था। शाम को फिर कमला नगर में जाकर प्रेस मैटर भ्राता जगदीशचन्द्र को देकर, कोई मैसेज आदि हो तो उसे लेकर करोलबाग में बड़ी दीदी मनमोहिनी जी से मिलकर, उनका कोई मैसेज दादी प्रकाशमणी जी के लिए होता था तो उसको लेकर रजौरी गार्डन में आ जाता था। ऐसे ये सारा दिन का कार्य करते हुए करीबन रोज़ 40 मील साइकिल चलानी पड़ती थी और रात को साढ़े दस बजे रजौरी गार्डन में पहुँचता था। फिर खाना खाकर सोते थे।

1957 में माउण्ट आबू में गवर्मेन्ट ने हमारे दोनों बंगलों को रिक्वीजीशन किया क्योंकि उन्हों को इन दोनों बंगले आफीसर्स आदि के रहने के लिए चाहिए थे। इसलिए उन्होंने कहा कि आप अपना दूसरा कोई रहने का स्थान ढूंढो और वहाँ जाकर रहो, ये दोनों बंगले हमको चाहिए। तब बाबा ने ये पांडवान हाउस (पांडव भवन) लिया और हम लोग यहाँ आकर रहे। मैं तो उन दिनों देहली में था।

1957 में ही शिवरात्रि मनाने के लिए पहली बार ही बाबा देहली में आये थे और रजौरी गार्डन में आकर ठहरे थे। शिवरात्रि मनाने में बाकी दो दिन ही थे तो बड़ी दीदी बाबा के पास आई और कहा "बाबा, आनन्दकिशोर का माउण्ट आबू से फोन आया है। कहता है कि देहली में शिव रात्रि पहली बार ही बड़ी धूमधाम से मना रहे हैं तो मैं भी देहली में आकर ये मनाते हुए देखूं, मेरी बहुत दिल है।" बाबा ने कहा "अगर वह भी यहाँ देहली में आ

ा ट्रेन में चढ़कर दिल्ली में सवेरे साढ़े छः बजे पहुँच गये और उसी दिन
वरात्रि मनाना देख लिया। मैं यहाँ माउण्ट आबू में आफिस आदि को
भालने लगा। दादा आनन्दकिशोर फिर दिल्ली से लखनऊ सर्विस पर
ा। उन दिनों में इशू बहन भी लखनऊ में सर्विस पर गई हुई थीं। मैं ही
ुबन में आफिस को सम्भालता रहा।

आफिस की ड्युटी के अतिरिक्त अन्य कार्य जैसे डिस्पेन्सरी आदि भी
भालता रहा। भाऊ विश्वकिशोर का असिस्टेण्ट भी बनकर रहा। भाऊ बाहर
खरीददारी आदि के लेटर हाथ से लिखकर देते थे और गवर्मेन्ट के
ाफीसर्स आदि के लेटर लिखकर देते थे, वे मैं टाइप भी करता था और
ट आदि भी भेजता था। ऐसे उनके पत्र-व्यवहार के कार्य को देखता था।
ास में रिकार्ड बजाना, टेप सुनाना और टेप में मुरली आदि भरने का
र्य भी मैं करता था। बाबा की मुरली सिन्धी में स्टेन्सिल पर लिखना, फिर
न्धी और हिन्दी मुरली लित्थो मशीन पर छापना, पिन करना, मुरलियाँ
दरस पर भेजने का कार्य भी मैं करता रहा। किसी आई हुई पार्टी के लिए
ापसी बस का टिकट दिलाना, उन्हों का सामान बैल-गाड़ी में चढ़ाकर बस
ेण्ड पर जाकर उनको बस में चढ़ाकर बस से भेजने आदि की ड्युटी
ओम् प्रकाश भाई वाली ड्युटी) पहले मैं ही सम्भालता था। ऐसे सारा दिन
ीवर बिज़ी रहता था। फिर धीरे धीरे मेरी ड्युटी बदलती रही। अन्य भाई
ों मेरी ड्युटी करने लगे तो मुझे और ड्युटी मिलती रही। जैसे सिन्धी
ी मुरली सुन्दरी बहन ने लिखना आरम्भ किया। लित्थो करना, पिन करना
और मुरलियाँ सेन्टर्स पर भेजने की ड्युटी जमुना प्रसाद भाई ने ली,
ास्पोर्ट की ड्युटी ओम् प्रकाश भाई ने ली। इशू दादी भी लखनऊ से
ाउण्ट आबू में आ गई और उन्होंने आबू में ऑफिस की ड्युटी को
ाम्भालना आरम्भ कर दिया।

1960 में बाबा ने भाऊ विश्वकिशोर को कहा कि ये पोखरान हाउस जो

जायेगा तो माउण्ट आबू की आफिस आदि कौन सम्भालेगा?'' फिर दीदी ने कहा ''बाबा, विश्वरतन को यहाँ से माउण्ट आबू में भेज सकते हैं, वह वहाँ जाकर वहाँ की आफिस आदि को सम्भालेगा और आनन्दकिशोर को यहाँ भेजे तो उसकी दिल पूरी हो जायेगी।'' बाबा ने कहा कि आनन्दकिशोर वहाँ से देहली में आये और विश्वरतन यहाँ पहले से ही बैठा हुआ है, वह ये मनाना आदि छोड़कर वहाँ जाये! क्या विश्वरतन की दिल नहीं होगी कि मैं भी ये शिवरात्रि देखूँ! दीदी ने कहा कि बाबा, विश्व रतन को इसमें कोई फीलिंग नहीं आयेगी, आप उसको कहेंगे तो खुशी-खुशी से चला जायेगा। बाबा ने कहा कि हाँ, मैं इस बच्चे को अच्छी तरह से जानता हूँ कि इसको फीलिंग तो बरोबर नहीं आयेगी। अच्छा, मैं इसको भेजता हूँ। भले इसको बुलाओ तो मैं इसको कह दूँ। उस समय सवेरे के सात बजे का टाइम था। बाबा भी मुरली सुनाने के लिए क्लास में जा ही रहे थे। मैं स्नान आदि करके तैयार हो गया था और क्लास में जा रहा था तो मुझे कहा गया कि बाबा तुमको बुलाता है। मैं बाबा के पास गया तो बाबा ने कहा – बच्चू! आनन्दकिशोर की दिल है कि मैं दिल्ली में आऊं और शिवरात्रि मनाना देखूँ, तो तुम वहाँ माउण्ट आबू में जायेंगे, वहाँ की आफिस आदि सम्भालेंगे? मैंने कहा ''जी बाबा, आप जैसे कहेंगे, वैसे करूँगा।'' बाबा ने कहा ''अच्छा बच्चू, अभी ही तैयार होकर स्टेशन पर जाओ, ट्रेन साढ़े नौ बजे निकलती है, उसमें चले जाओ और फिर वहाँ पहुँचकर आनन्दकिशोर को वहाँ से भेज दो।'' मैंने कहा ''जी बाबा, मैं अभी ही जाता हूँ।'' बस आधा घण्टा में ही तैयार होकर किसी गाड़ी में स्टेशन पर पहुँचा, वहाँ से साढ़े नौ बजे ट्रेन में चढ़कर दूसरे दिन सवेरे साढ़े चार बजे आबू रोड पहुँचा। उसी समय किसी जीप में चढ़कर माउण्ट आबू पहुँचा और दादा आनन्दकिशोर को जाकर कहा कि आप अभी ही तैयार होकर दिल्ली में जाओ। जनता गाड़ी 11 बजे जाती है, उसमें चले जाओ। दादा आनन्दकिशोर

किराये पर था, वह अब पोखरान हाउस के मालिक से खरीद कर लो। भाऊ ने पोखरान के ठाकुर (मकान मालिक) से इसके विषय में बातचीत की और 18 हज़ार रुपये में सौदा पक्का हो गया। भाऊ ने उनसे लिखित समझौता करके हस्ताक्षर ले लिये। माउण्ट आबू में रहने वाले कुछ व्यापारियों ने जब ये सुना तब उन्होंने ठाकुर साहब को कहा कि आपने अपना मकान बहुत कम दाम में दे दिया है, इसकी कीमत कम से कम 25 हजार तक होनी चाहिए। ये सुनकर ठाकुर बदल गया और भाऊ को कहा कि मैं इस कीमत में ये मकान नहीं दूँगा, मैं रजिस्ट्री नहीं कराऊंगा। भाऊ ने बहुत कुछ समझाया लेकिन वह माने ही नहीं। माउण्ट आबू में एक सिन्धी सरदार था, जिसका नाम सरदार नेवन्द सिंह था। जब से हम माउण्ट आबू में आये है, तब से लेकर वे हमारे सम्पर्क में आ गये थे और बाबा के लिए, भाऊ विश्वकिशोर के लिए उसको बड़ा सम्मान था। उसने जब ये सुना तो उसने भाऊ को कहा कि जब ठाकुर साहब ने समझौता कर हस्ताक्षर करके दी है तो अब ये कुछ कर नहीं सकता है। आप कोर्ट में अपील कर दो, सिरोही का वकील मेरे पहचान वाले हैं, वे फीस नहीं लेंगे। सिर्फ थोड़ा खर्चा आप ले लेंगे। फिर तो सिरोही के कोर्ट में केस कर दिया। इसके लिए कई बार सरदार नेवन्द सिंह, भाऊ विश्वकिशोर और मैं तीनों मिलकर सिरोही बस से जाते थे। वहाँ राजमाता की धर्मशाला थी, वहाँ एक दो कमरे लेकर एक दो दिन वहाँ रहकर कोर्ट आदि में जाते थे। सरदार जी और भाऊ विश्वकिशोर कोर्ट में वकील के साथ जाते थे और मैं उनका खाना आदि बनाकर रखता था। एक छोटी सी किट-बैग थी, जिसमें छोटा सा स्टोव, तवा, चकला-बेलन, तई, तपेला और थैलियों मे चावल, दाल, आटा, मसाला, चाय-चीनी आदि सब खाने का सामान रहता था, जो भाऊ अपने साथ रखता था, वह लेकर जाते थे। मैं सब्जी, दूध आदि सिरोही के बाजार से खरीद कर ले आता था और खाना बनाकर रखता था। ऐसे कई बार

सिरोही में आना-जाना हुआ। कोर्ट का जज बार-बार केस को पोस्टपोन करता रहता था। कारण था कि वह जज उस ठाकुर साहब का सम्बन्धी या पहचान वाला था, इसलिए देरी करता रहा। ये भी वह समझता था कि इन्होंका (हमारा) केस इनके पक्ष में मजबूत है। लेकिन ठाकुर साहब का सम्बन्ध होने के कारण टालता रहा अर्थात् देरी करता रहा। ऐसे एक वर्ष तक हम सिरोही में आते जाते रहे। आखरीन जज साहब ने ही भाऊ विश्वकिशोर को इशारा दिया कि ठाकुर साहब लालची आदमी है, इसको थोड़ा और पैसा देकर राज़ी कर लो। आपका भी सिरोही में आने जाने का, वकील की फीस आदि का खर्चा भी होता रहता है। केस पोस्टपोन होते-होते आपका खर्चा बहुत होता रहता है और समय भी बरबाद होता है और तकलीफ भी होती है। इसलिए ठाकुर साहब से बैठकर थोड़ा अधिक ऑफर करके फैसला कर दो। बाबा ने जब सुना कि ऐसे जज कहता है तो भाऊ विश्वकिशोर को कहा कि हाँ, जल्दी जाकर फैसला कर लो। भले थोड़ा अधिक ऑफर कर दो। क्योंकि हमें जल्दी क्लास के लिए हॉल बनाना है और भी बहुत कुछ बनाना है। दिन प्रतिदिन सीमेन्ट आदि महंगा होता जाता है। इसलिए जल्दी ही थोड़ा अधिक देकर फैसला कर दो। फिर तो भाऊ जाकर ठाकुर साहब से मिला और उनसे बातचीत करके 18 हज़ार के बदले 21 हज़ार में फैसला करके आया। हमारा एक वर्ष सिरोही आने-जाने में और वकील आदि के खर्चे में 3-4 हज़ार के लगभग और खर्चा हुआ होगा। मतलब करीब 25 हज़ार में ये मकान मिल गया होगा। इस मकान में कम्पाउण्ड बहुत बड़ा था, जिसमें 2 टेनिस कोर्ट थे और भी जगह खाली पड़ी थी। मकान लेने के बाद बाबा ने तुरन्त ही हॉल बनवाना आरम्भ कर दिया। पहले तो एक टेनिस कोर्ट पर क्लास रूम (छोटा हाल) बनाया। उसके आगे से दो रूम (दादी जी और गुल्जार दादी वाला कमरा) बनाये। उसके ऊपर भी चार कमरे, बाथरूम आदि बनवाये। बाद में ऐरोप्लेन वाले

कमरे आदि बनाये। ऐसे भवन निर्माण का कार्य आरम्भ किया, जो आज तक भी कहाँ न कहाँ चलता ही रहता है।

बाद में फिर मेरा डिस्पेन्सरी का कार्य बढ़ गया और आर्ट का कार्य (चित्र आदि बनाना, बड़े-बड़े बार्ड्स पर अंग्रेजी अक्षर लिखना) बढ़ता गया। खास ये दो ड्युटीज़ मेरे ऊपर रहीं और अन्य ड्युटीज अन्य भाई-बहनें करने लगे।

सीढ़ी के डीज़ाइन की रूप रेखा

एक दिन निर्वैर भाई ने बाबा को आकर बताया कि बम्बई की कोई धार्मिक संस्था ने सीढ़ी के रूप में एक डिज़ाइन बनाया है, तो हम भी ऐसे सृष्टि चक्र को सीढ़ी के रूप में उतरती कला में दिखायें। बाबा को निर्वैर भाई की ये राय बहुत अच्छी लगी। बाबा ने फिर मुझे बुलाया और मुझे कहा कि ऐसे-ऐसे सीढ़ी का चित्र बनाओ। उस चित्र में उतरती कला के स्टेप्स दिखाओ। सतयुग में 8 जन्म के आठ स्टेप्स, त्रेता के 12 जन्मों के 12 स्टेप्स, ऐसे स्टेप्स दिखाते जाओ। मैंने फिर सीढ़ी का चित्र बनाना आरम्भ किया। बाबा रोज़ उसमें करेक्शन और एडीशन बताते गये और मैं उसी प्रकार करता गया। उसमें फिर संगम का दृष्य भी बनाया और फिर कैसे आत्मायें ऊपर परमधाम में जाती हैं और फिर सतयुग में आती हैं — ये पुनरावृत्त का राज़ भी उसमें दिखाया। ऐसे ये सीढ़ी का चित्र अच्छा बन गया और बाबा को बहुत अच्छा लगा। बाबा कहते थे कि इस सीढ़ी पर समझाना बहुत सहज है। इसलिए सीढ़ी का चित्र सभी के पास होना चाहिए।

डिस्पेन्सरी को सम्भालते हुए मैं एक घरेलू डाक्टर बन गया। तो बाबा को भी कोई इन्जेक्शन आदि लगाना, वह भी लगाता रहा। बाबा रोज़ दो बार स्नान करते थे। एक बार सवेरे क्लास में आने के पहले और दूसरी बार दिन में भोजन के पहले। पहले बाबा की मालिश आदि करना, स्नान आदि

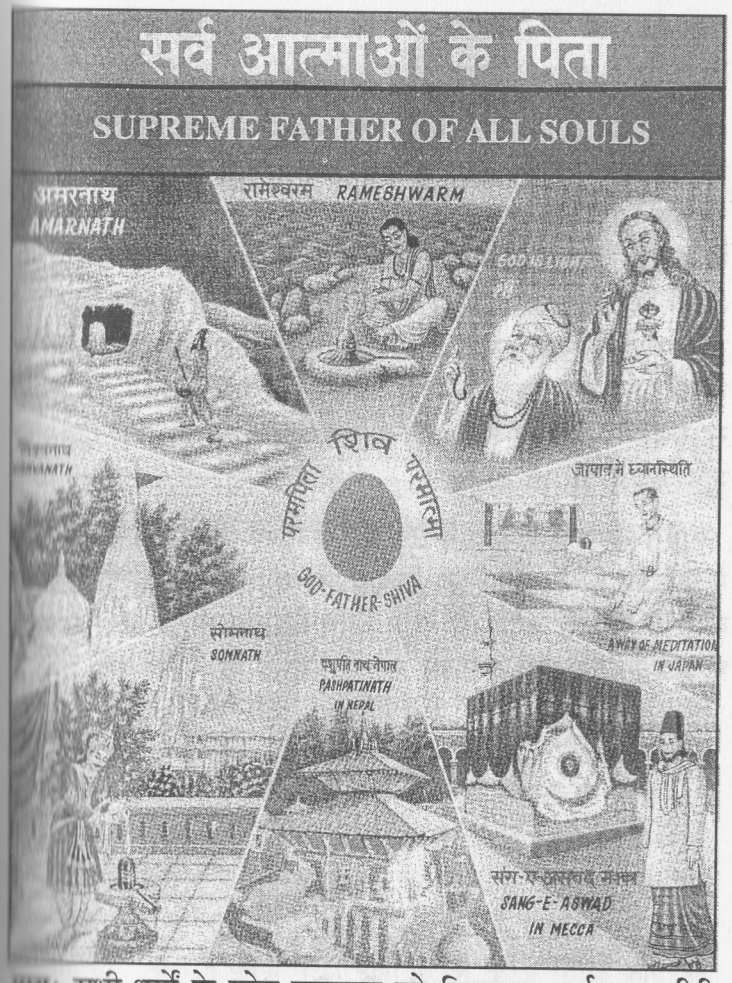

प्राय: सभी धर्मों के लोग परमात्मा को निराकार अर्थात् अशरीरी मानते हैं। शिवलिंग ज्योति-बिन्दु परमात्मा की ही यादगार भारत के कोने कोने में तथा भिन्न भिन्न देशों में पाई जाती है।

मातेश्वरी जी का देह-त्याग

24 जून 1965 में प्यारी मम्मा ने अपनी पुरानी देह का त्याग किया र उसके बाद 12 फरवरी 1968 को बम्बई में भाऊ विश्वकिशोर ने देह त्याग किया और उनका अन्तिम संस्कार वहाँ बम्बई में हुआ।

बाबा अव्यक्त हुए

18 जनवरी 1969 को प्यारे ब्रह्मा बाबा सवेरे क्लास में नहीं आये। तो रोज़ सवेरे क्लास में आकर स्वयं ही मुरली सुनाते थे लेकिन उस थोड़ी तबियत ठीक न होने के कारण क्लास में नहीं आये। रोज़ शाम भी रात्रि क्लास में आते थे। उस दिन दादी कुमारका (दादी प्रकाशमणी) मधुबन में थी। वैसे दादी जी गॉमदेवी बम्बई में रहती थीं। लेकिन कुछ पहले बाबा से मिलने के लिए आई थी। बड़ी दीदी (दीदी मनमोहिनी कुछ दिन पहले कानपुर, इलाहाबाद आदि की तरफ सर्विस पर गई हुई दादी प्रकाशमणी को 16-17 जनवरी को ही बम्बई जाना था परन्तु ा ने उनको रोका और कहा 2-4 दिन ठहर कर जाना। 18 जनवरी को ी ही बाबा तैयार होकर रात्रि क्लास में जाने लगे, तो दादी जी ने बाबा कहा कि बाबा, आज आपकी तबियत ठीक नहीं है इसलिए आज आप ाम करो, हम क्लास करा लेंगे। बाबा ने कहा ''नहीं बच्ची, मैं सवेरे भी ास में नहीं गया और अगर अभी भी नहीं जाऊंगा तो बच्चों को बहुत ा होगी और सोचते रहेंगे बाबा को क्या हुआ है! इसलिए मैं क्लास चलता हूँ।'' बाबा ने आधा घण्टा बहुत अच्छी मुरली चलाई और फिर त में याद-प्यार नमस्ते कहने के बाद कहा ''अच्छा अब छुट्टी।'' ये ट्टी'' पहले बाबा कभी नहीं कहते थे। उस दिन ये ''छुट्टी'' अक्षर बोल क्लास के बाहर आया। उस समय लगभग रात्रि के नौ बजे थे। मैं भी

कराने का कार्य भी मैं करता था परन्तु बाद में ये ड्युटी चन्द्रहास भाई ने ले ली।

जब हम लोग कराची में थे, उस समय जो भाई थे, उन सभी ने मिलकर सोचा कि हमारे सिर के बाल बाहर का कोई नाई क्यों काटे। क्यों नहीं हम लोग बाल काटना सीखकर एक-दो के बाल काटें। ये निश्चय करने के बाद बाल काटने की मशीन मंगाई गई और चार-पाँच भाई बाल काटना अच्छी तरह से सीख गये। उन भाइयों में से एक मैं भी था। हम 4-5 भाई सभी भाइयों के बाल काटते थे। धीरे-धीरे वे भाई अपने इस ब्राह्मण परिवार को छोड़कर अपने मित्र-सम्बन्धियों के पास चले गये, बाकी मैं ही अकेला रह गया। ये भी मेरा एक सौभाग्य ही रहा जो कि बाबा के बाल काटने का शुभ अवसर भी मुझे ही मिला।

ऐसे बापदादा के साथ ये मेरी अलौकिक नई जीवन चलती रही, और मैं बापदादा की हर श्रीमत को सच्चाई और सफ़ाई से पूर्ण रूप से पालन करने की कोशिश करता रहा, जिस कारण बापदादा की हर प्रकार से मदद भी मुझे मिलती रही, और इस कारण सफलता भी मिलती रही।

क्लास से उठकर बाहर आया। बाबा ने मुझे देखकर कहा "बच्चू, डाक्टर को बुलाओ और मुझे चेक कर के जाये।" मैंने उसी समय जमुनाप्रसाद भाई को साइकिल पर भेजा (उन दिनों हमारे पास एक भी कार नहीं थी) और उसको कहा कि जल्दी ही अभी-अभी डाक्टर को यहाँ ले आओ, बाबा को चेक करके जाये। जमुनाप्रसाद भाई उसी समय साइकिल पर गया और डाक्टर को चलने के लिए कहा। उन दिनों में डाक्टर अरोड़ा सिविल हास्पिटल में था। वे घर में ही थे। डाक्टर ने कहा हाँ, बस सिर्फ चाय पीकर चलता हूँ। इधर बाबा आकर अपने पलंग पर लेट गया। बाबा के कमरे में दादी प्रकाशमणि और अन्य थोड़ी बहनें और मैं खड़े थे। मैं बाबा को देखता रहा था। मैंने देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी लेट जाता था और कभी बैठ जाता था। मैंने ऐसे अनुभव किया कि बाबा को बहुत दर्द है और रेस्टलेस फील कर रहा है। मैं जल्दी-जल्दी कमरे से बाहर आया कि जमुनाप्रसाद को फोन करूँ कि जल्दी डाक्टर को ले आओ। मैंने हास्पिटल में फोन किया परन्तु वहाँ किसी ने फोन नहीं उठाया। उस समय डाक्टर के घर में फोन नहीं था। फिर मैंने सरदार नेवन्द सिंह की दुकान पर फोन किया, जो हास्पिटल के सामने ही थी। वहाँ सरदार जी का बच्चा दयाल सिंह बैठा था, उसको कहा कि आप जाकर जल्दी ही डाक्टर को भेजो, बाबा को अधिक तकलीफ है। वह तुरन्त ही डाक्टर के पास गया। उस समय डाक्टर चाय पी चुके थे और तुरन्त अपने स्कूटर पर यहाँ आया। मैं इसके बीच ही कोरामिन की इन्जेक्शन निकाल कर रखी और सिरिन्ज भी उबाल कर रखी थी। मैंने सोचा कि शायद डाक्टर को इस इन्जेक्शन की आवश्यकता हो। फिर आकर बाहर गेट पर खड़ा था, उसी समय डाक्टर भी आ गया। मैंने डाक्टर को कहा आप जल्दी ही अन्दर चलिये, बाबा को बहुत दर्द हो रहा है। डाक्टर अन्दर आया, कमरे में अन्दर आते ही बाबा की तकलीफ को देखकर डाक्टर डर गया। डाक्टर

घंटे भी बाबा को चेक करके गया था, उस समय ऐसा कुछ नहीं था। लेकिन इतने में बाबा की ऐसी हालत देखकर हैरान हो गया। मैं भी डाक्टर के साथ ही था तो क्या देखा कि बाबा का बाया हाथ अपने हार्ट पर है और बाया हाथ दादी प्रकाशमणी के हाथों में है, आँखें बन्द हैं। दादी किशनी (दादी प्रकाशमणि की बहन, जो पटना में रहती है) बाबा के पलंग पर पीछे से बैठकर बाबा को पकड़कर बैठी है क्योंकि लेटे हुए बाबा को अधिक दर्द होता था। ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई। लेकिन इतने में बाबा तो पहले से ही देह का त्याग कर ऊपर सूक्ष्म वतन में चला गया। फिर तो बाबा को पलंग पर लिटा दिया। डाक्टर को भी बड़ा दुख हो रहा था कि मैंने आने में देरी की। अगर थोड़ा जल्दी आ जाता तो ऐसा नहीं होता। तो "सॉरी" बोल कर चला गया। डाक्टर अरोड़ा के पहले इस हॉस्पिटल में लेडी डाक्टर थी, जिसने रिटायर होकर अपनी प्राइवेट हास्पिटल खोली थी। फिर उस लेडी डाक्टर को बुलाया गया, जिससे वह भी आकर चेक करे कि सचमुच बाबा ने देह का त्याग किया है या स्वांस कहाँ रुका हुआ है। वह भी आई और उसने भी कन्फर्म किया कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया है।

फिर तो सारे बंगले में ये सूचना फैल गई और सभी के चेहरे और दिलों में दुख की लहर आने लगी। बाबा नौ बजे क्लास के बाहर आये और साढ़े नौ बजे शरीर छोड़ दिया। आधा घण्टे में ही बाबा जैसे आँख मिचौली का खेल करके सभी बच्चों से न्यारा होकर वतन में चले गये। सभी कहते थे कि बाबा तो बिल्कुल ठीक था, मुरली भी अच्छी चलाई, फिर इतने में क्या हो गया? ऐसे किसी के ख्याल में भी नहीं था कि बाबा ऐसे ही इतने में चले जायेंगे। लेकिन बाबा तो डाक्टर के आने तक भी नहीं रुका। पहले ही न्यारा हो गया।

फिर तो दादी प्रकाशमणि जी सभी सेन्टर्स पर ये सूचना देने के लिए

फोन करने आई। जिसको भी दादी जी फोन पर ये सूचना दे तो वे बहुत कहती थीं "नहीं, नहीं, ये हो नहीं सकता! दादी आप हमारी परीक्षा ले रही हैं। हम तो बाबा को तीन-चार दिन पहले ही देखकर आये हैं। बाबा तो बिल्कुल ठीक हैं। आप हमारे से मज़ाक कर, हमारी परीक्षा ले रही है।" दादी ने उन्होंको कहा "देखिये, बाबा के लिए ऐसा मज़ाक नहीं किया जा सकता, ये सत्य बात है। इसलिए जिसको भी बाबा के शरीर को देखना हो, वह जल्दी ही आये। बाबा के शरीर को हम तीन दिन रखेंगे।" ऐसे दादी जी पहले बड़े-बड़े सेन्टर को सूचना देती गई। दादी जी ने कानपुर में भी फोन किया और पूछा - बड़ी दीदी कहाँ हैं? उन्होंने कहा - इलाहाबाद गई हुई हैं। इलाहाबाद सेन्टर पर कोई फोन नहीं था, इसलिए कानपुर वालों को ये सूचना दी और उन्हों को कहा कि जल्दी ही कोई रू-ब-रू इलाहाबाद में जाकर बड़ी दीदी को ये समाचार सुनाये। उसी रात को ही कोई भाई इलाहाबाद गया और जाकर बड़ी दीदी को ये समाचार दिया। बड़ी दीदी ने उसको कहा "ये हो नहीं सकता। तुम हमारे से मज़ाक करते हो।" दीदी को थोड़ा शक पड़ा, इसलिए उसी समय मधुबन में फोन किया। पता लगने पर तुरन्त इलाहाबाद से दिल्ली में पहुँची और वहाँ भी ये बात सुनी। दीदी ने वहाँ ये भी सुना कि कई भाई-बहनें पहले से ही मधुबन चले गये हैं। फिर दीदी देहली से पहली ट्रेन से ही आबू में आकर पहुँच गई। दीदी 20 तारीख को आकर पहुँची और पहुँचते ही सीधी छोटे हॉल में गई, जहाँ बाबा के शरीर को रखा हुआ था। बाबा के शरीर को पहले दिन तो बाबा के कमरे में ही रखा था परन्तु दूसरे दिन छोटे हॉल में रखा था, जिससे सभी भाई-बहनें बाबा के शरीर को देख सकें। वहाँ बाबा को देखकर, दीदी जी सामने काफी देर खड़ी होकर पता नहीं क्या क्या सोचती रही जैसे कि अपने शरीर से न्यारी होकर, अशरीरी होकर खड़ी थी!

शरीर छोड़ने के कुछ दिन पहले बाबा ने रमेश भाई को आबू

म्यूज़ियम के मकान का सौदा करने के लिए कहा था। रमेश भाई ने 18 जनवरी को अहमदाबाद में जाकर मकान के मालिक से बात करके सौदा किया और बाबा से फोन पर बात भी की। बाबा ने उनको स्वीकृति दी कि भले सौदे की लिखापढ़ी कर दो। वह लिखा-पढ़ी करके उसी रात को ही मधुबन के लिए रवाना हो गया था। आते ही ये समाचार सुना कि बाबा अव्यक्त हो गया है। फिर तो रमेश भाई ने उसी समय से सभी जगह फोन करना आरम्भ कर दिया। मैं भी उनके साथ फोन पर बैठा रहा और सेन्टर का फोन नम्बर आदि देता रहा। ऐसे फोन और तारें सभी सेन्टर्स को रात भर होती रहीं।

19 जनवरी को सभी तरफ की बहनें और भाई आने लगे। एक हजार से अधिक भाई-बहनें इकट्ठे हो गये। इतने लोगों के रहने की जगह तो थी नहीं। उन दिनों ट्रेनिंग सेक्शन बन रहा था। नीचे वाले कमरे बन गये थे, बाकी ऊपर वाले कमरों की दीवालें उठ चुकी थीं, छत पड़ना बाकी थी। तो भाई बहनों को जहाँ भी थोड़ी जगह मिलती थी वहीं बैठ जाते थे और सो जाते थे। उस समय ठंडी भी बहुत थी लेकिन थोड़ी भी जगह मिलती थी, उसी में सन्तुष्ट थे।

19 तारीख को गुल्ज़ार दादी के तन में अव्यक्त बापदादा की प्रवेशता हुई और मुरली चलाई और बच्चों को सांत्वना दी कि मैं कहाँ चला नहीं गया हूँ, मैं तो आपके साथ हूँ और सदा आपके साथ ही रहूँगा, साथ में ही हम सभी वतन में चलेंगे। मैंने सिर्फ ये व्यक्त पार्ट बदल कर अव्यक्त पार्ट बजाना शुरू किया है।

अव्यक्त बापदादा ने अलग दादियों से भी बैठकर उन्हों को डायरेक्शन दिये कि इसके बाद कैसे कैसे कारोबार चलानी है, कौन-कौन इसके लिए निमित्त बने आदि आदि। ब्रह्मा बाबा की देह के अन्तिम संस्कार के लिए भी डायरेक्शन दिये कि लौकिक बच्चा नारायण और अलौकिक बच्चा विश्व

रतन दोनों मिलकर अन्तिम संस्कार करें।

ये तो मैंने पहले भी सुनाया है कि इस मकान के कम्पाउण्ड में दो टेनिस कोर्ट थे। एक टेनिस कोर्ट पर छोटा हॉल और कमरे आदि बने। दूसरा जो टेनिस कोर्ट था, उस पर बाबा ने कन्सट्रक्शन नहीं करने दिया था। बाबा ने बोला ये टेनिस कोर्ट ऐसे ही रहने दो। बाकी इसके साइड में भले कमरे बनाओ। तो उसके पास ही ये ट्रेनिंग सेक्शन बनाना आरम्भ किया था। बीच में ये टेनिस कोर्ट की जगह खाली थी। तो अब सोचा गया कि इसी टेनिस कोर्ट के बीच में बाबा के शरीर का अन्तिम संस्कार किया जाये और यहाँ ही स्मृति के रूप में यादगार बनायें। यहाँ बंगले के अन्दर अन्तिम संस्कार करने की छुट्टी लेने के लिए कुछ भाई सिरोही में पुलिस सुपुरिन्टेण्डेण्ट के पास गये और उनसे छुट्टी ले आये। फिर तो उस टेनिस कोर्ट के बीच में एक थल्ला बनाया गया और अन्य सभी तैयारियाँ की गई।

जनवरी की 21 तारीख को अन्तिम संस्कार के लिए एक अर्थी बनाई और बाबा के शरीर को तैयार करके टेनिस ग्राउण्ड के पास अर्थी पर लाकर बाहर रखा। अर्थी को खूब फूलों से सजाया था। चारों तरफ बड़ी दादियाँ और बड़ी टीचर्स आदि बैठ गईं। सभी आये हुए भाई बहनें भी खड़े हो गये। सभी कुछ समय वहाँ बापदादा की याद में बैठे। फिर कुछ भाइयों ने मिलकर अर्थी को कंधे पर उठाया आगे आगे नारायण भाई और मैं (विश्वरतन) था। अर्थी को उठाकर पोस्ट ऑफिस, बाजार आदि चक्कर लगाकर, नक्की लेक से होते हुए वापस आकर पाण्डव भवन में पहुँचे और उस थल्ले पर लाकर रखा। थल्ले पर पहले से संस्कार के लिए लकड़ियाँ आदि रखी हुई थीं। फिर ऊपर से लकड़ियाँ रखी गईं। टेनिस कोर्ट के चारो तरफ उन दिनों दीवाल आदि नहीं थी, इसलिए रस्सियाँ चारो तरफ लगाई गई थी और डायरेक्शन दे दिया गया था कि रस्सी के अन्दर कोई नही आये। सभी भाई-बहनें रस्सियों के बाहर ही खड़े रहे। सभी भाई-बहने

नम्बरवार आकर चन्दन की लकड़ी डालकर बाहर जाकर खड़े होते जाते थे। फिर नारायण भाई और मैंने वहाँ पास जाकर चन्दन की लकड़ी और घी आदि डालकर मुखाग्नि (तीली) लगाई।

बाहर से जो भाई बहनें आये थे, उनमें से कोई-कोई उसी दिन ही वापस चले गये और कोई दूसरे दिन वापस चले गये। क्योंकि यहाँ आबू में ठण्डी बहुत थी और रहने की जगह भी इतनी नहीं थी, इसलिए सभी जाते रहे।

तीन दिन के बाद बाबा की राख (Ashes) वहाँ ही थल्ले पर फैला कर रखी। बाद में समाधि की डिज़ाइन बनाई गई और मारबल आदि मँगाकर उन पर बाबा के द्वारा उच्चारे गये विशेष महावाक्य लिखवाकर ये यादगार बनाया गया, जिसका नाम रखा गया "शान्ति स्तम्भ (Tower of Peace)।" ऐसे ये सर्व प्रिय यादगार हमारे ब्राह्मण परिवार भाई बहनों के लिए तो क्या, परन्तु बाहर के लोगों के लिए भी ये एक तीर्थ स्थान बन गया।

गुल्जार दादी के तन में ये तीन दिन रोज़ बापदादा की प्रवेशता होती रही और बापदादा की मुरली रोज़ चलती रही। बड़ी दादियों को भी बापदादा विशेष डायरेक्शन देते रहे। बाद में तो बापदादा समय प्रति समय गुल्जार दादी के तन में प्रवेश कर मुरली चलाते रहे और आज तक भी चलाते रहते हैं। ऐसे ही बापदादा हम सभी बच्चों के साथ हैं और साथ ही हम सभी को वापस ले जायेंगे।

बापदादा के डायरेक्शन अनुसार बड़ी दीदी और दादी प्रकाशमणि ईश्वरीय कारोबार और ईश्वरीय सर्विस की जिम्मेवारियाँ अच्छी रीति सम्भालती रहीं। साथ में बड़ी दादियाँ, बड़े भाई, बड़ी टीचर्स बहनें मददगार रहे और हैं भी। बाद में तो बापदादा सभी बच्चों को सकाश देते श्रेष्ठ पालना देते रहते हैं, जिससे ईश्वरीय सेवा वृद्धि को पाती रही और देश-विदेश में नये-

करीब 250 पोतामेल आयेंगे तो औसतन (average) 10 पोतामेल तिदिन चेक करने होंगे। तो ये केवल 15-20 मिनट का ही काम है। कोई सा हेण्ड हो जो रोज़ 15-20 मिनट ये कार्य करे। दादी जी ने उनको कहा क विश्वरतन को कहो कि वह ये कार्य करेगा। फिर तो 1973 में ये काउण्ट्स का कार्य मेरे को मिला और मैंने शुरू किया। रोज़ आधा पौना ण्टा इस कार्य में लगाता था। फिर वर्ष के अन्त में रमेश भाई बम्बई से हाँ आकर ऑडिट करते थे, उसमें काफी समय देना पड़ता था। धीरे धीरे न्टर्स बढ़ते गये और वर्ष के अन्त में ऑडिटिंग का कार्य भी बढ़ता गया। तने तक जो मुझे और हेण्ड्स की आवश्यकता पड़ी। पहले एक और ण्ड सहयोगी बना, फिर दो, फिर तीन, फिर चार, ऐसे हेण्ड्स बढ़ते गये। हले तो मैं ये कार्य अपने कमरे में ही करता रहा। हेण्ड्स बढ़ने के कारण ने अपना कमरा और साथ में आफिस अन्य स्थान पर शिफ्ट किया। बाद ा कार्य बढ़ता गया और कम्प्युटर्स भी लगाये गये। बाद में सेन्टर्स बढ़ते ाये, कार्य बढ़ता गया, हेण्ड्स बढ़ते गये तो वह आफिस भी छोटी हो गई। ो सोचा गया कि मेडीटेशन हॉल के ऊपर दो हॉल बनायें, एक में ये एकाउण्ट आफिस बने और दूसरे में कोई छोटे प्रोग्राम या मीटिंग आदि हो। ाद में दादी जी के डायरेक्शन अनुसार मेडीटेशन हॉल के ऊपर दो हॉल बनाये गये और साथ में ही रहने के लिए कमरे भी बनाये गये, जो न्द्रहास भाई, आनन्दकिशोर भाई तथा निर्वैर भाई के कमरों के ऊपर हॉल के बराबर में ही बनाये गये। एक कमरे में रमेश भाई, दूसरे में मैं, तीसरे में गोलक भाई और वल्लभ भाई और चौथे में गोकुल भाई और रमेश भाई (फोटोग्राफर) रहने लगे और ऑफिस इस हॉल में शिफ्ट हो गई।

एकाउण्ट्स का कार्य बढ़ता ही गया तो मुझको डिस्पेन्सरी आदि का कार्य छोड़ना पड़ा और वह कार्य अन्य डाक्टर्स आदि सम्भालने लगे। वर्ष के अन्त में रमेश भाई और मैं सभी सेन्टर्स के ज़ोनल हैड क्वार्टर्स में

नये सेन्टर्स खुलते रहे और खुलते रहते हैं।

बाद में बापदादा के निर्देश अनुसार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय को सुचारू रूप से संचालन के लिए एक कान्स्टीट्युशन एण्ड बाई लाज़ अर्थात् संस्था के क्या नियम, कार्य विधि आदि है, उसकी एक पुस्तिका छपाई गई, जिसमें विद्यालय की मुख्य प्रशासिका, सह-प्रशासिका, मैनेजमेन्ट कमेटी के सदस्यों को निश्चित किया गया। मैनेजमेन्ट कमेटी में बाबा ने मेरा भी नाम दिया।

बाद में आदरणीय दीदी जी ने 27 अगस्त 1983 में पुरानी देह का त्याग किया तो फिर सारी ज़िम्मेवारी दादी प्रकाशमणि जी के ऊपर आ गई, तो फिर जानकी दादी जी को सह-प्रशासिका बनाया गया और 2-3 और भी सदस्य कमेटी में शामिल किये गये और उस अनुसार कान्स्टीट्यूशन एण्ड बाई लाज में परिवर्तन करके नयी पुस्तिका बनाई गई। बाकी तो ईश्वरीय सेवा वृद्धि को पाती रही है और पाती रहेगी।

रमेश भाई, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट थे और बम्बई में उनका अपना ऑफिस था, जो कई बड़ी-बड़ी कम्पनियों आदि का ऑडिट करते थे। 1973 में एक दिन रमेश भाई ने दादी जी को आकर कहा कि गवर्मेन्ट का कायदा निकला है कि इन्स्टीट्युशन्स को भी अपने आय-व्यय का हिसाब रखना है और वर्ष के अन्त में सरकार के पास देना है। तो सभी सेन्टर्स को भी अपने सेन्टर का ये हिसाब-किताब रखना ही है। हर मास का पोतामेल फार्म भरकर सभी सेन्टर्स वाले यहाँ मधुबन में भेजें। फिर यहाँ हम सभी सेन्टर्स का ऑडिट करके इकट्ठा हिसाब बनायेंगे। रमेश भाई ने दादी जी को कहा कि ऑडिट तो मैं कर लूँगा लेकिन मधुबन का कोई एक हेण्ड चाहिए, जो सभी सेन्टर्स के पोतामेल यहाँ आयें, उनको वह चेक करके भूलें आदि ठीक करा लेवे। उन दिनों में पक्के सेन्टर्स केवल 200-250 थे। हर मास

चैप्टर 7

स्व-उन्नति के लिये ध्यान देने योग्य कुछ बातें

अपने इस अनुभव के आधार पर जो कुछ विचार मुझे अपनी और सर्व की उन्नति के लिए आ रहे हैं, उनको अभी बता रहा हूँ:-

ये अविनाशी ज्ञान और राजयोग की पढ़ाई है। हम सभी गॉडली स्टूडेण्ट्स हैं। स्टूडेण्ट्स को पढ़ाई में सफलता प्राप्त करने के लिए पहले तो यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाने वाला कौन है, क्या पढ़ाते हैं और इस पढ़ाई से क्या प्राप्ति होगी? तो पहले ये पूर्ण निश्चय चाहिए कि यह कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का पुरुषोत्तम संगम युग चल रहा है। जिस संगमयुग पर निराकार परमपिता परमात्मा शिव साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर शिक्षक के रूप में हमको पढ़ा रहे हैं और सतगुरु के रूप में हमको श्रीमत दे रहे हैं। अगर ये सम्पूर्ण निश्चय नहीं है तो वह इस ज्ञान और योग की पढ़ाई में आगे नहीं चल सकता है। अगर सम्पूर्ण निश्चय है तो ऐसे सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे बनने के बाद उनकी सर्व आज्ञाओं को सम्पूर्ण रीति से अवश्य पालन करना चाहिए। शिक्षक के रूप में जो भी शिक्षायें देते हैं, उन पर चलकर ऐसे गुण अवश्य अपने में धारण करने चाहिएं। सतगुरु के रूप में जो भी श्रीमत देते हैं उस पर कदम-कदम पर चलकर बाप समान बनने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

इसके लिए बापदादा हमेशा यही कहते रहते हैं कि अपना लक्ष्य (Aim) सदा ऊँच से ऊँच रखो। यह पढ़ाई है, पढ़ाई में लक्ष्य होता है। तो यहाँ भी लक्ष्य ऊँच से ऊँच रखना है कि मुझे नम्बर वन में अवश्य आना है। नम्बरवन माना फ़र्स्ट डिवीज़न अर्थात् 108 की माला। ऐसा ऊँचा लक्ष्य रखने से पुरुषार्थ भी ऐसा ही चलेगा। तो इसके लिए चाहिए अन्दर का

चक्कर लगाते हुए उस जोन के सम्बन्धित सेन्टर्स की ऑडिट वहीं करते थे। ऑडिट के लिए आवश्यक पेपर्स आदि सभी साथ में ले जाते थे। धीरे धीरे कार्य बढ़ने के कारण फिर हम तीन या चार हेण्ड्स जाने लगे। आगे चलकर इतना कार्य बढ़ गया कि जो सारे एकाउण्ट्स का कार्य कम्प्युटर्स के द्वारा करना आरम्भ हो गया और एकाउण्ट्स आफिस में 8-10 हैण्ड्स हो गये। तो ऑडिट के लिए सब हैण्ड्स, कम्प्युटर्स, ऑडिट की सारी सामग्री आदि ले जाकर ऑडिट करना कठिन हो गया। इसलिए सभी सेन्टर्स का ज़ोन वाइज़ कार्यक्रम बनाकर यहाँ बुलाकर ऑडिट करना आरम्भ किया गया और कार्य में सहयोग के लिए अन्य कई आडीटर्स भाई बहनों को बुलाकर उनकी मदद लेनी पड़ती है। अभी तो ये कार्य इतना बढ़ गया है, जो एकाउण्ट्स आफिस का ये हॉल भी छोटा हो गया तो साइड में जो दूसरा हॉल है वह भी एकाण्ट्स के कार्य के प्रयोग में लाया जा रहा है।

मेरा कार्य जो पहले पोतामेल आदि देखने, यज्ञ की कैश बुक लिखने आदि का था, वह भी अभी अन्य भाई बहनें सम्भालते हैं। अभी मैं केवल बैंक एकाउण्ट्स आदि का कार्य सम्भालता हूँ और ऑडिट के समय सेन्टर्स के बैंक बैलेन्स आदि की चेकिंग करता हूँ।

बाकी एक ड्युटी जो मैं 15-20 वर्ष से करता आया था, वह है अमृत वेले सन्दली पर बैठकर योग कराने की। ये ड्युटी जब से प्राण बापदादा ने मीठी दीदी-दादी के द्वारा मुझे दी थी वह अच्छी तरह से पूर्ण रीति से बजाता रहा परन्तु इस वर्ष से ये ड्युटी अन्य भाई-बहनें सम्भाल रहे हैं।

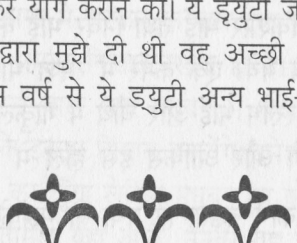

उमंग-उल्लास और ऐसे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हिम्मत भी चाहिए।

लेकिन इसके पहले अपना आत्म-विश्वास चाहिए कि मैं 108 की माला में अथवा नम्बरवन में आ सकता हूँ या आ सकती हूँ। क्योंकि कई ऐसे सोचते हैं कि मैं तो अभी थोड़ा समय हुआ जो बाबा का बच्चा या बच्ची बनी हूँ, हमारे से पहले तो बहुत ही बच्चे-बच्चियाँ बैठे हुए हैं, उनमें से भी हज़ारों तो टीचर्स बहनें हैं, जो बाबा के सेन्टर्स की बहुत ही अथक सेवा करते हुए अपनी स्वे-उन्नति कर रही हैं, औरों की सेवा करके प्रजा भी बना रही हैं। तो उन हज़ारों में से 108 की माला तो भर ही गई होगी। तो हम अभी नये ज्ञान में आये हुए बच्चे एक वर्ष वाले, दो वर्ष वाले कैसे 108 की माला में आयेंगे! कई पुराने महारथी भाई बहनें 30-40 वर्ष वाले भी बैठे हुए हैं, उन्हों ने तो आगे नम्बर ले लिया, हम तो 1000 नम्बर के अन्दर भी मुश्किल से ही आयेंगे। ऐसे सोचकर अपना आत्म-विश्वास खो बैठते हैं और ढीले पड़ जाते हैं। समझते हैं चलो सतयुग में जो भी पद मिला, वह ठीक है। ड्रामा में जो भी पद हमारे भाग्य में होगा, वह मिल ही जायेगा। उसकी अभी हम चिन्ता क्यों करें। ऐसे ड्रामा पर छोड़ देते हैं और अलबेला होकर चलते रहते हैं।

बापदादा तो सबको देख रहे हैं। जब बापदादा ने देखा कि ये इतने सभी आत्म-विश्वास ही खो बैठे हैं, अलबेले होकर ढीला पुरुषार्थ कर रहे हैं तब बापदादा ने एक मुरली में आत्म-विश्वास दिलाया कि कोई भी बच्चा या बच्ची, नया हो या पुराना हो - कोई भी अगर चाहे (ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करे) तो वह नम्बरवन में आ सकता है। फिर बापदादा ने कहा कि दो मास का स्टूडेण्ट अगर चाहे तो नम्बरवन में आ सकता है। सभी सीट्स खाली हैं, कोई भी जम्प लगाये तो 108 की माला में आ सकता है। तो सोचना चाहिए कि सत्य बाप के ये सत्य वचन हैं। बापदादा ने जो ये महावाक्य उच्चारण किये हैं कि दो मास का स्टूडेण्ट नम्बरवन में आ सकता है तो ज़रूर कोई

तो ऐसे नये स्टूडेण्ट्स नम्बरवन में आकर ही दिखायेंगे और यह भी बाबा ने कहा कि दो मास का स्टूडेण्ट भी आ सकता है तो ज़रूर कोई इतना सहज पुरुषार्थ होगा तब तो वह नम्बरवन में आ सकता है। बापदादा के ये महावाक्य सुनकर सभी नये बच्चों को, जो एक दो वर्ष या 4-6 मास से ही ज्ञान में चल रहे हैं, हिम्मत आ जाती है और आत्म-विश्वास जाग्रत हो जाता है कि मैं भी ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करूँ तो नम्बरवन में आ सकता हूँ। अगर आ सकता हूँ तो क्यों न नम्बरवन में आऊं! ऐसा आत्मविश्वास और हिम्मत आने के बाद अन्दर में चाहिए दृढ़ संकल्प कि मुझे नम्बरवन में आना ही है।

सहज पुरुषार्थ

अच्छा, कोई दृढ़ संकल्प भी रखता है कि मैं नम्बरवन में आकर ही दिखाऊंगा लेकिन नम्बरवन में आने के लिए क्या ऐसा सहज पुरुषार्थ है जो 2 मास का स्टूडेण्ट भी आ सकता है। वह सहज तरीका कौन-सा है? वह सहज तरीका है कि अपनी जीवन नैया को प्रभु के हवाले कर दो। पूर्ण रूप से प्रभु के प्यार में आ जाओ। पहले जो माया के प्यार में थे अथवा दुनियावी, मायावी, विकारी बातों में जकड़े हुए थे, उन बातों से अब मन-बुद्धि सहित पूर्ण रूप से अपने को परिवर्तन कर प्रभु की मीठी, प्यारी, शक्तिशाली गोद में समा जाओ अर्थात् मरजीवा बन जाओ।

इसके लिए दृढ़ संकल्प रखकर विकारी दुनिया अथवा विकारी बातों से मर जाओ अथवा विकारी बातें खत्म कर दो। इसमें पहले है अपवित्रता को खत्म करना अथवा पवित्रता को धारण करना। पवित्रता तो इस ज्ञान मार्ग का फाउण्डेशन है। अगर जीवन में पवित्रता नहीं तो वह इस ज्ञान मार्ग में चल ही नहीं सकता। उसकी बुद्धि में न ज्ञान बैठ सकता और न ही परमात्मा से योग लग सकता है। बापदादा की यह पहली आज्ञा है – **''पवित्र बनो और राजयोगी बनो।''** अगर ये पवित्रता की आज्ञा पालन नहीं करता तो वह

बापदादा का आज्ञाकारी सपूत बच्चा कहला ही नहीं सकता। वह बापदादा के समीप भी नहीं आ सकता, उसका दिल खाता रहेगा, उसके अन्दर में अशान्ति और दुख की अनुभूति होती रहेगी। शान्ति, सुख और अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति भी नहीं हो सकती क्योंकि सुख-शान्ति-आनन्द का सागर परमपिता परमात्मा शिव ही हैं और वे अपने आज्ञाकारी सपूत बच्चों को ही ये सुख-शान्ति-आनन्द वर्से में देता है। जो आज्ञाकारी सपूत बच्चा नहीं है, वह बापदादा के वर्से का अधिकारी नहीं बन सकता है।

बापदादा की दूसरी आज्ञा है – **''देह सहित देह के सभी सम्बन्ध, देह के साथ सम्पर्क रखने वाली वस्तु और व्यक्तियों को भूलकर एक मुझ बाप को ही याद करो''** अर्थात् इन सब विकारी मायावी बातों से अपना बुद्धियोग हटाकर एक बापदादा के साथ ही बुद्धियोग जोड़ो। एक बाप दूसरा न कोई। अन्य सर्व विकारी, मायावी कलियुगी व्यक्ति और वैभव से लगाव-मुक्त बनो। एक बाप की लगन में समा जाओ। ''नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा।'' जो बच्चा बापदादा की लगन अथवा प्यार में समाया हुआ होगा, वह ज़रूर बापदादा की हर आज्ञा अर्थात् श्रीमत को पालन कर बापदादा को कदम-कदम पर फॉलो कर बाप समान बनने का ही पुरुषार्थ करेगा। ऐसा आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बच्चा ही बापदादा के दिल तख्तनशीन बन जाता है क्योंकि बापदादा उस सच्चे से सदा सन्तुष्ट रहता है। ऐसा बच्चा ही फिर भविष्य 21 जन्मों के लिए राजाई पद का अधिकारी बन जाता है अर्थात् राजघराने में आने का अधिकारी बन जाता है अथवा ऐसे ही कहें कि ऐसा बच्चा बापदादा को कदम-कदम पर फ़ालो कर हर श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन कर ज़रूर ''पास विद् ऑनर'' बन नम्बरवन में आ ही जायेगा। अब सोचना चाहिए कि समय क्या दिखा रहा है। सृष्टि के चारों ओर नज़र घुमाकर देखते हैं तो देश-विदेश में लड़ाई झगड़े ही नज़र आते हैं अर्थात् दुःख-अशान्ति अपनी अति सीमा पर पहुँच गई है।

कोई भी व्यक्ति सच्ची अन्दर की शान्ति अनुभव नहीं कर रहा है। तो ऐसी दुःखी, अशान्त, विकारी, मायावी, कलियुगी दुनिया अब कहाँ तक चल सकेगा! ऐसे मानों कि ये अन्तिम सीमा पर आ गई है। ये कलियुगी पुरानी दुनिया गई कि गई। अब ये परिवर्तन हो रहा है। तो जब इन सभी कलियुगी पुरानी दुनिया के व्यक्ति, वैभव आदि मिट्टी में मिल जाने वाले हैं तो उनकी तरफ अपना बुद्धि का लगाव रखना समझदारी नहीं है। ऐसे समय पर जब हम बच्चों को ये निश्चय है कि निराकार परमपिता परमात्मा शिव अब इस सृष्टि पर पधारे हुए हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर हम बच्चों को अविनाशी ज्ञान और योग की शिक्षा देकर भविष्य सतयुगी, निर्विकारी, सुख-शान्ति वाली दुनिया में 21 जन्मों की राजाई प्राप्त करा रहा है तो फिर हम थोड़े समय में जाने वाली इस पुरानी, कलियुगी, विकारी दुनिया के व्यक्तियों और वैभवों से लगाव क्यों रखें? क्यों नहीं एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़कर, उनसे ही सच्ची प्रीति जोड़कर उनकी लगन में मगन होकर, उनकी ही श्रीमत पर चलकर, उनके सर्व गुणों और शक्तियों के वर्से के अधिकारी बनकर ''पास विद ऑनर'' बन नम्बरवन में आ जायें! अभी भी इस छोटे से पुरुषोत्तम-मरजीवा जन्म में निरन्तर फ़रिश्ते के समान सदा खुशी में रहेंगे अर्थात् निरन्तर सुख-शान्ति की अनुभूति करेंगे और भविष्य 21 जन्मों तक भी सुख-शान्ति-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

बापदादा कहते हैं कि अभी भी ''टू लेट'' की घण्टी नहीं बजी है परन्तु थोड़े ही समय में ये घण्टी बजने वाली है। तो सावधान हो जाना चाहिए, अलबेला नहीं रहना चाहिए। ''बीती को बीती'' कर दो। अब दृढ़ संकल्प रखकर नम्बरवन में आने का श्रेष्ठ लक्ष्य रखकर पुराने स्वभाव-संस्कारों को एक धक से परिवर्तन कर पुरानी कलियुगी अनेक व्यर्थ बातों से किनारा कर नष्टोमोहा बनकर एक बाप के हाथ में हाथ दे दो अर्थात् निरन्तर बापदादा के स्मृति स्वरूप बनो। बापदादा के हाथ में हाथ देना अर्थात् बापदादा के

निरन्तर साथ का प्रेक्टिकल में अनुभव करना, बापदादा के साथ सर्व सम्बन्धों का प्यार प्रेक्टिकल में अनुभव करना। बापदादा को निरन्तर अपना साथी बनाकर अथवा उसको अपने साथ कम्बाइण्ड समझकर सर्व कार्य करते रहना। बस तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं संग खाऊं, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से रास रचाऊं, तुम्हीं संग सो जाऊं। तुम्हीं संग सो जाऊं का अर्थ है कि रात को सोते समय अपनी आत्मिक स्मृति और बापदादा की स्मृति स्वरूप बनकर बापदादा के साथ मीठी-मीठी बातें अथवा रूह-रिहान करते करते सो जाना। तो नींद भी अच्छी गहरी होगी और स्वप्न भी अच्छे ज्ञान-योग युक्त आयेंगे। सवेरे उठेंगे तो बहुत फ्रेश होंगे, कोई थकावट नहीं होगी।

ऐसे बापदादा के निरन्तर साथ का प्रेक्टिकल में अनुभव करना है अर्थात् सदा हाथ में हाथ का कनेक्शन जोड़ना है अर्थात् बापदादा के सदा स्मृति स्वरूप का स्विच ऑन रखेंगे तो सदा डबल लाइट रहेंगे। डबल लाइट बनने से माया का अंधेरा खत्म हो जायेगा अर्थात् माया का कभी कोई वार नहीं होगा। जैसे अंधेरे में लाइट का स्विच ऑन करते हैं तो अंधेरा मिट जाता है। यहाँ भी बापदादा की स्मृति का स्विच ऑन करो तो माया का अंधेरा खत्म हो जायेगा अर्थात् माया भाग जायेगी। राम साथ है तो रावण सामने आ नहीं सकता है। अगर राम के साथ का कनेक्शन कटा हुआ है अर्थात् स्विच ऑन नहीं है तो रावण अपना मायावी अंधेरा फैला देगा और आत्मा अंधेरे में ठोंकरें खाकर दुःखी-अशान्त हो जायेगी। इसलिए निरन्तर राम अर्थात् बापदादा का साथ में अनुभव करना चाहिए अर्थात् अपनी आत्मा की स्मृति का कनेक्शन बापदादा के साथ जोड़कर स्मृति स्वरूप रहना चाहिए, तो माया के अनेक प्रकार के जो विघ्न आते हैं वह सेकण्ड में हट जायेंगे, ठहर नहीं सकेंगे अर्थात् सभी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

इसलिए निरन्तर आत्मिक स्मृति और बापदादा के साथ की स्मृति

स्वरूप रहने का बार-बार ध्यान देना चाहिए। इसमें अलबेलापन नहीं चाहिए। घण्टे दो घण्टे के बाद चेकिंग करते रहना चाहिए कि मैं स्मृति स्वरूप होकर कार्य कर रहा हूँ।

बापदादा ने ये मुरलियों में कई बार सुनाया है कि मैं सभी बच्चों के साथ हूँ और सभी बच्चों को देख रहा हूँ कि बच्चे सारे दिन में क्या क्या कर रहे हैं, कैसे चल रहे हैं। बापदादा की श्रीमत पर चल रहे हैं या अपनी मनमत पर या परमत पर चल रहे हैं। बापदादा ने ये भी मुरली में कहा है कि मेरे पास टी.वी. रखी है, मैं उसमें सारा दिन देखता रहता हूँ कि बच्चे क्या क्या करते हैं। अब ऐसे कब कोई स्थूल टी.वी. की बात नहीं है लेकिन बापदादा स्थूल चीज़ का उदाहरण देकर स्पष्ट करके याद दिला रहे हैं कि अलबेले मत बनो। अब टाइम बहुत थोड़ा है इसलिए अपना संकल्प , समय और श्वास व्यर्थ मत करो। इनको बापदादा की श्रेष्ठ स्मृति और ईश्वरीय सेवा में सफल करो।

तो हमको भी विचार आना चाहिए कि बापदादा यहाँ हमारे साथ में बैठे हुए हैं और हमको देख रहे हैं कि मैं अलबेला होकर तो नहीं चल रहा हूँ, टाइम वेस्ट तो नहीं कर रहा हूँ, अपना समय, संकल्प, श्वास व्यर्थ बातों में तो नहीं गँवा रहा हूँ। उनको श्रेष्ठ सेवा में और अपनी स्व-उन्नति की बातों में सफल कर रहा हूँ। मैं बापदादा की हर श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन कर रहा हूँ। अगर नहीं, तो मैं बापदादा का बच्चा, बच्चा नहीं हूँ और फिर बापदादा के गुणों और शक्तियों के वर्से का अधिकारी भी नहीं बन सकता हूँ और भविष्य में भी राजाई पद के वर्से का अधिकारी भी नहीं बन सकता हूँ। जो बच्चा बाप की आज्ञा अथवा फरमान पर वफादारी और ईमानदारी से चलता है, उसको ही तो बाप अपना वर्सा देगा ना! तो हमको ये विचार आना चाहिए कि अगर हमको ऊँच से ऊँच पद पाना है, पास विद् ऑनर बनना है, नम्बरवन में आना है तो मेरे में कोई डिफेक्ट नहीं होना चाहिए।

हर बात में परफेक्ट, श्रेष्ठ बनना चाहिए। इसके लिए बापदादा की हर श्रीमत को जरूर पालन करना ही है, तब ही परफेक्ट बन सकूँगा और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वर्सा पाने का अधिकारी बन सकूँगा। जो बच्चा दृढ़ संकल्प रखकर, अटेन्शन रखकर बार बार अपनी चेकिंग करता रहता है, वहीं सावधान रहकर, अपने को ऐसा श्रेष्ठ बनाकर श्रेष्ठ वर्से का अधिकारी जरूर बनायेगा। मुझे किसी भी परिस्थिति में बापदादा की हर श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन करना ही है। कुछ भी हो जाये, उसके लिए कितना भी सहन करना पड़े, माया कितने भी विघ्न डाले परन्तु हमको पीछे नहीं हटना है। गायन है "धरत परिये, धर्म न छोड़िये", "प्राण जायें पर वचन न जाये।"

तो यही है सहज तरीका, ऊँच-से-ऊँच पद पाने का। बापदादा को सदा साथ देखो और ध्यान रखकर उनकी हर श्रीमत पर चलते चलो। बाकी सब बापदादा के ऊपर छोड़ दो। किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। सदा खुशी में एकरस स्थिति में चलते चलो। माया से भी घबराओ नहीं, ये तो माया के पेपर्स हैं, जो अन्त तक आते ही रहेंगे। जैसे जैसे हम आगे बढ़ते जायेंगे, वैसे वैसे ये पेपर्स भी कठिन रूप में सामने आयेंगे। लेकिन सपूत आज्ञाकारी बच्चे उन पेपर्स से घबरायेंगे नहीं। वह तो मुस्कराते हुए कहेगा कि इन पेपर्स को आने दो, मैं पास होकर ही दिखाऊंगा। ऐसा बच्चा सदा अपने स्मृति में रहेगा कि मैं कौन हूँ, मैं सर्वशक्तिवान बापदादा का बच्चा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, बापदादा मेरे साथ है और मेरा साथी अर्थात् मददगार है। इसीलिए गायन है "जिसका साथी है भगवान उसको क्या रोकेगा आँधी और तूफ़ान ..।" इसलिए कैसा भी पेपर मेरे सामने आयेगा उसमें मेरी विजय निश्चित है। क्योंकि भगवान मेरा साथी है अर्थात् हर कार्य में बापदादा की मदद से सफलता मुझको मिलनी ही है। इसलिए निरन्तर बापदादा को साथ अनुभव करते, उसकी मोहब्बत में चलते चलो तो मेहनत नहीं करनी होगी, सहज ही हर कार्य में सफलता मिलती रहेगी। बाप की मोहब्बत में

रहना अर्थात् बापदादा के प्यार में समाये रहना। प्यार में समाने वाला बच्चा सदा आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, बाप की हर श्रीमत पर चलने वाला होता है और बाप समान बनने का पुरुषार्थ करता है।

ये भी याद रहे कि ये श्रेष्ठ स्वमान अन्दर का ईश्वरीय नशा है, बाहर से हमारे बोल में, चलन में दिखाने का नशा नहीं है। अगर कोई ऐसे बाहर का नशा दिखाता है तो उसको देहाभिमान कहा जाता है। इसका भी ध्यान रखना है कि मेरे में कोई अभिमान न हो। बिल्कुल निर्माण होना चाहिए। गुप्त पुरुषार्थी बन अन्दर ही अन्दर नम्बरवन का लक्ष्य रखकर दृढ़ संकल्प और अटेन्शन देने के माध्यम से सदा खुशी की अनुभूति करते हुए सदा उड़ती कला में रहना है। बाहर से बिल्कुल निर्माण होकर चलना है। ऐसे गुप्त पुरुषार्थी बन, निर्माण बन, सर्व का रिगार्ड रखकर चलना है। "पहले आप, पहले आप" करते हुए औरों को आगे बढ़ाना है। छोटे बड़े सबको रिगार्ड देते चलो। सदा अन्दर में ये भावना रखनी है "I am the most obedient servant." सदा ही अपने अन्दर में सेवा की भावना हो और सेवा के क्षेत्र में सभी को ईश्वरीय मर्यादापूर्वक सन्तुष्ट रखना है। बापदादा भी सन्तुष्ट रहे, स्वयं भी सन्तुष्ट हों और सारा ब्राह्मण परिवार भी हमसे सन्तुष्ट हो। किसी को भी दुख नहीं देना है। बापदादा के महावाक्य सदा याद रहें – **"न दुःख दो, न दुख लो।"** सुख दाता बाप के बच्चे हैं तो हमको भी सुखदाता बनकर सभी को सुख देना है। अपने अन्दर में किसी के प्रति नाराज़गी की भावना नहीं होनी चाहिए। सभी के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना रखनी है कि ये भी बापदादा का सपूत बच्चा बनकर ऊँच पद पा ले। किसी से बदला नहीं लेना है, स्वयं को बदलना है। ऐसे नहीं कि ये बदले तो मैं बदलूँ। नहीं, वह बदले या न बदले लेकिन मुझको बदल कर दिखना है। "स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन।" कोई कैसा भी हो, स्वयं को उनके साथ चलने की विधि सीखनी है। कोई क्या भी करता हो, बार-बार विघ्न

की शक्ति से मीठी दृष्टि वृत्ति से उस परिस्थिति को पार करो। स्नेह क्या नहीं कर सकता है और वह भी ये ईश्वरीय स्नेह है, वह क्या नहीं कर सकता है। परमात्म प्यार पत्थर को भी पानी बना सकता है, पहाड़ को भी रुई जैसा नरम बना सकता अर्थात् दुश्मन को भी दोस्त बना सकता है। तो स्नेह से, गम्भीरता से, शान्ति से, धैर्यता से, सहनशीलता से काम लेकर हर परिस्थिति को पार करना है। क्रोधमुक्त रहकर परमात्म-प्यार से ही काम लेना है।

आप सबने यज्ञ की कहानी तो सुनी होगी कि किस तरह प्यारे ब्रह्मा बाबा का समाज में कितना सम्मान था, राजायें महाराजायें भी उनका सम्मान करते थे, सभी उनको धार्मिक व्यक्ति समझ सम्मान देते थे लेकिन जब इस ईश्वरीय मार्ग में चले तो थोड़े समय बाद ही यज्ञ में विघ्न पड़ने शुरू हो गये। जो व्यक्ति उनका सम्मान करते थे, वही उनका विरोध करने लगे, दोषारोपण करने लगे, गालियाँ देने लगे तो भी ब्रह्मा बाबा अपने अटल निश्चय में रहे कि सर्वशक्तिवान कल्याणकारी शिव बाबा हमारे साथ है, तो ये विघ्न सब हट जायेंगे। विरोध करने वालों, गालियाँ देने वालों के प्रति भी रहम की भावना रखी, उनके कल्याण की भावना रखी। इतना ही कहा कि ये भी बिचारे अन्जान हैं, निर्दोष हैं, समझते नहीं हैं कि ये किसका कार्य है इसलिए उनके प्रति भी रहम की भावना रखी। समझा कि ये माया के पेपर्स हैं, हमारी परीक्षा लेने के लिए हैं और अन्ततः समाप्त हो ही जायेंगे।

तो हम बच्चों को भी ऐसे बापदादा को फ़ालो करते हुए बाप समान बनना है। ऐसे विघ्नों के बीच भी सदैव मुस्कराता हुआ चेहरा हो, एकरस स्थिति हो। बापदादा हम सभी बच्चों के चेहरे सदा फ़रिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहजयोगी, सहज पुरुषार्थी के रूप में देखना चाहते हैं। कैसी भी बात हो लेकिन चेहरा सदा शीतल, रूप मुस्कराता हुआ, गंभीर और रमणीक दोनों के बैलेन्स का हो। दाता के बच्चे

रूप बन सामने आता हो लेकिन मुझे क्या करना है, वह सोचना है। दूसरे को न देख, अपनी स्व-उन्नति का ध्यान रखकर श्रीमत के अनुसार चलना है। वह अगर पहाड़ बनकर सामना करता है तो मुझे किनारा करना है। पहाड़ कभी नहीं हटता है। ये बदले तो मैं बदलूँ अर्थात् ये पहाड़ हटे तो मैं आगे बढ़ूँ। न पहाड़ हटेगा, न आप अपनी मंजिल पर पहुँच सकेंगे। इसलिए अपनी मंजिल पर पहुँचने के लिए किनारा करके चलना है। उस विघ्न स्वरूप आत्मा के प्रति सोचने में अपने समय और शक्ति को व्यर्थ नहीं गंवाना है। अपने मन-बुद्धि को इन बातों से खाली रखना है। जबकि नम्बरवार बनने हैं तो स्टेज में भी नम्बरवार अवश्य होने हैं लेकिन हमको नम्बरवन बनना है, उसके लिए हमको स्वयं ही सोचना है और स्वयं को ही देखना है। इसलिए स्वयं परिवर्तन होकर उन विघ्न रूप आत्माओं के प्रति भी शुभ भावना-शुभ कामना रखकर चलना है। सत्य की विजय होने में समय लगता है लेकिन अन्त में विजय उनकी ही होती है। शुभ भावना से अगर उसको परिवर्तन कर सकते हो तो करो। नहीं तो उसको इशारा देकर अपनी ज़िम्मेवारी खत्म कर, अपने मार्ग पर आगे बढ़ते जाओ। ये विघ्न भी हमको अनुभवी बनाने के लिए आते हैं और अनुभवी कभी हार नहीं खा सकता। अपनी मन्सा शक्ति से माया का पर्दा हटा दो तो अन्दर छिपा हुआ कल्याण का दृश्य दिखाई देगा। बस एक बल, एक भरोसे पर दृढ़ संकल्प रखकर बापदादा के साथ चलते रहो। कुछ भी हो जाये हमको नम्बरवन बनना ही है, ऐसे संकल्प रूपी पाँव अंगद के समान मज़बूत रखना है, हिलना नहीं है, कमज़ोर नहीं बनना है लेकिन बाहर से कोई दिखावा नहीं करना है। गुप्त रूप से अपने अन्दर शक्तियों और गुणों को भरते जाना है और अपने ईश्वरीय स्वमान में रहकर सदा निश्चिन्त रहना है। किसी को भी कड़वा वचन नहीं बोलना है। बापदादा का फरमान है, कम बोलो, मीठा बोलो, प्यार से बोलो, धीरे बोलो। तो बापदादा की इस श्रीमत को पालन करते हुए सबको स्नेह दो। कोई भी परिस्थिति सामने आ जाये तो भी स्नेह

आज बड़ी बड़ी दादियाँ आगे लाइन में नम्बरवन में आने वाली, पास विद् ऑनर होने वाली, सभी के आगे चल रहीं हैं और बापदादा के हर कदम को फॉलो कर बापदादा की स्मृति स्वरूप बनकर औरों को भी स्मृतिस्वरूप बनाने के लिए हर प्रकार की ईश्वरीय सेवा कर रही हैं। ''बलिहारी इन विघ्नों की, जिन्होंने नष्टोमोहा बनाया''

ये भी याद रहे कि ऐसा कोई अन्दर में अभिमान नहीं आना चाहिए कि हमने ऐसा किया जिससे ये विघ्न हट गये, हमारी शक्ति के आगे माया ठहर नहीं सकती, मैं ही ऐसा विघ्न -विनाशक महारथी हूँ आदि आदि। यह 'मैं-मैं' सोचना, बोलना, अथवा करना देह अभिमान की लाइन में ही आता है, जो नम्बरवन विकार कहलाता है। तो इस बात में सावधान रहना चाहिए और ज्ञान युक्त और योगयुक्त बनकर गहराई से सोचना चाहिए कि माया को भगाने की शक्ति किसमें है? यह शक्ति एक ही सर्वशक्तिवान बाप में है। शक्तिदाता भी वही हैं। जब हम बच्चे ऐसे सर्वशक्तिवान बाप का हाथ और साथ का अनुभव करते हुए निरन्तर स्मृति स्वरूप का स्विच ऑन रखते हुए चलते हैं और सपूत बच्चे बनकर सदा बापदादा की श्रीमत पर चलते हैं तो बापदादा हम बच्चों को जैसे कि वर्से में सर्व गुण और सर्व शक्तियाँ दे देते हैं, जिससे हम डबल लाइट बन जाते हैं, जिस कारण माया का अंधेरा अथवा विघ्न सब दूर हो जाते हैं। ये सर्वशक्तियों की देन बापदादा की है, अथवा सर्वशक्तियों का दाता बापदादा ही है। वही हमें हर बात में सफलता दिलाता है। सफलता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, लेकिन जो सपूत आज्ञाकारी हर श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन करने वाले बच्चे हैं, उन्हों का ही ये अधिकार है। लेकिन हमको स्वयं निश्चिन्त होकर गुप्त रीति से अपने अन्दर में चेकिंग करते रहना चाहिए कि मैं बापदादा का ऐसा सपूत बच्चा हूँ, अधिकारी बच्चा हूँ? बाहर का कोई दिखावा नहीं रखना है, बाहर से बिल्कुल निर्माण, बिल्कुल साधारण रहना है। ''सिम्पल और सेम्पल।''

सदैव दाता बनना है। कोई कुछ भी देवे, बुरा भी देवे लेकिन हम बड़े से बड़े बाप के बच्चे बड़ी दिल वाले बनें। उसने बुरा भी अगर दे दिया तो हम बड़ी दिल वाले उसकी बुराई अपने दिल में स्वीकार न कर दाता बन उसको स्नेह दें, सहयोग दें, शक्ति दें। रहमदिल बनकर कोई न कोई गुण अपनी स्थिति द्वारा उसको सौगात में दे देना चाहिए। दिल में उस आत्मा के प्रति और ही स्नेह इमर्ज करना चाहिए, जिस स्नेह की शक्ति से वह स्वयं ही परिवर्तित हो जाये। उसकी बुरी बातों को समाने की शक्ति से समा लो।

वास्तव में देखा जाये कि बापदादा के हम सपूत, वफ़ादार, ईमानदार बच्चों के सामने जो भी बातें आती हैं, उन सब में हम बच्चों का कल्याण ही समाया हुआ है। ये विघ्नों रूपी पेपर्स जो भी आते हैं, उनमें भी हमारा कल्याण ही समाया हुआ है, ये पेपर्स हमको आगे बढ़ाने के लिए आते हैं, हमको अनुभवी बनाने के लिए आते हैं, सहजयोगी और सहज पुरुषार्थी बनाने के लिए आते हैं तो इसमें घबराने की क्या बात है। और ही पेपर्स आने दो तो हम अपनी स्थिति को चेक करते हुए अपना कदम आगे बढ़ाते हुए नष्टोमोहा-स्मृति लब्धा बन जायें।

जैसे शुरू में हैदराबाद में जब मातायें बहनें बापदादा के इस ज्ञान-योग की शिक्षाओं में चलने लगीं, तब अनेक प्रकार के विघ्न भी सामने आये, उन के सम्बन्धियों की तरफ़ से भी रुकावटें पड़ीं, पिकेटिंग हुई, उन्होंने मार खाई, बहुत कुछ सहन करना पड़ा। तो जैसे जैसे ये विघ्न आये वैसे वैसे इन माताओं बहनों की दिल अपने सम्बन्धियों से हटती गई अर्थात् उनसे मोह की रग टूट गई और एक बापदादा की तरफ़ बुद्धि की लगन जुट गई। ऐसे ही कहें कि सहज ही नष्टोमोहा स्मृति लब्धा बन गईं। सहज ही कलियुगी बातों, व्यक्ति और वैभवों से न्यारी और एक बापदादा की प्यारी बन गईं। कितना इन विघ्नों में कल्याण समाया हुआ था जो बिल्कुल सहज पुरुषार्थी बन एक प्रभु प्यार में चल आगे बढ़ती रहीं। वही मातायें बहनें

बाहर से बिल्कुल निर्माण, साधारण और अन्दर से ऊँच से ऊँच स्थिति वाले, शक्तिशाली वायब्रेशन्स वाले, तेजस्वी मूर्त होकर रहना है।

जैसे साकार ब्रह्मा बाबा कितना श्रेष्ठ स्थिति वाले तेजस्वी मूर्त, पावरफुल वायब्रेशन्स वाले थे लेकिन बाहर से कितना निर्माण, साधारण व्यक्ति होकर चलते थे। शिव बाबा का रथ बनने के पहले कितने महान व्यक्तित्व वाले थे। कलकत्ते के सभी जवाहरियों का प्रेसीडेण्ट था, बड़े बड़े राजा महाराजायें भी उनको सम्मान करते थे। जब शिव बाबा का बन गया तब एक धक से ऐसी राजाई छोड़ दी तो कितना निर्माण बन गया, साधारण जीवन में आ गया। छोटी छोटी बच्चियों को भी रिगार्ड देकर आगे बढ़ाया। अपना तन-मन-धन सब कुछ ईश्वरीय सेवा अर्थ माताओं बहनों के आगे अर्पित कर दिया। अपनी ड्रेस भी बिल्कुल साधारण रखी। पहले अपने बिजनेस में था तो सूट-बूट-कोट पहनता था और गले में नेक-टाई लगी रहती थी। लेकिन जब शिव बाबा का रथ बना तो क्या ड्रेस पहनी — धोती कुर्ता। कुर्ते के गले का कॉलर भी नहीं रखा। इतना निर्मान, सिम्पल और सेम्पल बनकर रहा।

हम बच्चों को भी ऐसे उदाहरण स्वरूप ब्रह्मा बाबा को फॉलो कर ऐसा सिम्पल और सेम्पल बनना है। ऐसा दृढ़ संकल्प कर बापदादा को कदम कदम पर फ़ालो करना है। ''फ़ालो फ़ादर'' अर्थात् दोनों बाप, शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा को पूर्ण रूप से फ़ालो करना है। शिव बाबा को फ़ालो करना अर्थात् सदा अशरीरी स्थिति में रहना और ब्रह्मा बाबा को फ़ालो करना अर्थात् सदा अव्यक्त स्थिति में रहना। चलते फिरते, खाते पीते हर कार्य करते हुए फ़रिश्ता स्वरूप बनकर रहना। इन दोनों स्थितियों में रहना ही फ़ालो फ़ादर करना है। इससे नीचे व्यक्त भाव, देहभान में नहीं आना है। बापदादा ने ये आज्ञा की लकीर खींच दी है। इससे बाहर नहीं जाना है अर्थात् व्यक्त भाव में नहीं आना है। अगर इस लकीर से बाहर निकलते हैं

अर्थात् व्यक्त भाव में आते हैं तो जैसे कि बाप की अवज्ञा करते हैं तो फिर रावण के हाथ में आ जाते हैं और दुःखी हो जाते हैं। फिर परेशान भी होते हैं और पश्चाताप भी करते हैं।

कई कहते हैं कि हमने तो साकार ब्रह्मा को तो देखा ही नहीं, तो हम बाबा को कैसे फॉलो करें? लेकिन सभी ने ब्रह्मा बाबा का फोटो तो देखा ही है। पहले वाला बिजनेस के समय वाला फोटो भी देखा ही होगा और बाद का फ़ोटो भी देखा ही है। उनके चरित्रों का किताब भी पढ़ा ही होगा। उनकी शिक्षायें जो मुरलियों द्वारा मिली हुई हैं, वे भी सुनते ही रहते होंगे। तो अब उनकी शिक्षाओं को अपने में धारण करना है। बाकी तो जब अव्यक्त बापदादा पधारते हैं तो सामने स्टेज पर ब्रह्मा बाबा का सम्पन्न स्वरूप तो सभी देखते ही हैं। तो ध्यान से गहराई में जाकर बाबा को देखना चाहिए कि कैसे बाबा बैठे हैं, कैसे देखते हैं, कैसे बोलते हैं, कैसे सबको दृष्टि देते हैं, उनके नैन-चैन कैसे हैं, कैसे धीरे-धीरे बोलते हैं, कैसे सुनते हैं, कैसे मुस्कराते हैं, कैसे अव्यक्त स्थिति में न्यारेपन की स्टेज में स्थित होकर सभी बातें करते हैं। हमको भी ऐसे बापदादा को प्रेक्टिकल में फ़ालो कर बाप समान बनना है।

अव्यक्त बापदादा कभी ऐसी कोई बात सुनाते हैं, जो सारी सभा ज़ोर से हँस पड़ती है। उस समय भी बापदादा को गहराई से देखना चाहिए कि बापदादा उस समय स्वयं ज़ोर से हँसता है? कभी भी बापदादा को ज़ोर से हँसते हुए देखा है? कभी नहीं देखा होगा। सदैव मुस्कराते रहते हैं। तो हमको भी ऐसे बापदादा को फ़ालो करना चाहिए। हमको भी ज़ोर से कभी नहीं हँसना चाहिए, सदैव मुस्कराते रहना चाहिए। साकार बाबा ने भी एक मुरली में कहा ''जोर से हँसना भी विकार है, पाप है।'' तो फिर हमको इस बात पर भी ध्यान देकर, इस श्रीमत को भी पालन करना चाहिए। हरेक स्वयं को चेक करे कि मैं सारे दिन में कितनी बार जोर से हँसता हूँ, हँसती हूँ।

हैं, वे ज़रूर अपने में धारण कर लो। बाकी औरों की व्यर्थ बातों को अपने में धारण नहीं करो, उनकी व्यर्थ बातों को छोड़ दो। तो सदा दृढ़ संकल्प से ध्यान रखकर इन सभी बातों पर पूरा-पूरा नियन्त्रण रखना है। अपनी सभी कर्म इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखकर उनका राजा बनना है अर्थात् स्वराज्य प्राप्त करना है। इस लिए मुख के ऊपर भी पूरा नियन्त्रण चाहिए। बापदादा की श्रीमत है ''मीठा बोलो, प्यार से बोलो, धीरे बोलो, कम बोलो और ज़ोर से न हँसो।'' सदा मुस्कराते रहो। तो सदा 'फरिश्ते के समान अव्यक्त स्थिति में रहकर गम्भीर बन मुस्कराते हुए इस श्रीमत को पालन करना है। अगर इस अन्तर्मुखता को धारण नहीं कर सकते अर्थात् बाह्यमुखता को कण्ट्रोल नहीं कर सकते तो फिर अन्दर की सूक्ष्म इच्छायें, नाम-मान-शान, पोज़ीशन की अनेक प्रकार की सूक्ष्म इच्छायें जो उत्पन्न होती हैं, उनको कैसे कण्ट्रोल कर सकेंगे। तो अटेन्शन रखकर कण्ट्रोलिंग पावर को यूज़ करो। ये कण्ट्रोलिंग पॉवर भी कहाँ से प्राप्त होगी? बापदादा से। क्योंकि शक्तिदाता बाप ही है। इसलिए बापदादा का साथ और हाथ पकड़ते हुए, उनकी स्मृति स्वरूप का स्विच ऑन रखते हुए, उनकी हर श्रीमत को पालन करने वाला आज्ञाकारी, वफ़ादार, ईमानदार सपूत बच्चा बनकर चलते रहो तो सहज ही सर्वगुण, सर्व शक्तियाँ आपको प्राप्त हो जायेंगी, मास्टर सर्वशक्तिवान बन जायेंगे। इसमें ये कण्ट्रोल करने की शक्ति भी प्राप्त हो जायेगी, जिससे सहज इन बाह्यमुखता की बातों तथा अनेक प्रकार की सूक्ष्म इच्छाओं पर कंण्ट्रोल कर विजय प्राप्त कर सकेंगे। ''इच्छामात्रम्अविद्या'' की स्टेज पर सदा ''तृप्तात्मा'' बन जायेंगे। ये है सभी बातों की एक ही दवाई अर्थात् रिमेडी (Remedy) कि बस प्रभु प्यार अथवा लगन में मगन रहो। एक बाप दूसरा न कोई। बस सदा तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से उठूँ, तुम्हीं संग चलूँ, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं संग खेलूँ, तुम्हीं से बहलूँ, तुम्हीं संग रास रचाऊं, तुम्हीं को देखूँ। ऐसी लगन में रहने वाले बच्चे सदा ही व्यर्थ बातों से न्यारे और बापदादा के प्यारे बन जाते हैं अर्थात् बापदादा

उसी अनुसार हम कितने नये विकर्म करते हैं। एक तरफ तो हम योग बल से विकर्म विनाश करते हैं और दूसरी तरफ नये विकर्म बढ़ाते रहते हैं, तो फिर विकर्मों का खाता कब समाप्त होगा। अब जब कि थोड़े ही समय में ''टू लेट'' की घण्टी बजने वाली है तो इन छोटी-छोटी बातों पर भी अटेन्शन देना चाहिए, अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को प्रयोग करना चाहिए।

कोई-कोई सोचते हैं कि हँसने में क्या है, ये कोई पाप थोड़ेही है। बापदादा कहते हैं कि सदा खुशी में नांचते रहो, तो हम भी हँसते हुए सदा खुशी में रहते हैं, इसमें हमने कौन-सा पाप किया। परन्तु हमको ये सोचना चाहिए कि ये मुरली में किसके महावाक्य हैं! सत्य बाप के सत्य महावाक्य हैं। यह हरेक को पहले तो निश्चय होना चाहिए कि जो भी मुरली में महावाक्य हैं, वे सत्य बाप ही सुना रहे हैं और उनकी श्रीमत पर हमको चलना ही है, इसमें ही हमारा कल्याण है।

अगर इस बात पर भी आप गहराई में जाकर विचार करेंगे तो ज़रूर आप अनुभव करेंगे कि ज़रूर ज़ोर से हँसना भी पाप है। जिस समय सारी सभा में बैठे हुए जो भी भाई-बहनें ज़ोर से हँसते हैं, उस समय आप न्यारे होकर अव्यक्त होकर उन हँसने वाले भाई-बहनों के चेहरों को देखो तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि वे अव्यक्त स्थिति में नहीं हैं। अव्यक्त स्थिति वाले तो सदा गम्भीर रहते हैं, सदा मुस्कराते रहते हैं, जोर से नहीं हँसते हैं। जो अव्यक्त स्थिति में नहीं हैं वे ज़रूर व्यक्त भाव में हैं अर्थात् देहभान में हैं। तो उनसे ज़रूर रावण कोई न कोई भूल या पाप करा ही लेता है।

तो अटेन्शन! उस समय भी आप औरों को न देखकर सामने स्टेज पर बापदादा को देखो कि उस समय क्या बापदादा ज़ोर से हँसता है? हमको तो एक बापदादा को ही फॉलो करना है। ''फ़ालो फ़ादर ओनली।'' बापदादा ने कभी भी नहीं कहा है कि फ़ालो सिस्टर्स-ब्रदर्स। नहीं, सी फ़ादर ओनली, फ़ालो फ़ादर ओनली। हाँ, अगर किन्हीं भाई-बहनों में अच्छे गुण

के दिलतख्तनशीन बन जाते हैं, जिस कारण बापदादा भी ऐसे बच्चों पर बलिहार जाते हैं और उन्होंकी सर्व श्रेष्ठ मनोकामनायें पूर्ण करते हैं।

बापदादा ने 98वें वर्ष में भी आज्ञा दी थी कि ये वर्ष मुक्ति वर्ष के रूप में मनाओ। तो इन सभी व्यर्थ बाहरमुखता की बातों से अगर मुक्ति चाहते हैं तो सदा सर्व सम्बन्ध एक बाप से ही जोड़कर उनकी श्रीमत पर चलते रहना चाहिए। बस सदा एक बाप का ही साथ और हाथ हो अर्थात् सदा बापदादा का ही संग हो। भले सारा दिन अपने कार्य में, अपने ब्राह्मण परिवार के संग में रहकर कार्य करना पड़ता है तो भी ब्राह्मण जीवन की मर्यादाओं के अनुसार ही अपना संकल्प, श्वास और समय, बापदादा की याद और सेवा में सफल करते हुए कार्य किया और फिर न्यारा और बाप का प्यारा होकर रहना है। कहाँ भी अपना समय व्यर्थ नहीं करना है। ये ब्राह्मण जन्म हुआ अर्थात् नये जन्म में पुराना आसुरी स्वभाव खत्म। ब्राह्मण जीवन अर्थात् जो ब्रह्मा बाप का हर कदम, वह हम ब्राह्मणों का कदम। ब्राह्मणपन की नेचर ही है - दैवीगुण स्वरूप, सर्वशक्ति स्वरूप।

इस बात पर भी अटेन्शन देना चाहिए कि हमारा संग एक बापदादा के साथ है अर्थात् हमने अपना मित्र (Friend) भी बापदादा को बनाया है या अन्य। सखा-सखी (Friend) बनाया है। ऐसे कई हैं, जो अपने सखे-सखियों की कम्पनी के सिवाए रह नहीं सकते। सदैव उन्होंकी ही कम्पनी में रहते हैं। सदा आपस में बैठेंगे, उठेंगे, खायेंगे-पियेंगे, हँसेंगे-बहलेंगे, इधर-उधर की बातें सुनेंगे, सुनायेंगे, साथ में ही घूमेंगे और रास्ते पर भी हँसते-बहलते बाहरमुखता की ही बातें करते हुए जायेंगे। इसको कहा जाता है – संगदोष। ऐसे संग (Company) में रहते बापदादा के साथ और हाथ का अनुभव नहीं कर सकते हैं। बापदादा की स्मृतिस्वरूप का अनुभव नहीं कर सकते और न बापदादा की श्रीमत को पूर्ण रूप से पालन कर सकते हैं। ये अव्यक्त स्थिति में भी नहीं रह सकते हैं। सदैव व्यक्त भाव, देहाभिमान में

रहकर बाहर के नशे में रहकर हँसते-बहलते बाहर की खुशी में ही चलते रहेंगे। उन्होंको आन्तरिक खुशी अर्थात् अतीन्द्रिय सुख नहीं रह सकता। अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति तो आनन्द के सागर बाप से ही प्राप्त हो सकती है। जबकि बाप के साथ की स्मृति ही नहीं हैं अर्थात् बाप का संग ही नहीं है, स्मृति का स्विच ऑन ही नहीं है, कनेक्शन ही नहीं है, तो अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति कैसे हो सकती है। वे अपने को और ही उलझन में अनुभव करते रहेंगे। अन्दर की सच्ची शान्ति और सुख की अनुभूति नहीं रहती। उनके संकल्प, श्वास, समय भी व्यर्थ जाता है, ईश्वरीय याद और सेवा में सफल नहीं होते, क्योंकि अपने बाह्यमुखता की कम्पनी में संकल्प, श्वास और समय सब व्यर्थ गँवाते रहते हैं।

ये भी समझना चाहिए कि दिन है तो रात नहीं है और अगर दिन नहीं है तो ज़रूर रात है। ज्ञान सूर्य बाप अथवा "राम" साथ है तो आत्म स्मृति की रोशनी (Light) अवश्य आ जाती है। अगर राम साथ नहीं है तो ज़रूर "रावण" साथ में है अर्थात् माया का अंधेरा है। ऐसी आत्मायें मायावी अंधेरे में रहकर ठोकरें ही खाती रहती हैं। ऐसी आत्माओं को पता भी नहीं पड़ता की हम मायावी अंधेरे में चल रहे हैं क्योंकि माया बड़े मीठे-मीठे रूप धारण कर उनके सामने आती है और उनको बहलाती रहती है। उनके दिलपसन्द व्यक्ति, वैभव आदि उनके सामने लाकर आकर्षित करती है और वे आत्मायें आकर्षित होकर बड़ी खुशी में नाचने लगते हैं। ऐसे समझते हैं कि हमको बड़ा अच्छा संग मिला है, हमारे जैसा भाग्यशाली कोई मुश्किल ही होगा। जैसे कोई शराब पिया हुआ व्यक्ति इतना शराब के नशे में चढ़ जाता है और समझता है कि मेरे जैसा खुशनशीब दुनिया में कोई नहीं है, बड़े अभिमान में होता है। जब शराब का नशा उतर जाता है तब अपने को बड़ा परेशान अनुभव करता है और फिर पश्चाताप करता है। यहाँ भी माया के मीठे-मीठे रूपों में फंसने वाली आत्मायें समझती हैं कि हम बड़े

भाग्यशाली आत्मायें हैं जो हमको ऐसा संग मिला है, जो उन सखे-सखियों से सारा दिन हंसते-बहलते खुशी में रहते हैं, सारा दिन बहुत अच्छा बीतता है। बहुत अच्छे-अच्छे वैभव हमारे सामने आते हैं, बहुत अच्छा-अच्छा भोजन मिलता है, बहुत अच्छी-अच्छी सौगातें मिलती हैं। बहुत भाई-बहनों का हमारे से प्यार है। ऐसे अनेक मायावी मीठे-मीठे रूपों के संग में रहते बड़े अभिमान में रहते हैं। परन्तु जब कोई कारणवश ऐसे सखों-सखियों का संग न मिला, अच्छा भोजन न मिला, किसी ने रिगार्ड नहीं दिया तो दिल में मायूसी आ जाती है, खुशी गायब हो जाती है। अगर किसी ने थोड़ा अपमान किया तो क्रोधवश कड़वे वचन बोलने लगेंगे। फिर तो खुशी गायब हो जायेगी अर्थात् अन्दर का सुख-शान्ति नहीं रहता। ऐसे मायावी मीठे-मीठे रूपों में फंसने के कारण अन्त में ठोकरें खाकर दु:खी अशान्त हो जाते हैं। फिर परेशान भी होते हैं और पश्चाताप भी करते हैं।

इसलिए इस संगदोष से अपने को सदैव बचाना चाहिए। यह संगदोष बड़ा खतरनाक है, जो बहुत अलबेला बना देता है, समय भी व्यर्थ जाता है। संकल्प-स्वास सभी व्यर्थ के खाते में चले जाते हैं। फिर अन्त में न इधर के रहते और न उधर के रहते हैं अर्थात् न बाप की समीपता का अनुभव कर शक्तिशाली बनते हैं और न उन सखे-सखियों का संग भी स्थाई रहता है।

इसलिए ऐसे संग से सदैव बचना चाहिए, सावधान रहना चाहिए। अगर कोई का संग करना हो तो ऐसे कोई अच्छी पुरुषार्थी आत्मा का संग हो, जो आपस में एक दूसरे को सावधान करते हुए स्व-उन्नति में आगे बढ़ें और बढ़ायें, ज्ञान और योग की पाइन्ट्स में एक-दूसरे को रुचि पैदा करें, साइलेन्स की शक्ति (मनोबल) को बढ़ाने में एक-दूसरे की उमंग-उत्साह दिलायें, एक-दूसरे को हिम्मत दिलायें आत्म-विश्वास को बढ़ायें। एक दूसरे को बापदादा की तरफ़ खींचकर प्रभु प्यार में लायें। कहाँ भी व्यर्थ बातों में

समय बर्बाद न करें। बस ईश्वरीय याद और सेवा में रहें। आपस में घूमने जायें तो भी बाबा की याद में साइलेन्स में जायें। खाने पर साथ में बैठें तो भी बाबा की याद में रहकर भोजन स्वीकार करें क्योंकि यह श्रीमत है, जिसको पूर्ण रूप से पालन करना बहुत ज़रूरी है। ऐसे श्रीमत को पालन करने में एक-दूसरे को सावधान करते हुए मदद करें। ऐसे सावधान करने में मदद करते हैं, चेकिंग करते हुए चलते हैं तो नम्बरवन में आ सकते हैं। सारा मदार है अपने अटेन्शन पर। इसलिए अटेन्शन, अटेन्शन और अटेन्शन।

अटेन्शन देने की एक और बात भी बहुत जरूरी है। बापदादा सदा अमृतवेले के योग को बड़ा महत्व देते हैं। अमृतवेले के समय और कोई कार्य नहीं रहता है और वायुमण्डल भी शुद्ध रहता है, जिस कारण सहज ही बुद्धि एकाग्र हो सकती है। एकाग्रता से अपनी स्थिति को अथवा आत्मिक स्टेज को शक्तिशाली बना सकते हैं। उसका प्रभाव सारे दिन की दिनचर्या पर पड़ता है। तो यह अमृतवेले का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। यह भी श्रीमत है, जिसका पूर्ण रूप से पालन करना आवश्यक है। कोई भी कार्य में अगर सफलता चाहते हैं तो इन तीन बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए:- 1. रेग्यूलेरिटी, 2. पंक्चुअलिटी और 3. एक्यूरेसी। जब सवेरे क्लास में जाते हैं तो उसमें भी रेग्यूलर अर्थात् रोज जाना चाहिए, पंक्चुअल अर्थात् ठीक समय पर जाना चाहिए और एक्यूरेट अर्थात् मर्यादा पूर्वक बैठना-उठना, मुरली को ध्यान से सुनना, बापदादा ही मुरली सुना रहे हैं, उस भावना से सुनना। पांइन्ट्स बुद्धि में धारण करना, उनका मनन-चिन्तन करना और मुरली में मिली हुई शिक्षाओं पर चलना अर्थात् श्रीमत पर चलना।

ऐसे ही जब अमृतवेले के योग अभ्यास के क्लास में बैठते हैं तो उसमें भी इन तीन बातों का अटेन्शन देना बहुत आवश्यक है। योग अभ्यास के

क्लास में रोज़ आना चाहिए, ठीक समय पर आना चाहिए और एक्यूरेट रीति से योग अभ्यास करना चाहिए। कई भाई बहनें रेग्यूलर आते भी हैं, पंक्चुअल भी होते हैं लेकिन एक्यूरेट रीति से योग अभ्यास करने में कइयों की कमी देखने में आती है। इसका कारण है कि उन्होंको पूर्ण रूप से यह ज्ञान ही नहीं है कि कैसे योग अभ्यास में बैठना है, किस रीति से योग अभ्यास करना है, क्या मन में संकल्प करना है आदि आदि। अगर ये ज्ञान है तो अपने अलबेलेपन के कारण एक्यूरेट रीति से योग अभ्यास नहीं कर पाते हैं। कई भाई बहनों की ये शिकायत है कि हम योग अभ्यास में बैठते भी हैं लेकिन ठीक रीति से योग नहीं लगता है। उस समय बुद्धि अन्य व्यर्थ बातों में चली जाती है, एकाग्रता नहीं रहती है, सुस्ती आ ज़ाती है आदि आदि।

तो गहराई में जाकर सोचना चाहिए कि इसका कारण क्या है, क्यों योग नहीं लगता है? यह कमी भी हमारे में क्यों होना चाहिए? अगर योग नहीं लगता तो मैं पास विद ऑनर कैसे बनूँगा, नम्बरवन में कैसे आऊंगा? तो इस योग न लगने का कारण निकालना चाहिए और फिर उसका निवारण भी निकालना चाहिए।

जब सुस्ती आती है तो फिर आँखें बन्द होना आरम्भ हो जाता है और बाद में नीद आने लगती है। झुटका आने लगता है। अब सोचना चाहिए कि जो नींद में है अथवा जो झुटका खा रहा है, उसकी बुद्धि का कनेक्शन तो बापदादा से कटा हुआ है। तो उसका योग कैसे लग सकता है? बापदादा कहते हैं कि मैं अमृतवेले आता हूँ, बच्चों को वरदान देने के लिए। जिन बच्चों को नींद आती है अर्थात् उनकी बुद्धि का कनेक्शन टूटा हुआ है, तो बापदादा उनको वरदान कैसे देवे!

तो अब क्या करें, जो सुस्ती न आये, नीद न आये। किस स्थिति में बैठे जो योग भी पॉवरफुल रहे और बापदादा से वरदान भी प्राप्त कर सकें। इन

बातों पर गहराई से सोचना चाहिए।

जब योग अभ्यास के लिए बैठते हैं तो पहले अपनी बैठक को ठीक रखना है। बिल्कुल सीधा (Erect) और एक्टिव होकर बैठना है। अगर हल्का होकर बैठेंगे तो सुस्ती आना शुरू हो जायेगी। इसलिए इरेक्ट (सीधा) एण्ड एक्टिव (चुस्त) होकर बैठना बहुत आवश्यक है। दूसरी बात - बैठते ही अपने को अशरीरी अथवा आत्मिक स्टेज में लाने के लिए भृकुटी से देखना आरम्भ कर देना चाहिए और बड़े डीप थॉट में चले जाना चाहिए अर्थात् एकाग्रता (Concentration) से सोचना शुरू कर देना चाहिए। उस समय आपकी आँखें बड़ी तेजस्वी बन जायेंगी और आप ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि हमारी भृकुटी से लाइट-माइट निकल रही है। ऐसे जो डीप थॉट अर्थात् एकाग्रता से सोचता है, उसको नींद नहीं आती है। ये कइयों को अपना अनुभव होगा ही कि अगर रात को कोई दुःख का या खुशी का विचार चल पड़ा तो सारी रात वह विचार चलता रहेगा। नींद नहीं आयेगी। उदाहरण के रूप में कोई एक माता है, उसका एक ही बच्चा है और वह लन्दन में रहता है। उस माता को टेलीग्राम आता है कि आपके बच्चे का एक्सीडेण्ट हुआ है और वह अब हॉस्पिटल में है। ये टेलीग्राम सुनकर उस माता की क्या हालत होगी? उस बच्चे के सोच में ही पड़ जायेगी और कोई भी बात बुद्धि में नहीं आयेगी। सारा दिन बच्चा ही आँखों के सामने आता रहेगा और यही सोचती रहेगी कि हमारा बच्चा बहुत अच्छा है, मीठे स्वभाव का है, सुन्दर है, ... आदि आदि। एक ही तो मेरा बच्चा है। अब उसको क्या हुआ, कैसे एक्सीडेण्ट हुआ, कहाँ चोट लगी है, उसकी हालत क्या है, अब मैं किससे पूछूँ? अभी तक हॉस्पिटल में ही है या हॉस्पिटल से छुट्टी मिल गई। इस प्रकार अनेक प्रकार के विचार बुद्धि में चलते रहेंगे। रात को भी नींद नहीं आयेगी। सारी रात बच्चे का ही चिन्तन चलता रहेगा। दूसरे दिन भी न खाना अच्छा लगेगा, न खाना पकाना अच्छा

लगेगा। बस बच्चे की फिकर में ही रहेगी कि अभी तक कोई समाचार नहीं मिला। क्या करूँ, किससे पूछूँ। जैसे-जैसे समय बीतता जायेगा वैसे वैसे उसका सोच और गहरा होता जायेगा और कोई भी बात बुद्धि में नहीं आयेगी। दूसरी रात को भी नींद नहीं आयेगी। यह है माँ की अपने बच्चे प्रति लगन और प्यार तथा उस प्यार की एकाग्रता बुद्धि में होने के कारण उसको नींद नहीं आती है।

यह भी याद रहे कि जो भी ऐसे गहन एकाग्रता और गहन विचारों में होता है, वह भी जैसे कि अशरीरी अवस्था में होता है और भृकुटी के बीच से ही देखता है भले उसको आत्मा का ज्ञान नहीं होता। उस माता को भी यह आत्मा का ज्ञान नहीं है लेकिन वह भी एक आत्मा तो है ना। भले उसको यह ज्ञान नहीं है कि आत्मा भृकुटी के बीच में रहती है लेकिन जब बच्चे के गहरे विचार में चली जाती है तो स्वत: ही भृकुटी के बीच से ही देखना शुरू हो जाता है। बाहर की यह आँखें तो भले कमरे की दीवारों, कमरे की वस्तुओं को देख रही हैं लेकिन उनको देखते भी नहीं देखती हैं। वह तो लंदन में हॉस्पिटल में अपने बच्चे को ही देखती है। उसकी आँखों के सामने तो बच्चा ही आता रहता है। अपने कमरे के वायुमण्डल से बिल्कुल ही न्यारी हो जाती है। ऐसे ही कहें कि उसकी भृकुटी के बीच में जो आत्मा है, उनसे बुद्धि का तीसरा नेत्र खुला हुआ है, उस तीसरे नेत्र से वह माता अपने बच्चे को लंदन के हॉस्पिटल में देख रही है।

ऐसे ही जब अमृतवेले के योग के अभ्यास में बैठते हैं। तो बैठते ही अशरीरी होकर भृकुटी के बीच से देखते हुए अर्थात् बुद्धि रूपी तीसरे नेत्र से देखते हुए गहन विचार अर्थात् एकाग्रता में चले जाना चाहिए। फिर बापदादा को सामने इमर्ज कर उनसे लगन से रूह-रूहान करनी चाहिए। उस रूह-रूहान में आप अपने पुरुषार्थ की बाते सुना सकते हो, स्व-उन्नति के लिए बातें कर सकते हो, कोई समस्या हो तो वह भी बापदादा को सुना

सकते हो, कोई सेवा के प्रति कुछ पूछना हो तो वह भी पूछ सकते हो। तो बापदादा आपको वरदान के रूप में बहुत अच्छी-अच्छी पाइन्ट्स बुद्धि में दे देंगे, जो आपकी स्व-उन्नति तथा ईश्वरीय सेवा में सफलता दिलायेगी। वरदान के रूप में श्रेष्ठ गुण और शक्तियाँ भी बुद्धि में भर देंगे। आप उस समय अतीन्द्रिय आनन्द में समाये रहेंगे। सारा समय इसी रूह-रूहान और आनन्द में डूबे रहेंगे और आपको नींद बिल्कुल नहीं आयेगी। आँखें भी तेजस्वी रूप से खुली ही रहेंगी, हिलेंगी भी नहीं।

ऐसा एक्यूरेट शक्तिशाली, स्मृति स्वरूप अमृतवेले का योग जब रहता है तो उसका असर सारे दिन की दिनचर्या पर पड़ता है। सारा दिन सहज ही उसी अशरीरी अर्थात् आत्मिक स्थिति में रहकर हर कार्य करते रहेंगे और साथ साथ बापदादा की स्मृति स्वरूप अथवा प्रेक्टिकल याद में रहकर कार्य कर सकेंगे। यह ज़रूर है कि सवेरे अमृतवेले के समय जो शक्तिशाली स्मृति और स्थिति होंगी, वैसी सारे दिन में कार्य करने के समय नहीं रहेगी। सारे दिन में जैसा जैसा कार्य होगा, ऐसी ऐसी ही स्मृति और स्थिति की स्टेजेज होगी। जैसे मनुष्य समय समय पर अपने कार्य के अनुसार ड्रेसेस बदलते हैं। जैसा कार्य होता है, वैसी ही ड्रेस पहनते हैं। जब कहाँ स्टेज पर भाषण करने जायेंगे तो अच्छी ड्रेस पहनकर, टिप-टॉप होकर स्टेज पर खड़ा रहता है। जब घर में आता है तो वह ड्रेस बदलकर हल्की ड्रेस पहन कर बैठता है। जब क्रिकेट खेलने जायेगा तो उस अनुसार ही ड्रेस पहन कर जायेगा, टेनिस खेलने जायेगा तो वैसी ड्रेस पहनकर जायेगा। जब दिन में या रात को आराम करेगा तो उस अनुसार ही ड्रेस पहनकर आराम करेगा। वैसे ही भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न भिन्न कार्य के अनुसार आत्मिक स्मृति व बापदादा की स्मृति की स्टेजेज रहती हैं। सवेरे अमृतवेले की स्मृति की स्टेज शक्तिशाली होती है क्योंकि उस समय और कोई कार्य नहीं होता है, जिसमें बुद्धि जाये। उस समय बुद्धि की एकाग्रता अधिक रहती है। उस

समय वायुमण्डल भी बड़ा शुद्ध रहता है। कोई भी बाधा नहीं आती है, जिस कारण योग टूटे, इसलिए योग पॉवरफुल रहता है। जब पढ़ाई अर्थात् मुरली के क्लास में बैठते हैं तब स्मृति थोड़ी हल्की हो जाती है। जब दफ्तर में बैठते हैं तो सारी बुद्धि दफ्तर के कार्य में लगानी पड़ती है, जिस कारण आत्मिक स्टेज भी हल्की रहती है और बापदादा को भी सूक्ष्म में हल्के रूप में अपने साथ में समझ कर कार्य करते हैं। खाने पर बैठते हैं तो वहाँ पर फिर भी कुछ अच्छी स्टेज पर रहकर खाना खाते हैं क्योंकि वहाँ बापदादा को याद करते आत्मिक स्टेज में रहकर ही भोजन खाना होता है और बुद्धि का कोई काम नहीं होता है। रात्रि को सोते समय बापदादा से रूह-रुहान करते शक्तिशाली याद में रहकर बापदादा के साथ सो जायें। तो जैसा जैसा कार्य वैसी वैसी ही याद अर्थात् स्मृति स्वरूप की स्टेज रहती है। मतलब कि कब शक्तिशाली, कब थोड़ी कम शक्तिशाली और कब हल्के रूप में याद सारे दिन में रहनी चाहिए। कभी भी व्यक्तभाव अर्थात्देह भान में नहीं रहना चाहिए।

बापदादा ने भी यह इशारा किया है कि कम से कम प्रतिदिन चार घण्टा पॉवरफुल योग में रहकर दिखाओ। तो हम बच्चों को भी अपना दृढ़ संकल्प रखकर अटेन्शन देकर बापदादा की इस आशा को भी अवश्य पूर्ण करना चाहिए।

यह सब अपने ऊपर निर्भर करता है। अगर कोई ठीक रीति से अपने ऊपर अटेन्शन रखकर चेकिंग करता रहता है और बापदादा को अपना कम्पेनियन बनाकर चलता है तो चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते भी पॉवरफुल याद में रह सकता है। अगर अटेन्शन नहीं है और अपनी चेकिंग करने का ख्याल नहीं है अथवा ऐसे ही कहें कि नम्बरवन में आने का लक्ष्य और दृढ़ संकल्प नहीं है तो फिर सारा दिन अलबेला होकर चलता है। अगर इधर-उधर की दुनियावी और मायावी संकल्प चलते रहेंगे तो ऐसा व्यक्ति

सारे दिन में चार घण्टा तो क्या एक घण्टा भी पॉवरफुल याद में नहीं रह सकता है। पॉवरफुल याद में बैठना है तो अपना अटेन्शन चाहिए और अपने ऊपर चेकिंग चाहिए। इसलिए बापदादा ने सभी का अटेन्शन खिंचवाया कि हरेक सारे दिन में कम से कम चार घण्टा पॉवरफुल याद में रहे। अगर हम अटेन्शन देकर चलते रहें तो 4 घण्टा आसानी से पॉवरफुल याद में रह सकते हैं।

प्रातः उठते ही बापदादा को सामने देख उनसे गुडमार्निंग करें और बापदादा को सामने देखते हुए तैयारी करते रहें तो आधा घण्टा ये पॉवरफुल याद रहेगी। फिर अमृत वेले के योग में बैठें तो वहाँ भी एक्यूरेट रीति से बुद्धि का तीसरा नेत्र खोलकर बापदादा से मिलन मनाते वरदान पाते हुए एक घण्टा पौना घण्टा पॉवरफुल याद में रह सकते हैं। उसके बाद कुछ भाई बहनें पैदल करते या (Walking Exercise) करते तो वहाँ भी बापदादा के साथ रूहरिहान करते हुए पॉवरफुल याद में रह सकते हैं। उसके बाद स्नान आदि करते। उस समय भी बुद्धि का तीसरा नेत्र खोलकर बापदादा को साथ में देखते हुए स्नान करे तो वहाँ भी पॉवरफुल याद हो सकती है। फिर ज्ञान की पढ़ाई में जाते तो वहाँ भी रेग्यूरलर, पंकचुअल और एक्यूरेट इन तीन बातों का ध्यान रहे। रोज और ठीक समय पर मुरली के क्लास में जायें, जिससे कोई मुरली की पाइन्ट मिस न हो जाये और फिर एक्यूरेट अर्थात् ध्यान से मुरली सुनें। बापदादा मुरली सुना रहे हैं, इस भावना से सुनें। ऐसे नहीं कि ये बहन या यह दादी मुरली पढ़कर सुना रही है, उसकी याद बुद्धि में रहे। लेकिन बुद्धि में ऐसे रहे कि डायरेक्ट बापदादा मेरे सामने हैं और उनसे मैं मुरली सुन रहा हूँ। फिर बापदादा क्या क्या श्रीमत मुरली में दे रहे हैं, उस पर उसी समय ही मनन-चिन्तन चले और अपनी चेकिंग करता रहे कि मैं इस श्रीमत पर पूर्णरूप से चल रहा हूँ, अगर नहीं तो दृढ़ संकल्प से अपने से प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि आज से मैं इस श्रीमत का पूरा पालन

ज़रूर करूँगा। मेरे में यह कमज़ोरी या कमी नहीं रहनी चाहिए। अगर यह कमज़ोरी रह जायेगी तो मैं नम्बरवन में कैसे आऊंगा? उसी समय ये अन्दर में चलना चाहिए। दृढ़ संकल्प वाला और नम्बरवन के लक्ष्य वाला ऐसे एक्यूरेसी से मुरली सुनेगा और बाद में भी अपनी चेकिंग करता हुआ जायेगा। ऐसे ये बापदादा के साथ पॉवरफुल याद ही कहेंगे।

तो सुबह नींद से उठने के समय से मुरली की समाप्ति तक अगर इस रीति से अटेन्शन है तो पॉवरफुल याद रह सकती है। भले बीच-बीच में किसी कार्यवश या अपनी कोई प्रवृत्ति के वश बुद्धि इधर-उधर चली भी जाये तो भी काफी समय बापदादा की याद रह सकती है। बाद में तो अपने कारोबार में जाते हैं। लेकिन बीच-बीच में जब नाश्ता करते, दिन का और रात्रि का भोजन पान करते हैं तो उस समय भी बापदादा की याद और आत्मिक स्टेज रह सकती है। फिर अगर रात्रि क्लास होता है तो उसमें भी पॉवरफुल याद रह सकती है। उसके बाद जब रात को सोने जायें तो उस समय भी बापदादा को सामने देख कर उनसे गुडनाइट करके सोयें। तो वह भी 15-20 मिनट पॉवरफुल याद रह सकती है। तो ऐसे अगर ठीक रीति से अटेन्शन देता है तो सारे दिन में बापदादा की पॉवरफुल याद 4 घण्टा से अधिक ही रह सकती है। बाकी अन्य प्रवृत्ति सम्भालने या कारोबार में रहते बापदादा की हल्की अर्थात् सूक्ष्म में याद रह सकती है।

साकार ब्रह्मा बाबा के जीवन को भी अगर देखा जाये तो ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा के साथ की स्मृति सारा दिन ही पॉवरफुल या हल्के रूप में निरन्तर चलती रहती थी। सारा ही जीवन इसी निरन्तर स्मृति में रहे। पिछाड़ी के दिनों में तो क्या देखा कि चलते-फिरते भी बड़े गहन विचारों (Deep Thoughts) में खोये हुए नज़र आते थे। जैसे कि अशरीरी स्टेज में चलता हुआ एक फरिश्ता नजर आता था, जैसेकि उपराम अवस्था में चल रहा था। क्लास में भी बड़े गहरे पुरुषार्थ की बातें बताते थे। तो हम बच्चों

को भी ब्रह्मा बाप को फॉलो कर ऐसा फ़रिश्ता स्वरूप बनकर सारा दिन अशरीरी अर्थात् आत्मिक स्थिति में रहकर ईश्वरीय सेवा में तत्पर रहना है।

तो अटेन्शन देकर हर बात को गहराई से सोचना चाहिए और फिर प्रैक्टिकल में लाना चाहिए। जो सोचते हो, जो सुनाते हो, कहते हो, उसका स्वरूप बनो। वह स्वरूप भी अनुभव करो। सबसे बड़े से बड़ी बात है अनुभवी मूर्त बनना। स्वरूप बनने से अपने गुण और शक्तियाँ स्वत: ही इमर्ज होंगी। जैसे कोई भी आक्यूपेशन वाले अपनी सीट पर होते हैं तो उस आक्यूपेशन के गुण, कर्त्तव्य, शक्तियाँ स्वत: ही इमर्ज होती हैं। ऐसे आप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वरूप की सीट पर सेट रहो तो हर गुण, हर शक्ति, हर प्रकार का रूहानी नशा स्वत: ही इमर्ज होगा। मेहनत नहीं करनी होगी। ब्राह्मण जीवन की नेचुरल नेचर है ही सर्वगुण स्वरूप, सर्व शक्ति स्वरूप, जिसमें और सभी अनेक जन्मों की नेचर्स समाप्त हो जाती है। ब्राह्मण अर्थात् जो ब्रह्मा बाप की नेचर, वह हम ब्राह्मणों अर्थात् ब्रह्मा कुमार-कुमारियों की नेचर। अगर अभी तक पुरानी नेचर को मिटाया नहीं है तो क्षत्रीय कुमार-कुमारी कहलायेंगे। क्योंकि पुरानी नेचर को मिटाने की युद्ध करते हैं। नया जन्म हुआ अथवा जब ब्रह्मा बाप के बच्चे बने, तो पुराना स्वभाव-संस्कार अर्थात् पुरानी नेचर समाप्त हो जानी चाहिए। अगर कोई कहे कि मेरी नेचर ही ऐसी है तो जैसे कि वह पूरा मरा ही नहीं है।

ब्राह्मण जीवन अर्थात् जो ब्रह्मा बाप का हर कदम वह हम ब्राह्मणों का कदम हो। तो सदैव यह चेक करना चाहिए कि मैं ब्रह्मा बाप को कदम-कदम पर फॉलो कर रहा हूँ? ब्रह्मा बाप ने सर्व त्याग किया। तन-मन-धन, सम्बन्ध आदि सभी त्याग किया अर्थात् परिवर्तन किया। तन "मेरा" के बजाये "तेरा (शिव बाबा का)" किया। मन-धन-सम्बन्ध आदि भी मेरा के बजाये, तेरा किया। इसी त्याग से ही इतना बड़ा भाग्य प्राप्त करने का अधिकारी बन गया अर्थात् बेगर टू प्रिन्स बन गया। प्रिन्स अर्थात् सर्व प्राप्तियों सम्पन्न। इस

जन्म में भी सर्वगुण सम्पन्न, मास्टर सर्वशक्तिवान बन गये और आने वाली सतयुगी दुनिया में भी नम्बरवन सर्वगुण, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी पहला नम्बर प्रिन्स बनने के अधिकारी बन गये। यह त्याग का ही भाग्य है। बिना त्याग के इतना भाग्य नहीं मिल सकता है। तो केवल एक शब्द का परिवर्तन (मेरा के बजाये तेरा) करने से कितना बड़ा भाग्य प्राप्त होता है। ऐसे बड़े भाग्य के आगे ये त्याग भी क्या है? कुछ भी नहीं। ऐसे सर्व सम्बन्ध जब बापदादा के साथ हैं और सदा एक ही बापदादा की लगन में मगन रहता है अर्थात् प्रभु प्यार में समाया हुआ रहता है तो सहज ही हर कार्य में सफलता पा लेता है। ऐसे सपूत बच्चे की सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई बड़े से बड़ा कार्य हो या कोई बड़े से बड़ी समस्या हो लेकिन वह कार्य या समस्या ऐसे पार हो जायेगी जैसे कि मक्खन से बाल निकल जाता है। सच्ची दिल से, अन्दर की सच्चाई और सफाई से तेरा कहना और पहाड़ को भी रुई बनाना परन्तु तेरा शब्द सिर्फ कहना नहीं लेकिन मानना और उसमें प्रेक्टिकल में चलना। तो इस एक शब्द का परिवर्तन सहज है ना! तेरा कहने से जैसे सारा बोझ बाप को दे दिया। ''तेरा तुम ही जानो।'' फ़ायदा है ना इसमें? न्यारे बन गये और बाप के प्यारे बन गये। जो प्रभु के प्यारे बनते हैं, वे विश्व की सर्व आत्माओं के प्यारे अवश्य बन जाते हैं, क्योंकि बीज बाप है।

अभी समय के अनुसार अपने सर्व खज़ानों की भी चेकिंग करनी है। समय का खजाना, संकल्प का खजाना, बोल का खजाना, ज्ञान धन का खजाना, योग की शक्तियों का खजाना, दिव्य जीवन के सर्वगुणों का खजाना, ये सभी खजाने कहाँ व्यर्थ न जायें। ''एकनामी और एकॉनामी।'' एक बाप के साथ का अनुभव करते हुए इन सर्व खजानों की एकॉनामी करो, कहाँ भी व्यर्थ न जायें। ये सभी खजाने जमा करो। सारे दिन में इन एक-एक खजाने का खाता चेक करो। अगर पास विद ऑनर बनना चाहते हो तो

हर खजाने का जमा का खाता इतना ही भरपूर होना चाहिए जो 21 जन्मों तक जमा किये हुए खाते से प्रारब्ध भोग सको। इसलिए ध्यान देकर ''सफल करो और सफलता पाओ।'' जो भी आपकी सम्पत्ति है, समय, संकल्प, श्वास, तन-मन-धन आदि सब मैं-पन से न्यारा होकर सच्चे दिल से सफल करो तो जमा का खाता भरता जायेगा।

अपने पुण्य के खाते को भी चेक करना चाहिए। एक है अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ से श्रेष्ठ प्रारब्ध जमा करना। दूसरा है स्वयं सन्तुष्ट रहकर बापदादा की हर श्रीमत को पालन करते हुए उनको संतुष्ट करना और सर्व ब्राह्मण आत्माओं को सन्तुष्ट करना, ऐसे उन्हों की तरफ से मिली हुई दुआओं का खाता जमा करना। तीसरा है ईश्वरीय सेवा भी यथार्थ, योग-युक्त, युक्ति-युक्त रीति से करना, जिसके रिटर्न में पुण्य का खाता जमा होता है। अगर किसी का इन तीनों खातों में जमा होता है तो उसकी निशानी है कि वह सदा सहज पुरुषार्थी अपने को भी अनुभव करते हैं और दूसरों को भी उस आत्मा से सहज पुरुषार्थ की स्वत: ही प्रेरणा मिलती है। वह सहज पुरुषार्थ का एक प्रतीक (Symbol) है। उसको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। बापदादा से मोहब्बत, ईश्वरीय सेवा से मोहब्ब्त और ब्राह्मण परिवार की सर्व आत्माओं से मोहब्बत – यह तीन प्रकार की मोहब्बत मेहनत से छुड़ा देती है। तो सच्चे दिल से सहज पुरुषार्थी बनकर मायाजीत और जगतजीत बनो। सच्चे दिल पर साहिब (बापदादा) राज़ी, दिल साफ़ तो मुराद हासिल।

तो अभी समय के अनुसार बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो तब औरों को भी सकाश देने की सेवा कर सकेंगे। लगाव मुक्त बनो। सम्पूर्णता के दर्पण में सूक्ष्म लगाव को चेक करो और उसको समाप्त कर लगाव मुक्त बनो। यह ही बापदादा के प्यार के रिटर्न में सौगात बापदादा को दो। सब किनारे छोड़ो, सबसे मुक्त हो जाओ। सदा सुखस्वरूप बनकर हरेक को दिल से मर्यादा पूर्वक सुख दो। जो मन-वाणी-कर्म से किसी भी आत्मा को

सुख देता है तो उसकी दुआयें, उसको अवश्य मिलती हैं, इससे उसकी मार्क्स स्वत: ही बढ़ती जाती हैं, जो उसको अन्तिम पेपर में जमा हो जाती है।

बाकी अगर बापदादा से याद के बल से सर्वशक्तियाँ लेने के बजाये अपने ही ऊपर जिम्मेवारी लेकर ऐसे समझते हैं कि मैं क्रोधमुक्त रहूँगा, व्यर्थ संकल्प मुक्त रहूँगा, परमत पर नहीं चलूँगा, संगदोष में नहीं आऊंगा, किसी से नफरत नहीं करूँगा, किसी की ग्लानि नहीं करूँगा आदि आदि। परन्तु देखा गया है कि अपनी शक्ति इतना काम नहीं करती है। धीरे धीरे रास्ता भटक (Slip) जाते हैं क्योंकि 63 जन्मों से माया रावण ने हमारी शक्ति को खत्म कर दिया है। जो हम सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण थे, वे अब कलियुग के अन्त में कलाहीन बन गये। अब बाप आये हैं। वह सर्वशक्तिवान बाप ही हमारे में शक्तियाँ भर रहे हैं। हम उनको याद करेंगे तो शक्तियाँ और गुण हमारे में भरते जायेंगे। बाकी अगर बापदादा को याद नहीं करके, अपनी ही शक्ति के आधार पर चलते रहेंगे तो माया भटकाती रहेगी। इस पर भी एक उदाहरण बताता हूँ –

समझो यहाँ 5-7 भाइयों का एक ग्रुप बैठा है, आपस में ज्ञान की बातों पर चर्चा कर रहे हैं अर्थात् रूह-रूहाना कर रहे हैं। ऐसे करते-करते एक भाई कहता है - वह एक भाई बहुत होशियार है, बहुत अच्छा भाषण करता है, सभी उसकी बहुत महिमा करते हैं लेकिन ... तो दूसरा भाई कहता है लेकिन क्या? तो पहला भाई जबाब देता है लेकिन उसमें थोड़ा अपना रोब है। तो तीसरा भाई कहता है हाँ, आपने बिल्कुल सत्य कहा। उसमें बहुत अपना अहंकार है, बहुत रोब दिखाता है। समझता है मैं जो कहूँ, वह करना ही चाहिए, मुझे आदर देना चाहिए। फिर चौथा भाई कहता है - हाँ, आपने बिल्कुल सत्य कहा और मुझे मालूम है, वह जो दूसरा भाई है वह भी अपना बहुत अहंकार दिखाता है। वह तो इतना क्रोध में आ जाता है, जो

दूसरों को डांटने लगता है। तो ऐसे धीरे-धीरे ग्लानि की बातों में चले जाते हैं। कोई अगर उनको कहे कि ऐसी बातें क्यों करते हो तो जबाब देंगे, इसमें क्या है! सत्य ही तो कहते हैं। कोई से भी जाकर पूछो कि वह भाई ऐसा अहंकारी है ना! हम सत्य ही तो सुनाते हैं। लेकिन रूप कौन-सा है, वह उस समय महसूस नहीं कर पाते हैं। महसूसता की शक्ति खत्म हो जाती है। फिर एक भाई ने खिड़की से देख लिया कि दादी जी आ रही हैं। तो फिर औरों को कहता है, अरे दादी जी आ रही हैं, अब ये बातें बन्द करो। दादी जी अगर आकर ये सुनेंगी कि ये आपस में ऐसी-ऐसी बातें कर रहे हैं तो दादी जी को अच्छा नहीं लगेगा। तो सभी भाई ये सुनकर शान्त हो जाते हैं। क्यों शान्त हो गये? जरूर ये समझ गये कि हाँ हम गलत कर रहे हैं। दादी जी आकर ये सुनेंगी तो उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। तो गलत क्या है और ठीक क्या है, उसका ज्ञान बुद्धि में है लेकिन समय पर वह ज्ञान भी बुद्धि से निकल जाता है, खिसक जाता है। पॉवरफुल आत्मा (दादी जी) के आने से ही वह ज्ञान अथवा महसूसता बुद्धि में आ जाती है। पॉवरफुल आत्मा दादी जी ने कुछ बोला भी नहीं, पूछा भी नहीं लेकिन पॉवरफुल आत्मा दादी जी की उपस्थिति से ही सब रियलाइजेशन में आ गये, स्मृति स्वरूप बन गये। तो अगर बापदादा जो सर्वशक्तिवान आत्मा है, उनकी उपस्थिति अगर प्रेक्टिकल में याद हो अथवा रियलाइज हो तो ऐसी ग्लानि की बातों में जा ही नहीं सकते। एक भाई के बुद्धि में भी अगर यह सर्वशक्तिवान बापदादा की स्मृति इमर्ज होती तो उसी समय ही औरों को भी सावधान करता कि भाई ये ऐसी बातें क्यों कर रहे हो। बापदादा यहाँ बैठे हैं, हम सबको देख रहे हैं, वह क्या कहेंगे? तो उसी समय ही सब सावधान हो जाते, महसूसता में आ जाते कि हम गलत कर रहे हैं।

तो यह बापदादा के साथ की स्मृति हर परिस्थिति में बहुत बहुत बहुत आवश्यक है। यह एक ही सर्व समस्याओं का हल है और नम्बरवन में आने

का एक सहज तरीका अथवा साधन है। आज का नया स्टूडेण्ट भी दृढ़ संकल्प कर इस सहज साधन को अपनाकर बापदादा की हर श्रीमत अनुसार चलते हुए सपूत बच्चा बनकर सहज ही नम्बरवन में आ सकता है।

यह भी याद रहे कि जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देखकर और भी ऐसा ही करेंगे। तो समय अनुसार हमारी स्थिति, दृष्टि, वृत्ति, कृति ऐसी होनी चाहिए जो सभी के आगे उदाहरण स्वरूप बन जाये। कोई भी बात सामने आये, लेकिन हमारा रूप सदा मुस्कराता हुआ, शीतल, गम्भीर, धैर्यवत् हो। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा बापदादा को, ब्राह्मण परिवार और सारे विश्व की आत्माओं को भी पसन्द आता है। अपनी प्योरिटी की पर्सनॉलिटी के साथ साथ अपने चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनॉलिटी आ जाये तो अपने चेहरे से, अपने मस्तक से, अपनी दृष्टि से, वृत्ति से, चलन से ऐसे रूहानी वायब्रेशन्स फैलते रहें जो औरों को भी नज़र से निहाल कर देंगे, जो भी सम्पर्क में आये वह भी निहाल हो जाये। ऐसी रूहानी सेवा की सकाश दो। अपने गुणों और शक्तियों का सबको सहयोग दो। स्वयं को ऐसी बेहद की सेवा में सदा बिज़ी रखो। इस बेहद की सेवा में बिज़ी रहने से अन्दर में सदा खुशी अथवा अतीन्द्रिय आनन्द में झूमते रहेंगे। अन्दर में सदा ये स्मृति में रहेगा कि हमारी पालना करने वाला, पढ़ाई पढ़ाने वाला, श्रीमत और वरदान देने वाला, हर दिनचर्या में साथ निभाने वाला स्वयं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा है। बस इस श्रेष्ठ भाग्य को सदा याद करते हुए सदा खुशी में झूमते यही गीत गाते रहो "वाह मेरा भाग्य, वाह!" इसमें मेरा शब्द भले कहो। "वाह मेरा बाबा, वाह! वाह मेरा भाग्य, वाह!"

अपना यह अनुभव तथा अपने पुरुषार्थ के लिए अनुभव की बातें जो अपने सामने आई हैं, उनको शुभ भावना, शुभ कामना से लिखकर ईश्वरीय सेवा अर्थ समर्पित कर रहा हूँ।